Ahmednagar Jilha Maratha Vidya Prasarak Samaja's

New Arts, Commerce & Science College, Parner

Dist - Ahilyanagar



National Conference on

Indian Knowledge System : Nature & Scope

Wednesday 5th March, 2025

- Organized By -

IQAC and Faculty of Humanities & Commerce

New Arts, Commerce & Science College, Parner

Dist - Ahilyanagar

Scanned with OKEN Scanner

99.	डॉ. सोपान भानुदास दहातोंडे	भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) के प्रचार प्रसार में iksindia.org वेबसाइट का महत्त्व एवं योगदान	601
100.	डॉ. गोरक्षनाथ किसन घोलप	ग्रामदेवता मेसाई देवी	607
101.	अनिल कुंडलिक पठाडे & डॉ. दीपक पंढरीनाथ सोनटक्के	भारतीय ज्ञान प्रणाली आणि आदिवासी समाज	613
102.	अमितकुमार गणेश शिंगणे	भारतीय ज्ञान परंपरेचा ऐतिहासिक विकास आणि त्याची आधुनिक काळातील उपयुक्तता	624
103.	प्रा. शुभदा शिवाजी आहेर	भारतीय ज्ञान परंपरा मे सूरदास के दार्शनिक विचार	631
104.	प्रा. प्रदीप भगवानराव पाऊलबुद्धे	भारतीय ज्ञान प्रणाली भाषा आणि वाङ्मय	634
105.	प्रा.डॉ.विजय देशमुख	भारताचा प्राचीन ते आधुनिक काळापर्यंतचा क्रीडा इतिहास	640
106.	प्रा.तनपुरे प्रतिक्षा शिवाजी	भारतीय ज्ञान परंपरा में सुफी प्रेमाख्यान काव्य	646
107.	प्रा. रोहोकले सुवर्णा दत्तात्रय	भारतीय ज्ञान परंपरा में भारतीय दर्शन।	649
108.	प्रा. संगिता पंढरीनाथ मांडगे	भारतीय ज्ञान परंपरा और फिल्मांतरण	654
109.	प्रा. निलेश बाळासाहेब भालके	पारंपारिक उद्योग आणि डिजिटल युग: आयकेएस-आधारित उद्योजकतेचे पुनरुज्जीवन	658
110.	डॉ.विजय निवृत्ती सुरोशी	भारतीय ज्ञान प्रणालीचे स्वरूप व महत्व	672
111.	प्रा. गाडीलकर आरती साहेबराव	भारतीय ज्ञान परंपरा आणि कौटिल्यांच्या आर्थिक विचारांची प्रासंगिकता	674
112.	डॉ.मनिषा रामचंद्र गाडीलकर	निर्गुण भक्तिप्रवाह के प्रवर्तक और ज्ञान परंपरा	678
113.	डॉ. धारा शेगावणकर	भारत में शारीरिक शिक्षा	681
114.	प्रा. डॉ. नवनाथ अंगद शिंदे	भारतीय ज्ञानपरंपरा आणि मराठी लोककथा	686
115.	प्रा.अनिल नामदेव पडवळ	भारतीय ज्ञान प्रणाली : आर्थिक आणि उद्योजकीय संधी	689
116.	वाघमारे योगिता प्रल्हाद	भारतीय ज्ञान परंपरा आणि श्री छत्रपती शिवाजी महाराजांची अर्थ नीती	695
117.	सहा. प्रा. भिला हिलाल भामरे	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर : शेती विषयक विचार व कार्य	700
118.	Mr. Ananda Pandhare	Influence of Sanskrit Drama on Indian literature	704
119.	Dr. Shantaram Salve	Adventure of Sports For Youth	712
120.	Dr. Thube Shubhangi	Economic and Entrepreneurial Opportunities in Indigenous Knowledge Systems (IKS)	715
121.	Dr.Thorat S. S	Management Lessons From Ramayan	717
122.	Dr. Dadasaheb R. Jaware and Mr. Adinath N. Bramhane	Integration of Indian Knowledge System in Higher Education and Research	720
123.	Prof. Shraddha Satyavan Damse	Classification of Carbon Dots (CDs), their synthesis, structural and optical properties with applications	726
124.	डॉ.संदीप नामदेव मिरे & शेळके शिवाजी नाथा	महाराजा सयाजीराव गायकवाड व महाराणी चिमणाबाई यांच्या कार्यात तंत्रज्ञानाचा वापर आणि बडोद्याचा विकास	727
125.	Miss. Ankita Bhunia	Integration of Indian Knowledge Systems with Modern Education and Research	733
126.	Prof. Vaishnavi K. Nagpure	Rethinking the History of Inclusion of IKS in School Curricula: Endeavoring to Legitimate the Subject	740
127.	श्री. गावित प्रकाश महादू	भारतीय प्राचीन वास्तूशैली ज्ञान परंपरेचा विकास	752
128.	डॉ. कुंदा बाळासाहेब कवडे	भारतीय ज्ञान प्रणाली आणि मराठी भाषा	758
129.	श्री. पवार रामेश्वर भाऊसाहेब	नवीन शैक्षणिक धोरण व भारतीय ज्ञान परंपरा	764

Scanned with OKEN Scanner

संगिता पंढरीनाथ मांडगे
sangitamandage2014@gmail.com

भारतीय ज्ञान परंपरा अर्थात जो ज्ञान उपनिषदों शास्त्रीय ग्रंथ पांडुलिपियों या मौखिक संचार के रूप में हजारों वर्ष चला आ रहा है। इस ज्ञान से जीवन का निर्वाह करणे हेतु व्यावहारिक ज्ञान जैसे शिकार , कृषि, आकाशीय ज्ञान, शिल्प, कौशल्य, और क्षेत्र की पारंपारिक प्राद्योगिकियों के बारे में प्राप्त किए जानेवाला ज्ञान शामिल है। मौखिक परंपरा के अंतर्गत यह ज्ञान कहानीयां किवदंतियों,लोककथाओं ,पौराणिक ,कथाओं ,दृश कला और वास्तुकला के रूप में प्रचलित है।

भारतीय ज्ञान परंपरा एक समृद्ध विरासत है। जो कई हजार सालों से चली आ रही है । भारतीय ज्ञान परंपरा में भरत मुनी ने पहला नाट्यशास्त्र ग्रंथ लिखा। भारतीय ज्ञान भारतीय लोगों की बौद्धिक संपदा है, जो पीढियों से चली आ रही है और उनके अस्तित्व का अभिन्न अंग है। यह भारत की सांस्कृतिक विरासत रिति -रिवाज, विश्वासों और ज्ञान प्रणालीयों को पिढ़ी दर पिढी हस्तांतरित कर रही है। यह पारंपारिक ज्ञान भारत की ज्ञान प्रणाली और पहचान को बढावा देते हैं ।

हिंदी साहित्य जगत ज्ञान का वह सूर्य है,जो विभिन्न विधा रुपी रश्मियों से चमत्कृत होते हुए संपूर्ण संसार को आलोकित करता है। भारतीय ज्ञान परंपरा को प्रवाहित करने वाले इस साहित्य की ओर देखने से गद्य, उपन्यास, कहानी, संस्करण, एकांकी, नाटक, रिपोर्ताज, यात्रा साहित्य आदि के रूप मे यह संसार की विभिन्न यर्थात भावनाओं कों समाज के समक्ष प्रकाशित करने में आगे है। यह जनसामान्य को नवीन चेतना जागरूकता, सजगता, की और लेकर जाता है।

परंपरा वह संपत्ती है जो बिना रुके सतत, गति से अपने कर्म पथ की ओर अग्रेसित होती रहती है। यहा परंपरा अपने अंदर समटे हुए ज्ञान को चारों ओर प्रकीर्ण करते हुए चारों ओर व्याप्त दुख, वेदना को अपने में सामाहित करते हुए कल्पना और भाव से उसमें ऊर्जा भर उसे जनमानस तक पहुँचाती है। और इस प्रकार सुखी मानव के हृदय में एक ऐसी जागृती प्रदान करती है। जिससे दूर- दूर तक व्यक्ति एक दुसरे के साथ जुडकर उदभावनाओं को अंगीकार करता है। यह परंपरा ज्ञानस्वरूप है, नित्य नवीन है, नवचार से युक्त है। परंपरा एक मान्यता के रूप में भी संचालित होती चली जाती है। जो जीवन को नया आकार देने वाली होती है, नये मूल्यो से जोडकर नये ज्ञान का प्रतीक होती है।

भारत की सबसे सुंदर,सुदृढ और शक्तिशाली परंपरा साहित्य परंपरा है, जो प्राचीन कालसे ज्ञान का मूल स्त्रोत रही है। जिसने अलग- अलग संस्कृतिओं सभ्यताओं को अपनी वाणी हिंदी के माध्यम से परीमार्जित और परिष्कृत किया है। जन भाषा हिंदी मे अपनी सरलता, सुगमता, सरसता से भारतीय ज्ञान परंपराओ को साहित्यिक धरातल पर व्याप्त कर दिया है।

प्राचीन युग में साहित्य के इतिहास संबंधित स्वतंत्र ग्रंथ लिखने की परंपरा भारत और पाश्चात्यो में भी है। फिर भी पूर्ववर्ती कवि एवं साहित्यकारो के नामल्लेख करने की प्रवृत्ती अनेक भारतीय लेखको में दिखाई देती है। जिससे साहित्य का इतिहास लिखने मे सहायता होती है।

गुरु शिष्य परंपरा

Scanned with OKEN Scanner

भारतीय ज्ञान परंपराओ में गुरु शिष्य परंपरा का बहुत महत्व है। जो युगो - युगो से पुरे विश्व को प्रकाशित करती रही है। शिक्षण व परंपरा है जो प्रत्येक क्षेत्र, विषय और पदार्थ के ज्ञान से जोडकर विश्व के कण-कण को आलोकित कर रही है। कबीर दास कहते है की-

"सतगुरू कि महिमा अनँत, अनँत किया उपगार।

लोचन अनँत उघाडियाँ, अनँत दिखावणहार।।"[1]

भारतीयों की यह ज्ञान परंपरा विश्व में पसार चुकी है। आज वैश्विक संस्कृति भारतीय संस्कृती की सराहना करते हुए प्रकृति को ओर लोटने की बात करती है। पाश्चात्य शिक्षा दार्शनिक भारतीयों की इस प्रणाली का वैज्ञानिक रूप से समर्थन करते है। वे मानते है प्राकृतिक वातावरण स्वच्छ और स्वस्थ्य होता है। वह विद्यार्थी को आत्मिक ,मानसिक, बौद्धिक रूप से और शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रखता है। और स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का वास होता है। आज पुरा विश्व ज्ञान परंपरा का स्वागत करता है, और कहता है भारतीयों की परंपराये वैज्ञानिक दृष्टी से पूर्ण प्रासंगिक है।

समाज सुधार की परंपराओं का विकास-

भारतीय वैदिक परंपरा अत्यंत प्राकृतिक रही है। बालक के सभी स्तरों के विकास के लिए उसमें बाल्यकाल से ही जीवन मूल्यों का बिजारोपण किया जाता था। लेकिन परंपरा के साथ अंधविश्वास का भी आगमन होता चला जाता था, जिसे दूर करने के लिए साहित्य ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। कबीरदास ने समाज कों सुधारने और सही दिशा दिखाने की परंपरा का जो प्रवर्तन किया वह परंपरा के रूप में हिंदी साहित्य जगत के मूल मे बस गया। अंधविश्वासो का विरोध करते हुए कबीरदास कहते है,

"जो काशी तन तजै कबीरा तौ रामहिं कहा निहोरा रे।"[2]

इस अंधविश्वास का उन्होंने जगह -जगह खण्डन किया है ।

आज विश्व मे वैदिक परंपराओं में सामाहित भक्ती परंपरा का आचरण कर रहे है। तपोमई भक्ति से युक्त जीवन शैली ने मानव को तनाव मुक्त वातावण प्रदान किया है ।सात्विक आहार से सुख पूर्ण जीवन दिया है। संपूर्ण संसार ऋषी मुनीयों, कवियों संतों, साहित्यकारों के द्वारा बताई गई भक्ती को अपना रहा है। यह भारतीय ज्ञान परंपराओं का प्रत्यक्ष प्रभाव है। प्रेमाभक्ति और सांध्यभक्ती में प्रेम को मुख्य आधार बनाया गया है। मिराबाई और जायसी ने इस भक्ती का सर्वाधिक प्रचार किया। मीरा ने तो श्रीकृष्ण को ही सर्वस्व मान लिया था।-

"मेरे तो गिरधर गोपाल दुसरं न कोई

जाके सिर मोर मुकुट मेरो पति सोई ।।" [3]

ज्ञान परंपरा और साहित्य-

संपूर्ण हिंदी साहित्य ज्ञान का वह कल्पवृक्ष है , जिसका एक-एक पल नवीन कलाओं और भावनाओं से मंडित थे। हिंदी साहित्य ने अपने अंदर चौसठ कलाओं और चौदह विद्याओं को समाया हुआ है ।जिससे निसृत परंपरायें पूरे विश्व को ज्ञान ,विज्ञान, दर्शन, कला और अनुसंधान आदि से जोड रही है।

कबीर दास स्वयं ज्ञान को महत्व देते है ,उनका मानना है कि परमात्मा की प्राप्ति ज्ञान और प्रेम के आधार पर ही हो सकती ।उदा।-

Scanned with OKEN Scanner

"पोथी पढ - पढ जग मुवा , पंडित भया न कोई ।

एकै आषिर पीव का ,पढ़ै सु पंडित होई ।।"[4]

इससे समाज को एक नई शिक्षा की और लेकर जाते है। ऐसी शिक्षा जो वास्तव मे सच्चे हृदय से प्रारंभ होकर सत्य का ज्ञान कराने में सक्षम हो ।

इस तरह भारतीय ज्ञान परंपरा विकसित होती आ रही है और आज इस ज्ञान परंपराने अलग रूप धारण कर लिया है। जिस तरह आधुनिक काल में साहित्य का निर्माण होता रहा,उनका उद्देश्य हि यह रहा है ,समाज कों नई और सही दिशा की ओर ले जाना ।और आज नई कला विकसित हो रही है ।वैसे तो इस कला का निर्माण संन् 1936 से प्रारंभ हुआ है ,वह कला है,साहित्य और सिनेमा साहित्य की व्याख्या बाबू गुलाबराय - "सह (साथ) होने के भाव को प्रधानता हम कहेंगे कि जहाँ शब्द और अर्थ ,विचार और भाव का परम्परानुकूलता के साथ सहभाव हो वही साहित्य है।"[5] भारतीय परंपरा मे इस शब्द के लिए वाङ:मय शब्दों का प्राचीन प्रयोग मिलता है।

सिनेमा की व्याख्या- "सिनेमा कहानी पेश करने का एक जरीया है। इसलिए फिल्म एक जबान है, भाषा है। कहानी कई जरिये से पेश की जा सकती है- बोले हुए शब्दों में , लिखे हुए शब्दों में नृत्य में, कविता में, गीत में, हाव- भाव में, तस्वीरों में ।फिल्म में ये सब समा जाते है। फिल्म सब जरियों का समूह है इसलिए किसी जबान या भाषा से उँची है।.. फिल्म सिर्फ कला नही,कलाओं में महान कला है।"[6] सिनेमा विभिन्न कलाओं के समीश्रण से निर्मित कला है ।

सिनेमा का आधार ही साहित्य है। जो किसी -न- किसी तरीके से सिनेमा को प्रभावित करता है। सिनेमा ने अपना सफर साहित्य से आधार लेकर शुरू की है । साहित्य मे विविध- विधाओं को आधार बनाकर शिखर तक पहुँचा है ।

प्रेमचंद का मानना था कि अगर उनके साहित्य पर फिल्में बनी तो उनका साहित्य समाज के सामने लाने के लिए आसानी होगी। निम्न वर्गीय भारतीय किसान एवं मजदूर, प्रेमचंद की रचनाओं का आस्वादन नही कर सकते थे । यदि उन्हीं रचनाओंपर फिल्में बने, तो उन फिल्मों से प्रेमचंद को अपना संदेश उन तक पहुँचाने में बडी सहायता मिलेगी।

" साहित्य शब्दों की अभिव्यक्ति है ,तो फिल्म दृश्य की।"[7]

इस कारण साहित्य की कथा जब फिल्म में अंतरित होती है,तो उनका उद्देश्य भलेही समान हो ,किंतु माध्यमो में अंतर होता है।

सिनेमा, कला,का वह सशक्त माध्यम है , जो किसी मुख्य विषय पर आधारित कथा को दिखाता है और मनोरंजन करते हुए दर्शकों में गहरे उतर जाने की अपूर्व क्षमता रखता है ।

इस तरह साहित्य में सामाहिक ज्ञान फिल्म के जरीए आसानी से लोगों तक पहुँचाया जा सकता है ।भारतीय सिनेमा भारतीय ज्ञान परंपरा से जुडे विषयों पर आधारित फिल्मों का निर्माण कर रहा है ।भारतीय सिनेमा मे धार्मिक और पौराणिक कथाओं से शुरुवात हुई थी। भारतीय सिनेमा में समाज में व्याप्त बुराइयों और विसंगतियों को दिखाकर उन्हें खत्म करने के लिए प्रेरित किया जाता है।

सारांशत :

भारतीय ज्ञान परंपराग का पूरे विश्व पर प्रभाव है। चाहे राजनीति हो या सामाजिकता ,संस्कृति हो, ज्ञान हो अथव कौशल्य भाषा हो या विज्ञान अथवा अनुसंधान सभी क्षेत्रों में चारो और भारतीय ज्ञान परंपरायें अपना प्रभाव अभिव्यक्त कर रही हैं । भारतीय ज्ञान परंपरा में हिंदी साहित्य में वह सर्वोत्कृष्टता है ,जिसमें समस्त भावनायें समाहित

Scanned with OKEN Scanner

हैं ।उनमें ज्ञान ,भक्ति,शिक्षा और समाज सुधार भी है। उसमें बाल मनोरंजन भी है और युवाओं का दिग्दर्शन भी। और साहित्य पर फिल्म बनने से इसका प्रसार होने मे बहुत आसान होता है। इसलिए साहित्य पर फिल्म का निर्माण आज की आवश्यकता है। हिंदी साहित्य भारतीय ज्ञान परंपरा का मुख्य और अतुलनीय स्रोत है ।

संदर्भग्रंथ :-

1. मध्ययुगीन हिंदी काव्य,संपादक:डॉ.राजेंद्र,प्रकाशक:दिव्य डिस्ट्रीब्यूटर्स,कानपुर,संस्करण: प्रथम 2014 ,पृ . क्र 11
2. कबीर ग्रंथावली ,डॉ । श्यामसुंदर दास ,प्रथम 2019 ,पृ . क्र. 30
3. मध्ययुगीन हिंदी काव्य,संपादक:डॉ.राजेंद्र,प्रकाशक:दिव्य डिस्ट्रीब्यूटर्स,कानपुर,संस्करण: प्रथम 2014 ,पृ . क्र 46
4. वही पृ . क्र 14
5. काव्यशास्त्र और साहित्य के भेद ,डॉ . जालिंदर इंगले ,प्रशांत पब्लिकेशन संस्करण: प्रथम 2020 ,पृ . क्र. 8
6. धर्मयुग ,सितंबर ,1996 , पृ . क्र. 39
7 . पुरुषोत्तम कुंदे ,सिनेमा का सौंदर्यशास्त्र पृ . क्र. 192

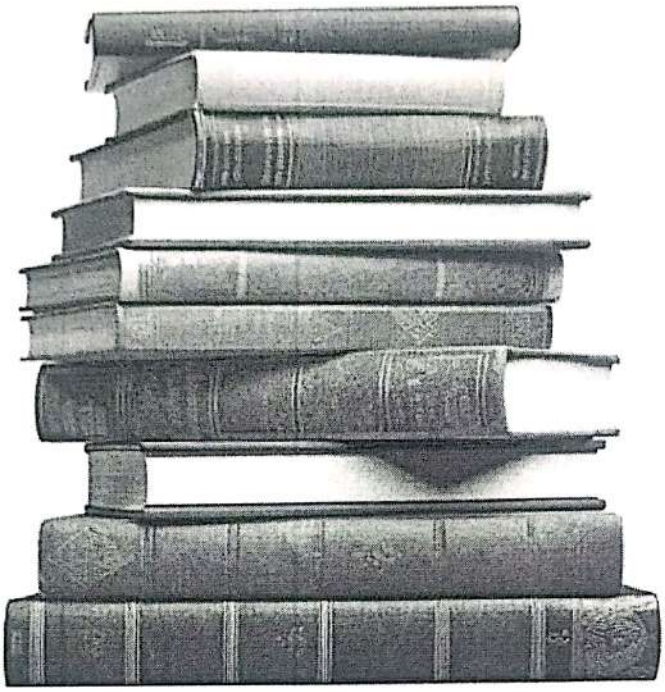
******

Scanned with OKEN Scanner

Ahmednagar Jilha Maratha Vidya Prasarak Samaja's

New Arts, Commerce & Science College, Parner

Dist - Ahilyanagar



National Conference on

Indian Knowledge System : Nature & Scope

Wednesday 5th March, 2025

- Organized By -

IQAC and Faculty of Humanities & Commerce

New Arts, Commerce & Science College, Parner

Dist - Ahilyanagar

Scanned with OKEN Scanner

65.	Dr. Deokate Rajendrakumar Sukhdeo	The Holistic Approach of the Indian Knowledge System (IKS): A Theoretical Analysis	408
66.	Prof. Shikha Sharma	The Role of Indian Knowledge Systems in Addressing Modern Challenges-Future Directions	419
67.	Dr.Pandurang Ithape & Sheetal Rasal	Indian Yoga Science and Artificial Intelligence - The Role of Technology in Mental Health	425
68.	Prof. Sheetal B. Rasal & Prof. Mausami Chaudhari	The Role of Yoga in Reducing Stress	432
69.	Prof. Nikhil R. Avhankar	Indian Knowledge System (IKS)	443
70.	Dr. . Kasle Vithal Venkaty	Indian Knowledge Systems and Modern Education: Overcoming Challenges For a Brighter Future	451
71.	Mr. Rahinj Mangesh Balkrishna	Integrating The Indian Knowledge System in Technological Advancements: Contributions, Innovations, and Future Prospects	459
72.	Dr. Anand Uddhav Hipparkar	Integration of Indian Knowledge System into Indian English Literature	465
73.	Dr. Yuvaraj M. Waghere	A Study of Lord Krishna's Philosophy on Karma	470
74.	Prof. Shivaji Rangnath Pathare	Indian Knowledge System (IKS)	472
75.	Dr. Dhananjay M. Chandanshive	Economic Thoughts of Lord Buddha for Overall Human Development	477
76.	प्रा. मिनाक्षी बाळासाहेब ठुबे	भारतीय ज्ञान परंपरा आणि शिक्षण व्यवस्था	482
77.	प्रा. ऋषिकेश बाबासाहेब भालसिंग	प्राचीन भारतीय खेळ आणि त्यांचे शारीरिक शिक्षणात योगदान: एक चिकित्सक अभ्यास	488
78.	प्रा. नितांजली भिमराज म्हस्के डॉ.विजयकुमार राऊत	आधुनिक भारत के निर्माण में महिलाओं का योगदान – क्रांतिज्योति मादाम कामा , भारत की कोकिला सरोजिनी नायडू , झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई के संदर्भ में	492
79.	डॉ.हरेश संपत शेळके	संत साहित्य : ज्ञानपरंपरेतील एक विवेकशील विचार	496
80.	प्रा. सुनिता देवीदास अकोलकर डॉ.विजयकुमार राऊत	भारतीय ज्ञान प्रणाली : स्वरूप और व्याप्ति	499
81.	डॉ. नंदकुमार भाऊसाहेब उदार	भारतीय ज्ञानपरंपरा व वारकरी संप्रदाय	502
82.	श्री. चेडे जगदीश योगीराज & प्रा.डॉ शेख अफसर शेख रशीद	सावित्रीबाई फुले पुणे विद्यापीठाशी संलग्नित महाविद्यालयातील विद्यार्थ्यांचा कोविड- १९ लॉकडाउन दरम्यान व लॉकडाउन नंतरच्या शारीरिक हालचालींचा सर्वेक्षणात्मक अभ्यास	509
83.	प्रा. दिपक बंडू खामकर	भारतीय ज्ञान परंपरेवर एक दृष्टीक्षेप	517
84.	प्रा.श्रीकांत संदिपान दरगुडे डॉ.अशोक विश्वनाथ घोरपडे	वैदिक काळातील शिक्षणाचा अभ्यासक्रम अध्यापन पध्दती व गुरु-शिष्य संबंध	521
85.	प्रा. कांबळे संदीप अर्जुन	भारतीय ज्ञान परंपरेतील मराठी नाटकांचे योगदान – विशेष संदर्भात 'तृतीय रत्न नाटक	525
86.	प्रा. दिवटे प्रियंका साहेबराव	मुद्रा योजना	533
87.	प्रा. डॉ . दीपक पंढरीनाथ सोनटक्के	बौद्धधर्माचे विचार	537
88.	डॉ. मनोहर रामनाथ एरंडे & प्रा. स्वाती भानुदास पवार	प्राचीन भारतातील भौगोलिक संकल्पना: ग्रहण, पृथ्वी, पृथ्वीचा आकार, अक्षांश आणि रेखांश, भूकंप, वायू मंडल, हवामान आणि वातावरण, आकाशीय गोलाचा विभाग (पंचांग), ग्रह व कालगणना	541
89.	प्रा. डॉ. मनोज बापूसाहेब तेलोरे	गायनमहर्षी अल्लादियाखाँ यांचे चरित्र : महाराष्ट्रातील संगीत परंपरेचा परिचय करून देणारे चरित्र	550
90.	डॉ. माया नारायण लहारे	वारकऱ्यांचे सर्वोदयी आंदोलन	556
91.	डॉ. विजयकुमार राऊत	मानवी मूल्यों के संदर्भ में संत साहित्य	561
92.	डॉ. भागवत पांडुरंग ठाकूर	भारतीय ज्ञान प्रणाली समोरील आव्हाने	565
93.	डॉ. विश्वास रोहिदास गवारी	प्राचीन भारतीय ज्ञान व्यवस्था : भाषा आणि लिपी यांचे महत्व	571
94.	प्रा. लक्ष्मण कोठावळे & प्रा. श्रीकांत आल्हाट	भारतीय ज्ञानपरंपरेत ज्ञानेश्वरीचे योगदान	580
95.	प्रा. डॉ.अशोक विश्वनाथ घोरपडे	प्राचीन भारतीय ज्ञान प्रणाली आणि कौटिल्याचे अर्थशास्त्र	583
96.	प्रा. श्यामराव रोकडे	बहुजनवादी विचार परंपरा	590
97.	प्रा.डॉ.हनुमंत गायकवाड	भारतीय ज्ञान परंपरा - बौद्ध धर्म के संदर्भ में	597
98.	कांबळे किशोर दशरथ	पर्यावरण संरक्षण आणि शाश्वत विकासात स्वदेशी ज्ञान प्रणालीची भूमिका	599

Scanned with OKEN Scanner

प्राचीन भारतातील भौगोलिक संकल्पना: ग्रहण, पृथ्वी, पृथ्वीचा आकार, अक्षांश आणि रेखांश, भूकंप, वायू मंडल, हवामान आणि वातावरण, आकाशीय गोलाचा विभाग (पंचांग), ग्रह व कालगणना

डॉ. मनोहर रामनाथ एरंडे, प्रा. स्वाती भानुदास पवार
सहाय्यक प्राध्यापक, भूगोल विभाग,
श्री मुलिकादेवी महाविद्यालय, निघोज
ता. पारनेर, जि.अहिल्यानगर .

सारांश

ग्रहण हे प्राचीन भारतात केवळ आकाशीय घटना नव्हे, तर यांचा सांस्कृतिक, धार्मिक आणि भौगोलिक दृष्टिकोनातून महत्त्व होते. प्रारंभिक काळात ग्रहणांचे कारण मिथकीय व धार्मिक समजांमध्ये लपलेले होते. परंतु कालांतराने भारतीय शास्त्रज्ञांनी ग्रहणांचे वैज्ञानिक विश्लेषण केले आणि या घटनेला एक भौगोलिक दृष्टिकोनातून समजून घेतले. प्राचीन भारतातील भौगोलिक संकल्पना हे अत्यंत विकसित आणि सुसंस्कृत ज्ञान होते. भारतीय शास्त्रज्ञांनी पृथ्वीच्या आकाराचा, तिच्या भूमितीचा आणि भौगोलिक स्थितीचा अत्यंत सुसंगत आणि अचूक अंदाज लावला. यातील मुख्य संकल्पना म्हणजे पृथ्वीचा आकार, अक्षांश आणि रेखांश यांचे समज आणि त्यावर आधारित अनेक भौगोलिक निरीक्षणे. भारतीय खगोलशास्त्रज्ञ आणि गणितज्ञांनी यावर असंख्य गणनांसह पृथ्वीचे स्थान, परिमाण आणि भौगोलिक वैशिष्ट्ये यांचा अभ्यास केला आहे.

प्राचीन भारतातील आकाशीय गोलाची विभागणी आणि ग्रह व कालगणना यांसारख्या भौगोलिक आणि खगोलशास्त्राच्या संकल्पनांचा अभ्यास अत्यंत सुसंस्कृत आणि प्रगल्भ होता. भारतीय तत्त्वज्ञ आणि गणितज्ञांनी पृथ्वीच्या आकाशीय घटकांचा अत्यंत सूक्ष्म व व्यवस्थित अभ्यास केला.

१. प्रस्तावना

ग्रहण ही एक आकाशीय घटना आहे ज्यात सूर्य किंवा चंद्र अस्थायीपणे अदृश्य होतात. या घटनेला प्राचीन भारतात धार्मिक आणि सांस्कृतिक महत्त्व होते, तसेच तंत्रशुद्ध शास्त्रीय दृष्टीकोनही विकसित करण्यात आला. भारतीय खगोलशास्त्रज्ञांनी ग्रहणांचे कारण स्पष्ट केले आणि त्यांची भविष्यवाणी करण्यासाठी गणिती पद्धती वापरल्या. याव्यतिरिक्त, ग्रहणांच्या अनुषंगाने अनेक धार्मिक विधी व प्रथा अस्तित्वात होत्या. या शास्त्रज्ञांनी ग्रहणांच्या संदर्भात एक अत्यंत वैज्ञानिक दृष्टिकोन विकसित केला.

प्राचीन भारतातील भौगोलिक संकल्पनांनी मानवतेच्या भौगोलिक दृष्टिकोनात महत्त्वपूर्ण योगदान दिले आहे. भारतीय शास्त्रज्ञांनी खगोलशास्त्र, गणित, आणि भौगोलिक स्थितीविषयक महत्त्वपूर्ण विचारांना विकसित केले. पृथ्वीचा आकार, तिच्या परिमाणांचा अंदाज, आणि पृथ्वीवरील विभिन्न स्थानांची मापणी यावर आधारित ज्ञानाने भारतीय विज्ञानात प्रगती केली.

पृथ्वीच्या आकारावर विचार करण्यास सुरुवात प्राचीन काळातच झाली होती. यासाठी भारतीय गणितज्ञ आणि खगोलशास्त्रज्ञांनी विविध प्रयोग आणि गणिती पद्धती वापरल्या. यात अक्षांश (latitude) आणि रेखांश (longitude) यांचे महत्त्व व त्यांचा शोध कसा लागला यावर चर्चा केली आहे.

Scanned with OKEN Scanner

प्राचीन भारतातील शास्त्रज्ञांनी विविध भौगोलिक, भौतिक आणि जलवायू प्रक्रियांबद्दल विचार केला. त्यांचा अभ्यास फक्त धार्मिक व सांस्कृतिक प्रथा आणि समजांपुरता मर्यादित न राहता, भौगोलिक घटनांचा आणि विज्ञानाचा सुसंगत अभ्यासही त्यांनी केला. त्यामध्ये भूकंप, वातावरण, हवामान आणि जलवायु यांचा सुस्पष्ट संदर्भ असून, भारतीय विचारधारा आणि विज्ञानाने यांना प्रगल्भतेने समजून घेतले. भूकंप, वायू मंडल, हवामान, आणि जलवायु यांचे प्राचीन भारतातील विविध दृष्टिकोनातून विश्लेषण भारतीय शास्त्रज्ञांनी हे घटनात्मक बाबी कशा समजल्या आणि त्यावर आधारित त्यांची मूलभूत माहिती काय होती, हे तपासले आहे.

प्राचीन भारतामध्ये खगोलशास्त्र आणि गणित यांचा अभ्यास अत्यंत उच्च दर्जाचा होता. आकाशातील तारांकडे, ग्रहांच्या कक्षापरिस्थितीवर, आणि नक्षत्रांच्या घडामोडींवर आधारित विविध गणितीय आणि खगोलशास्त्रीय अभ्यास करण्यात आले. या क्षेत्रात जे शास्त्रज्ञ कार्यरत होते, त्यांनाच त्यांचा अभ्यास पंचांग, आकाशीय गोल, आणि ग्रह व कालगणना यामध्ये महत्त्वाची भूमिका बजावली.

या पेपरमध्ये, प्राचीन भारतातील पंचांगाची रचना आणि आकाशीय गोलाचा अभ्यास कसा केला गेला आणि ग्रह व कालगणनांसाठी कोणत्या पद्धती वापरण्यात आल्या यावर चर्चा केली आहे. यासाठी विविध प्राचीन भारतीय खगोलशास्त्रज्ञांचा उल्लेख आणि त्यांच्या कार्यांचे विश्लेषण केले आहे.

अ) ग्रहण

१. प्राचीन भारतातील ग्रहणांची सांस्कृतिक आणि धार्मिक महत्त्व

प्राचीन भारतात ग्रहणांना पवित्र व दिव्य घटनांचा भाग मानले जात होते. *ऋग्वेद*मध्ये ग्रहणांचा उल्लेख आहे आणि ते एका नकारात्मक, शापात्मक घटनांशी संबंधित होते. भारतीय मिथकशास्त्रात *राहु* आणि *केतू* यांचे महत्त्व आहे, जे ग्रहणांच्या घटनेसाठी जबाबदार मानले जात होते.

१.१. राहु आणि केतू: मिथकीय कथा

भारतीय पौराणिक कथांनुसार, राहु हा एक राक्षस आहे जो अमृतपान करण्यासाठी देवतेविरुद्ध लढा देत असताना सूर्य आणि चंद्रासमोर येतो आणि ते गिळून टाकतो. यामुळे सूर्यग्रहण आणि चंद्रग्रहण होतात. राहुचा एक शिर आणि एक शरीर असतो, आणि केतू हा राहुचा शरीराचा भाग म्हणून मानला जातो. हे कथानक ग्रहणांच्या धार्मिक आणि सांस्कृतिक समजांसाठी अत्यंत महत्त्वपूर्ण ठरले. यामुळे ग्रहणांना अशुभ आणि असुरक्षित मानले गेले होते, आणि त्या वेळी विविध धार्मिक विधी व प्रथांचा अवलंब केला जात होता.

१.२. वेदांमध्ये ग्रहणांचा उल्लेख

ग्रहणांचा उल्लेख वेदांमध्ये एक महत्त्वाचा आकाशीय संकेत म्हणून केला जातो. *ऋग्वेद*मध्ये सूर्य व चंद्राच्या अदृश्य होण्याच्या घटनांवर सांगितले जाते. त्यांना अशा घटनांशी संबंधित देवते आणि तांत्रिक शक्तींच्या दृष्टीने समजले जात होते.

२. प्राचीन भारतीय खगोलशास्त्रज्ञांचा योगदान

ग्रहणांच्या घटनांचे वैज्ञानिक स्पष्टीकरण आणि त्यांचे गणिती विश्लेषण भारतीय खगोलशास्त्रज्ञांनी केले. आर्यभट्ट, ब्रह्मगुप्त, आणि वराहमिहिर यांच्या कार्यांनी भारतीय खगोलशास्त्राला एक प्रगल्भ दिशा दिली.

२.१. आर्यभट्ट आणि ग्रहणांचे वैज्ञानिक विश्लेषण

आर्यभट्ट (४७६-५०० ईसवी) हे एक अत्यंत महत्त्वाचे भारतीय गणितज्ञ आणि खगोलशास्त्रज्ञ होते. त्यांच्या ***आर्यभटीया*** या ग्रंथात त्यांनी ग्रहणांचा वैज्ञानिक अभ्यास केला. आर्यभट्ट यांनी ग्रहणांना सूर्य व चंद्राच्या

Scanned with OKEN Scanner

छायेमुळे होणारी घटना मानली आणि पृथ्वीचा गोल आकार व तिच्या फिरण्याची प्रक्रिया समजावून सांगितली. त्याने सूर्यग्रहण आणि चंद्रग्रहण कसे होतात याचे विवेचन केले. आर्यभट्ट यांच्या मते, सूर्यग्रहण तेव्हा होतात जेव्हा चंद्र सूर्याच्या समोर येतो, आणि चंद्रग्रहण तेव्हा होतात जेव्हा पृथ्वी चंद्राच्या समोर येते आणि तिची छाया चंद्रावर पडते.

२.२. ब्रह्मगुप्त आणि ग्रहणांची गणना

ब्रह्मगुप्त (५९८-६६८ ईसवी) यांनी *ब्रह्मस्फुट सिद्धांत* मध्ये सूर्यग्रहण आणि चंद्रग्रहणांचे गणितीय विश्लेषण केले. त्याने यासाठी भौगोलिक परिस्थिती, ग्रहांच्या कक्षेतील स्थिती, आणि पृथ्वीची छाया कशी कार्य करते यावर विस्तृत चर्चा केली. ब्रह्मगुप्त हे पहिले शास्त्रज्ञ होते ज्यांनी ग्रहणाच्या समय व ठिकाणाच्या अचूक गणनांसाठी सूत्रांची मांडणी केली.

२.३. वराहमिहिर आणि ग्रहणांची भविष्यवाणी

वराहमिहिर (५००-५८७ ईसवी) ने *बृहद्संहित* मध्ये ग्रहणांचे सूक्ष्म निरीक्षण आणि भविष्यातील ग्रहणांची गणना केली. त्याने आपल्या कार्यात गणितीय तंत्रज्ञानाचा वापर करून ग्रहणांच्या परिस्थितीचा अचूक अंदाज व्यक्त केला.

३. भारतीय खगोलशास्त्र आणि ग्रहणांची भविष्यवाणी

भारतीय खगोलशास्त्रज्ञांनी ग्रहणांची भविष्यवाणी करण्यासाठी गणितीय मॉडेल्स आणि खगोलीय उपकरणांचा वापर केला. त्यांनी ग्रहणांच्या अचूक काळ आणि स्थाने निर्धारित करण्यासाठी विविध गणिती पद्धती विकसित केल्या.

३.१. सूर्यग्रहणाची गणना

सूर्यग्रहण तेव्हा होतात जेव्हा चंद्र पृथ्वी आणि सूर्याच्या मध्ये येतो आणि सूर्याचे प्रकाश अडवतो. भारतीय खगोलशास्त्रज्ञांनी सूर्यग्रहणाच्या गणनेची पद्धत विकसित केली, ज्यात चंद्राची कक्षा, पृथ्वीचे स्थान आणि सूर्याचे गती यांचा अभ्यास केला जातो.

३.२. चंद्रग्रहणाची गणना

चंद्रग्रहण तेव्हा होतात जेव्हा पृथ्वी सूर्य आणि चंद्राच्या मध्यभागी येते, ज्यामुळे पृथ्वीची छाया चंद्रावर पडते. भारतीय शास्त्रज्ञांनी यासाठी खगोलीय पद्धती वापरून चंद्रग्रहणाची अचूक गणना केली.

४. ग्रहणांच्या भौगोलिक आणि सांस्कृतिक महत्त्वाची भूमिका

प्राचीन भारतात ग्रहणांचे भौगोलिक आणि सांस्कृतिक महत्त्व खूप होते. ग्रहणाच्या काळात धार्मिक विधी केले जात होते, तसेच याला एक अपशकुन म्हणून मानले जात होते. लोक यावेळी स्नान करण्यासाठी पवित्र नद्यांमध्ये जात असत, आणि विविध प्रकारची पूजा केली जात होती.

४.१. धार्मिक विधी आणि प्रथा

ग्रहणाच्या वेळी लोक विविध पवित्र स्थळांवर जाऊन स्नान करत, पूजा अर्चा करत आणि उपवासा करीत. या धार्मिक कृत्यांमुळे पृथ्वीवरील अंधकार दूर होईल, अशी श्रद्धा होती.

४.२. ज्योतिषशास्त्र आणि ग्रहण

ग्रहणांचे वेळापत्रक, त्यांचा प्रभाव, आणि त्यांचा प्रभाव जीवनावर याविषयी अनेक ज्योतिष शास्त्रज्ञांनी सूचनाही दिली होती. यामुळे ग्रहणाचे वैज्ञानिक महत्व आणि त्याचे सामाजिक व सांस्कृतिक महत्त्वता वाढले.

ब) पृथ्वीच्या आकाराचा अंदाज –

Scanned with OKEN Scanner

१. प्राचीन भारतीय दृष्टिकोन

प्राचीन भारतीय शास्त्रज्ञांनी पृथ्वीचे गोलाकार रूप असावे, याची कल्पना फार आधीपासून विकसित केली होती. यामध्ये आर्यभट्ट, वराहमिहिर, आणि ब्रह्मगुप्त यांसारख्या खगोलशास्त्रज्ञांचा मोठा हातभार होता.

१.१. आर्यभट्ट आणि पृथ्वीचे गोलाकार रूप

आर्यभट्ट (४७६-५०० ईसवी) हे भारतीय खगोलशास्त्रज्ञ होते ज्यांनी पृथ्वीच्या गोलाकार रूपावर आपले विचार मांडले. त्यांनी *आर्यभटीया* या ग्रंथात पृथ्वीला एका गोलाकार ग्रह म्हणून ओळखले. त्याच्या मते, पृथ्वी एक गोल वस्तु आहे आणि ती आपल्यावरच फिरते. याने पृथ्वीच्या आकाराचे आणि फिरण्याचे यथार्थ वर्णन दिले. आर्यभट्ट यांच्या मते, पृथ्वीचा आकार गोल असून, तिचा अक्षांश व रेखांशावर आधारित निराकार माप घेता येतो. यामुळे त्यांनी पृथ्वीच्या गणितीय वैशिष्ट्यांवर प्रकाश टाकला.

१.२. ब्रह्मगुप्त आणि पृथ्वीचा आकार

ब्रह्मगुप्त (५९८-६६८ ईसवी) हे देखील प्रसिद्ध भारतीय खगोलशास्त्रज्ञ होते, ज्यांनी पृथ्वीच्या आकाराचा थोडा वेगळा दृष्टिकोन मांडला. ब्रह्मगुप्ताने पृथ्वीला संपूर्ण विश्वाच्या केंद्राप्रमाणे मांडले आणि त्याचे गोल आकाराचे वर्णन केले. ब्रह्मगुप्ताने *ब्रह्मस्फुट सिद्धांत* मध्ये पृथ्वीच्या आकारावर, तिच्या फिरण्यावर आणि त्याच्या इतर भौगोलिक गुणधर्मावर सुस्पष्ट माहिती दिली. त्याच्या मते पृथ्वी हा एक वर्तुळाकार पिंड आहे जो त्याच्या अक्षांवर फिरत असतो.

२. अक्षांश आणि रेखांश – पृथ्वीवरील स्थान मापण्याचे आधुनिक संकल्पना

प्राचीन भारतात अक्षांश आणि रेखांश यांचा वापर पृथ्वीवर स्थान मोजण्यासाठी केला जात होता. मात्र, या संकल्पनांचा शोध व पद्धती कशा प्रकारे विकसित झाल्या याबद्दल अधिक तपशीलवार विचार केला पाहिजे.

२.१. अक्षांश (Latitude)

अक्षांश म्हणजे पृथ्वीवरील कोणत्याही स्थानाचे वर्तुळाच्या समांतर गतीचा माप. याची मापणी उत्तर व दक्षिण ध्रुवांपासून केली जाते. भारतीय शास्त्रज्ञांनी अक्षांश मोजण्यासाठी अनेक परिष्कृत तंत्रज्ञान विकसित केले. त्यासाठी त्यांनी सूर्याची स्थिती, नक्षत्रांचा अभ्यास, आणि ग्रहांचा उपयोग केला.

२.२. रेखांश (Longitude)

रेखांश म्हणजे पृथ्वीवरील कोणत्याही स्थानाचे वर्तुळाच्या लांबीची माप. याला ग्रीनविच मर्केटाइम वेळेच्या आधारावर मोजले जाते. प्राचीन भारतात रेखांशाचा अभ्यास आकाशातील नक्षत्रांच्या स्थितीवर आधारित होता. यासाठी सूर्यमालेतील स्थिर तारांकडे लक्ष दिले जात होते. आर्यभट्ट आणि ब्रह्मगुप्त यांच्या कार्यांमध्ये अक्षांश आणि रेखांश यांचे महत्त्व अधोरेखित केले गेले आहे. त्यांना या संदर्भात गणिती आणि खगोलशास्त्रीय तत्त्वांचा उपयोग करून अचूक गणना करण्यास मदत झाली.

३. पृथ्वीचा परिमाणाचा अंदाज – प्राचीन भारतीय गणिताची भूमिका

प्राचीन भारतीय गणिती पद्धतींमुळे पृथ्वीच्या आकाराची आणि परिमाणाची अचूक मापणी करण्यात येऊ शकली. या साठी गणिताचे विविध तत्त्वज्ञान आणि सिद्धांत वापरण्यात आले.

३.१. गाणितीय सूत्रांचा वापर

Scanned with OKEN Scanner

पृथ्वीच्या आकाराचे आणि परिमाणाचे अचूक गणितीय विश्लेषण भारतीय शास्त्रज्ञांनी केले. त्यासाठी त्यांनी त्रिकोणमिती, गणिती युक्त्या, आणि ग्रहांच्या हालचालींचा वापर केला. यामुळे पृथ्वीच्या गोलाकार आकाराचे समज अधिक समृद्ध झाले.

३.२. पृथ्वीच्या व्यासाची गणना

आर्यभट्ट आणि इतर भारतीय शास्त्रज्ञांनी पृथ्वीचा व्यास मोजण्यासाठी गणितीय पद्धती वापरल्या. त्यांनुसार, पृथ्वीचा व्यास साधारण १२,००० किमी असावा, हा अंदाज त्यांनी मांडला होता.

४. भारतीय खगोलशास्त्रज्ञांची योगदान

प्राचीन भारतीय खगोलशास्त्रज्ञांनी पृथ्वी, अक्षांश, रेखांश आणि पृथ्वीच्या आकारावर संशोधन केले आणि या संकल्पनांना विज्ञान आणि गणिताच्या आधारावर बळकट केले. त्यांचा कार्य भारतीय विज्ञानाच्या इतिहासात महत्त्वपूर्ण ठरले.

४.१. प्राचीन भारतीय खगोलशास्त्रज्ञांची शास्त्रीय पद्धत

आर्यभट्ट, ब्रह्मगुप्त, वराहमिहिर यांनी पृथ्वीच्या आकाराची आणि भौगोलिक स्थितीची माहिती सुस्पष्ट केली. त्यांचे गणितीय आणि खगोलशास्त्रीय कार्य भारतीय शास्त्रज्ञांसाठी एक महत्त्वपूर्ण मार्गदर्शक ठरले.

क)भूकंप

१. प्राचीन भारतातील भूकंपाची संकल्पना

भूकंप ही एक नैसर्गिक घटना आहे, जी पृथ्वीच्या पृष्ठभागावर अचानक थरथरणे किंवा कंपन निर्माण करते. प्राचीन भारतात भूकंपाची संकल्पना विविध धार्मिक आणि सांस्कृतिक संदर्भांमध्ये जास्त चर्चा केली जात असे, मात्र शास्त्रीय दृष्टिकोनातूनही भूकंपाचे विश्लेषण करण्यात आले.

१.१. भूकंप आणि त्याचे धार्मिक आणि सांस्कृतिक अर्थ

भारतीय धर्मशास्त्रात भूकंप हे एक निसर्गाच्या रौद्र रूपाचे प्रतीक मानले जात होते. *महाभारत* आणि *रामायण*मध्ये भूकंपाच्या घटनांचा उल्लेख आहे, जिथे भूकंप पृथ्वीच्या असंतुलनाचे लक्षण म्हणून घेतले जात होते. इ.स. पूर्व १००० वर्षांपूर्वीच्या संस्कृत वाङ्मयात भूकंपाच्या घटनेला एक अपशकुन मानले जात असे.

१.२. भूकंपाचा शास्त्रीय दृष्टिकोन

भारतीय शास्त्रज्ञ, विशेषतः वराहमिहिर (५००-५८७ ईसवी) यांनी भूकंपाचे शास्त्रीय विश्लेषण केले. वराहमिहिराच्या *बृहद्संहित* मध्ये त्याने भूकंपाच्या कारणांवर चर्चा केली. त्याच्या मते, भूकंप पृथ्वीच्या अंतर्गत शक्तींमुळे होतात. या अंतर्गत शक्ती पृथ्वीच्या हलचाली आणि त्यांच्या प्रतिक्रियांसह भूकंपांची व्याख्या केली.

१.३. प्राचीन भारतीय गणित आणि भूकंप

प्राचीन भारतीय गणितज्ञांनी भूकंपांच्या घटनेवर आधारित विविध अचूक गणनांचे कार्य केले. त्यांनी पृथ्वीच्या हलचालींवरील विचार करत भूकंपाच्या शक्यतांचा अंदाज लावला. यासाठी विविध ग्रहांच्या स्थिती, पृथ्वीच्या आतल्या तापमानाचा अभ्यास आणि भौतिक प्रक्रियांवर विचार केला.

२. प्राचीन भारतातील वायू मंडल (Atmosphere)

वायू मंडल (अथवा वातावरण) पृथ्वीच्या चहोबाजूला असलेला वायूचा थर, जो जीवनासाठी अत्यंत आवश्यक आहे. प्राचीन भारतीय शास्त्रज्ञांनी वातावरणाची संरचना आणि त्याचे कार्य काय आहे यावर चर्चा केली.

२.१. वायू मंडलाची प्राथमिक समज

Scanned with OKEN Scanner

वायू मंडल किंवा वातावरणाच्या संकल्पनेचा उल्लेख प्राचीन भारतीय ग्रंथांमध्ये आहे. वायू मंडलाचे महत्व आणि त्याच्या कार्यावर *ऋग्वेद*मध्ये आणि *आयुर्वेद* मध्ये विस्तृत चर्चा केली आहे. आयुर्वेदानुसार, वायूचा आपल्या शरीरावर आणि आयुष्यात मोठा प्रभाव असतो. वायूची निरंतर गती आणि त्याचे स्वरूप शरीराच्या आरोग्याशी जोडले गेले होते.

२.२. वायू मंडलाच्या घटकांचा अभ्यास

भारतीय शास्त्रज्ञांनी वायू मंडलात असलेल्या विविध घटकांचा अभ्यास केला. वायूमालिका, वायूच्या गती आणि त्याचे इतर घटक यावर भारतीय तत्त्वज्ञांनी गहन विचार केला. विविध आकाशीय घटक वायूच्या वर्तुळी स्थितीवर परिणाम करतात आणि ते पृथ्वीच्या वातावरणाशी संबंधित होते. हे वायू सापेक्ष, उष्णता, आणि आर्द्रता यावर प्रभाव पाडतात.

३. प्राचीन भारतातील हवामान आणि जलवायु

हवामान आणि जलवायु या दोन प्रमुख घटकांमुळे पृथ्वीवरील जीवनावर प्रभाव पडतो. प्राचीन भारतातील शास्त्रज्ञांनी हवामान आणि जलवायूच्या विविध घटकांची अभ्यासाची पद्धत विकसित केली.

३.१. हवामानाचे विश्लेषण

प्राचीन भारतीय ग्रंथांमध्ये हवामानाच्या बदलाचे संदर्भ अनेक ठिकाणी आहेत. ते ऋतूंच्या बदलावर आधारित होते. *ऋतुसंहिता* मध्ये हवामान, ऋतूंचे चक्र आणि त्याचे कृषी कार्यावर प्रभाव यावर चर्चा केली आहे. प्राचीन भारतीय शास्त्रज्ञांनी हवामानाच्या बदलांना विविध प्राकृतिक घटकांशी जोडले होते.

३.२. जलवायू आणि त्याचे मानव जीवनावर परिणाम

प्राचीन भारतात जलवायूचे महत्त्व अत्यधिक होते. जलवायु म्हणजे हवामानाचे दीर्घकालीन प्रकार, ज्यामुळे प्रदेशाची भौगोलिक रचना, कृषी उत्पादन आणि इतर मानवी क्रिया प्रभावित होतात. भारतीय शास्त्रज्ञांना जलवायूच्या बदलांची कशी भविष्यवाणी करावी याची समज होती. यासाठी त्यांनी पाऊस, वारा, आणि सूर्यप्रकाश यावर आधारित विश्लेषण केले.

३.३. प्राचीन भारतीय कृषी व हवामानाचा संबंध

भारतामध्ये कृषी हे जीवनाचा मुख्य आधार होते, आणि हवामानाचा प्रभाव त्या काळातील शेतीवर महत्वाचा होता. हवामानाच्या शास्त्रीय अभ्यासात याचा महत्त्वाचा समावेश होता. यावर *कृषिग्रंथ* आणि विविध संस्कृत ग्रंथांमध्ये लेखन झाले आहे.

ड) पंचांग

१. भारतीय कालनिर्णय प्रणाली

पंचांग हा प्राचीन भारतातील कालनिर्णयाचा एक महत्त्वपूर्ण साधन आहे. याचा उपयोग धार्मिक कार्ये, कृषी, आणि विविध सामाजिक व सांस्कृतिक क्रियाकलापांच्या नियोजनासाठी केला जात असे. पंचांगाचे मुख्य घटक म्हणजे दिन, नक्षत्र, तिथी, योग आणि करण.

१.१. पंचांगाची रचना

पंचांग हे पाच मुख्य घटकांवर आधारित असते:

- **तिथी** – चंद्र आणि सूर्य यांच्या स्थितीनुसार दिनाची विभागणी.
- **नक्षत्र** – आकाशातील २७ नक्षत्रांचे चंद्राच्या कक्षेतील स्थान.

Scanned with OKEN Scanner

- **योग** – सूर्य व चंद्र यांच्या विशेष संयोगानुसार विविध योगांची गणना.
- **करण** – चंद्राच्या चालीनुसार केलेला हिशोब, त्यात ११ करण असतात.
- **वार** – आठ दिवसीय सप्ताहांत एक वार (सोमवार, मंगळवार इत्यादी).

१.२. पंचांगाची भूमिका

पंचांगा नुसार सर्वप्रथम धार्मिक कार्ये ठरविली जात होती. याचा वापर कालगणना, वेद, संस्कृत शास्त्र वगैरे अनेक संस्कृतीसंबंधी कार्यामध्ये केला जात असे. हे लक्षात घेत, पंचांगाच्या महत्त्वाच्या घटकांची गणिती व खगोलशास्त्रीय मांडणी देखील भारतीय शास्त्रज्ञांनी केली.

१.३. पंचांगाचा खगोलशास्त्राशी संबंध

पंचांग तयार करताना भारतीय शास्त्रज्ञांनी ग्रहांच्या चालीचा, सूर्योदय आणि सूर्यास्त, चंद्राची कक्षा इत्यादींचा अभ्यास केला. यामुळे भारतीय शास्त्रज्ञांना खगोलशास्त्राच्या अनेक गोष्टी जास्त चांगल्या प्रकारे समजल्या आणि गणिती पद्धती विकसित करण्यास मदत झाली.

२. आकाशीय गोलाची विभागणी

आकाशीय गोलाचे विभाजन म्हणजे आकाशातील क्षेत्राचे विश्लेषण, ज्याचा उपयोग तारामंडळ, ग्रहांच्या मार्ग आणि नक्षत्रांचे अध्ययन करण्यासाठी केला जात असे. आकाशीय गोलाचे विभाजन विविध प्रकारे केले जात असे, आणि या प्रणालीचा उपयोग प्राचीन भारतीय खगोलशास्त्रज्ञांच्या गणनांमध्ये होता.

२.१. आकाशीय गोलाचे सिद्धांत

भारतीय तत्त्वज्ञ आणि खगोलशास्त्रज्ञांनी आकाशीय गोलाचे दोन प्रमुख भागांमध्ये विभाजन केले:

- **उत्तरी गोलार्ध** (Northern Hemisphere)
- **दक्षिण गोलार्ध** (Southern Hemisphere)

त्याचप्रमाणे, आकाशीय गोलावर २७ नक्षत्रांची संख्या निश्चित केली. या नक्षत्रांची नोंद ग्रहांच्या चालींवर आधारित असत. प्राचीन भारतीय गणितज्ञांनी या नक्षत्रांच्या कक्षेतील बदल आणि त्यांचे पृथ्वीवरील प्रभाव तपासले.

२.२. नक्षत्रांचा वापर आणि त्याची गणना

प्राचीन भारतात आकाशीय गोलावर नक्षत्रांची स्थिरता आणि सूर्य, चंद्र, आणि इतर ग्रहांची कक्षा तपासण्याचे कार्य सुरू होते. नक्षत्रांच्या स्थायित्वामुळे आकाशातील ताऱ्यांचा मोजमाप करण्याची पद्धत बनली. तसेच, चंद्र आणि सूर्य यांचे यथार्थ गणनाही करणे शक्य झाले.

३. ग्रह गणना

ग्रह गणना म्हणजे सूर्य, चंद्र आणि इतर ग्रहांच्या कक्षेतील हालचालींची गणना. या गणनांमध्ये भारतीय गणितज्ञांनी अनेक सूक्ष्म गणिती पद्धती वापरल्या.

३.१. ग्रहांची कक्षेतील चाल

भारतीय गणितज्ञ आणि खगोलशास्त्रज्ञ विशेषतः आर्यभट्ट, ब्रह्मगुप्त, आणि वराहमिहिर यांनी ग्रहांच्या कक्षेतील गणना करण्यासाठी विशेष गणिती सूत्रे विकसित केली. या सूत्रांच्या माध्यमातून, त्यांनी ग्रहांच्या चालतेचा, त्याच्या कक्षेतील स्थितीचा, आणि त्याच्याशी संबंधित आकाशीय घटकांचा अभ्यास केला.

३.२. आर्यभट्टाची ग्रह गणना

Scanned with OKEN Scanner

आर्यभट्ट (४७६-५०० ईसवी) यांचा *आर्यभटीया* ग्रंथ प्राचीन भारतीय ग्रह गणनेचा एक अत्यंत महत्त्वाचा स्त्रोत आहे. त्यांनी ग्रहांच्या गति, त्यांचा कक्ष व इतर खगोलीय घटक यावर विस्तृत गणना केली. आर्यभट्टाने ग्रहांचा पृथ्वीवर प्रभाव आणि ग्रहांच्या चालनाचे विश्लेषण वैज्ञानिक दृष्टिकोनातून केले.

३.३. ब्रह्मगुप्त आणि ग्रह गणना

ब्रह्मगुप्त (५९८-६६८ ईसवी) यांनी ग्रह गणनांसाठी एक महत्वाची प्रणाली तयार केली, जी त्याच्या *ब्रह्मस्फुट सिद्धांत* या ग्रंथात दिली आहे. त्याने ग्रहांच्या स्थिती, कक्षा आणि त्यांच्या परिघावर आधारित गणना केले.

३.४. वराहमिहिराचा योगदान

वराहमिहिर (५००-५८७ ईसवी) याच्या *बृहद्संहित* मध्ये ग्रह गणनेच्या प्रगतीवर सुस्पष्ट माहिती आहे. त्याने ग्रहांच्या स्थिति, तिथी, आणि त्यांच्या चालांवर सखोल गणना केली.

निष्कर्ष

ग्रहणांची घटना ही प्राचीन भारतीय खगोलशास्त्रज्ञांच्या कार्यामुळे विज्ञानाच्या दृष्टीने महत्त्वपूर्ण बनली. आर्यभट्ट, ब्रह्मगुप्त, आणि वराहमिहिर यांच्या कार्यामुळे प्राचीन भारताने ग्रहणांच्या गणनेसाठी एक वैज्ञानिक दृष्टीकोन विकसित केला. भारतीय खगोलशास्त्रज्ञांनी ग्रहणांचा अचूक अभ्यास केला, आणि त्यांच्या कार्यामुळे ग्रहणांचा वैज्ञानिक विश्लेषण व भविष्यवाणी शक्य झाली.

प्राचीन भारतातील भौगोलिक संकल्पनांनी पृथ्वीच्या आकार, परिमाण, अक्षांश व रेखांश यासंदर्भात समृद्ध ज्ञान दिले आहे. भारतीय शास्त्रज्ञांनी पृथ्वीचे गणितीय आणि खगोलशास्त्रीय विश्लेषण अत्यंत सुसंगतपणे केले, ज्यामुळे आधुनिक भौगोलिक अभ्यासाचा प्रारंभ झाला. भारतीय गणित व खगोलशास्त्राच्या या योगदानामुळे संपूर्ण विश्वातील भौगोलिक आणि खगोलशास्त्रीय अभ्यासाला एक नवीन दिशा मिळाली.

प्राचीन भारतातील भौगोलिक संकल्पनांमध्ये भूकंप, वायू मंडल, हवामान आणि जलवायु याबद्दल अत्यंत विकसित आणि सूक्ष्म दृष्टिकोन होता. भारतीय शास्त्रज्ञ आणि तत्त्वज्ञांनी या सर्व घटकांवर गहन विचार केला. त्यांची शास्त्रीय कार्ये आणि विचारधारा प्राचीन विज्ञानाच्या आणि भौगोलिक ज्ञानाच्या क्षेत्रात महत्त्वपूर्ण ठरली. आजच्या विज्ञानाच्या युगात, प्राचीन भारतातील या संकल्पनांचा अभ्यास करणे महत्वाचे ठरते, कारण त्याने पर्यावरण, पृथ्वीचे कार्य आणि जीवनाच्या विविध घटकांवर असलेले प्रभाव समजून घेतले.

प्राचीन भारतातील आकाशीय गोलाचे विभागणी, पंचांगाचे गणितीय विश्लेषण आणि ग्रह गणनांची पद्धत अत्यंत सुसंगत आणि उच्च दर्जाची होती. भारतीय शास्त्रज्ञांनी आकाशीय घटकांच्या गणनेत अत्यंत सूक्ष्म पद्धती वापरल्या. हे सर्व गणिती आणि खगोलशास्त्रीय तत्त्वज्ञान आजच्या विज्ञानाच्या युगात अत्यंत महत्त्वाचे ठरते.

आकाशीय गोलाच्या विभागणीमध्ये आणि ग्रह गणनांमध्ये प्राचीन भारताने जे योगदान दिले, त्यामुळे खगोलशास्त्राचा अभ्यास जागतिक स्तरावर पुढे गेला. भारतीय तत्त्वज्ञांच्या या योगदानाचे महत्त्व आजही खगोलशास्त्र, गणित, आणि भौगोलिक विश्लेषणांच्या क्षेत्रात उंचावले आहे.

संदर्भग्रंथ

Scanned with OKEN Scanner

१. आर्यभट्ट, *आर्यभटीया*, 499 ईसवी.
२. ब्रह्मगुप्त, *ब्रह्मस्फुट सिद्धांत*, 628 ईसवी.
३. वराहमिहिर, *बृहद्संहित*, 587 ईसवी.
४. ऋग्वेद आणि *महाभारत*.
५. इंडियन एट्रॉनॉमी: हिस्ट्री अँड इम्पॅक्ट.
६. भारतीय गणित आणि खगोलशास्त्र: इतिहास व योगदान
७. ऋग्वेद
८. आयुर्वेद: पर्यावरण आणि आरोग्य
९. भारतीय खगोलशास्त्र आणि पर्यावरण विज्ञान
१०. प्राचीन भारतातील भूकंपांचे वैज्ञानिक दृष्टिकोन
११. गणित आणि खगोलशास्त्र: भारतीय दृष्टिकोन
१२. ऋग्वेद व *महाभारत* – आकाशीय घटकांची कल्पना

******

Scanned with OKEN Scanner

Ahmednagar Jilha Maratha Vidya Prasarak Samaja's

New Arts, Commerce & Science College, Parner

Dist - Ahilyanagar



National Conference on

Indian Knowledge System : Nature & Scope

Wednesday 5th March, 2025

- Organized By -

IQAC and Faculty of Humanities & Commerce

New Arts, Commerce & Science College, Parner

Dist - Ahilyanagar

Scanned with OKEN Scanner

99.	डॉ. सोपान भानुदास दहातोडे	भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) के प्रचार प्रसार में iksindia.org वेबसाइट का महत्त्व एवं योगदान	601
100.	डॉ. गोरक्षनाथ किसन घोलप	ग्रामदेवता भेसाई देवी	607
101.	अनिल कुंडलिक पठाडे & डॉ. दीपक पंढरीनाथ सोनटक्के	भारतीय ज्ञान प्रणाली आणि आदिवासी समाज	613
102.	अमितकुमार गणेश शिंगणे	भारतीय ज्ञान परंपरेचा ऐतिहासिक विकास आणि त्याची आधुनिक काळातील उपयुक्तता	624
103.	प्रा. शुभदा शिवाजी आर्डे	भारतीय ज्ञान परंपरा में सूरदास के दार्शनिक विचार	631
104.	प्रा. प्रवीण भगवानराव पाऊलबुद्धे	भारतीय ज्ञान प्रणाली भाषा आणि वाङ्मय.	634
105.	प्रा.डॉ.विजय देशमुख	भारताचा प्राचीन ते आधुनिक काळापर्यंतचा क्रीडा इतिहास	640
106.	प्रा.तनपुरे प्रतिक्षा शिवाजी	भारतीय ज्ञान परंपरा में सुफी प्रेमाख्यान काव्य	646
107.	प्रा. रोहोकले सुवर्णा दत्तात्रय	भारतीय ज्ञान परंपरा में भारतीय दर्शन।	649
108.	प्रा. संगिता पंढरीनाथ मांडगे	भारतीय ज्ञान परंपरा और फिल्मांतरण	654
109.	प्रा. निलेश बाळासाहेब भालके	पारंपारिक उद्योग आणि डिजिटल युग: आयकेएस-आधारित उद्योजकतेचे पुनरुज्जीवन	658
110.	डॉ.विजय निवृत्ती सुरोशी	भारतीय ज्ञान प्रणालीचे स्वरूप व महत्व	672
111.	प्रा. गाडीलकर आरती साहेबराव	भारतीय ज्ञान परंपरा आणि कौटिल्यांच्या आर्थिक विचारांची प्रासंगिकता	674
112.	डॉ.मनिषा रामचंद्र गाडीलकर	निर्गुण भक्तिप्रवाह के प्रवर्तक और ज्ञान परंपरा	678
113.	डॉ. धारा शेगावणकर	भारत में शारीरिक शिक्षा	681
114.	प्रा. डॉ. नवनाथ अंगद शिंदे	भारतीय ज्ञानपरंपरा आणि मराठी लोककथा	686
115.	प्रा.अनिल नामदेव पडवळ	भारतीय ज्ञान प्रणाली : आर्थिक आणि उद्योजकीय संधी	689
116.	वाघमारे योगिता प्रल्हाद	भारतीय ज्ञान परंपरा आणि श्री छत्रपती शिवाजी महाराजांची अर्थ नीती	695
117.	सहा. प्रा. भिला हिलाल भामरे	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर : शेती विषयक विचार व कार्य	700
118.	Mr. Ananda Pandhare	Influence of Sanskrit Drama on Indian literature	704
119.	Dr. Shantaram Salve	Adventure of Sports For Youth	712
120.	Dr. Thube Shubhangi	Economic and Entrepreneurial Opportunities in Indigenous Knowledge Systems (IKS)	715
121.	Dr.Thorat S. S	Management Lessons From Ramayan	717
122.	Dr. Dadasaheb R. Jaware and Mr. Adinath N. Bramhane	Integration of Indian Knowledge System in Higher Education and Research	720
123.	Prof. Shraddha Satyavan Damse	Classification of Carbon Dots (CDs), their synthesis, structural and optical properties with applications	726
124.	डॉ.संदीप नामदेव मिरे & शेळके शिवाजी नाथा	महाराजा सयाजीराव गायकवाड व महाराणी चिमणाबाई यांच्या कार्यात तंत्रज्ञानाचा वापर आणि बडोद्याचा विकास	727
125.	Miss. Ankita Bhunia	Integration of Indian Knowledge Systems with Modern Education and Research	733
126.	Prof. Vaishnavi K. Nagpure	Rethinking the History of Inclusion of IKS in School Curricula: Endeavoring to Legitimate the Subject	740
127.	श्री. गावित प्रकाश महादू	भारतीय प्राचीन वास्तूशैली ज्ञान परंपरेचा विकास	752
128.	डॉ. कुंदा बाळासाहेब कवडे	भारतीय ज्ञान प्रणाली आणि मराठी भाषा	758
129.	श्री. पवार रामेश्वर भाऊसाहेब	नवीन शैक्षणिक धोरण व भारतीय ज्ञान परंपरा	764

Scanned with OKEN Scanner

निर्गुण भक्तिप्रवाह के प्रवर्तक और ज्ञान परंपरा

डॉ. मनिषा रामचंद्र गाडीलकर
हिंदी विभागप्रमुख,
श्री मुलिकादेवी महाविद्यालय, निघोज
तह. पारनेर जि .अ. नगर

प्रस्तावना :

प्रत्येक संस्कृति की धरोहर वहां के प्राचीन ग्रंथो में निहित है। परंपरा के आधार पर संस्कृत,पाली ,प्राकृत और अपभ्रंश से होती हुई हिंदी संस्कृत की ही पुत्री कहलाती हैं।हिंदी उमी ज्ञान को विभिन्न विधाओं के माध्यम से प्रत्येक जिज्ञासु तक पहुंचती है। इसी ज्ञान परंपरा ने विश्व को प्रभावित किया हैं। हिंदी साहित्य जगत ज्ञान का वह सूर्य है,जो विभिन्न विधारूपी रश्मियों से चमत्कृत होकर संपूर्ण संसार को आलोकित करता हैं।भारतीय ज्ञान परंपरा को प्रवाहित करनेवाले इस साहित्य सूर्य की ओर दृष्टिपात किया जाए तो गद्य,उपन्यास,कहानी,संस्मरण ,एकांकी,नाटक ,रिपोर्ताज,यात्रा साहित्य आदि विधाओं के रूप में यह संसार की विभिन्न भावनाओं को समाज के समक्ष प्रकाशित करने के लिए अग्रेनी हैं।

निर्गुण भक्तिप्रवाह के प्रवर्तक संत कबीर:

मध्ययुगीन संत साहित्य के प्रमुख कवि संत कबीर अपने युग की उपज हैं।युगीन परिस्थितियों एवं समय की मांग ने उनके व्यक्तित्व को गढ़ा हैं।जिस समय कबीर बोध हुए थे, वह समय ही भक्ति की लहर का था। उस लहर को बढ़ाने के प्रबल कारण भी प्रस्तुत थे। मुसलमानों के भारत में आ बसने से परिस्थिति में बहुत कुछ परिवर्तन हो गया।हिंदू जनता का नैराश्य दूर करने के लिए भक्ति का आश्रय ग्रहण करना आवश्यक था।इसके अतिरिक्त कुछ लोगों ने हिंदू और मुसलमान भक्त संतों की परंपरा विरोधी जातियों को एक करने की आवश्यकता का भी अनुभव किया।इस अनुभव के मूल में एक ऐसे सामान्य भक्ति मार्ग का विकास गर्भित था।जिससे परमात्मा की एकता के आधार पर मनुष्यों की एकता का प्रतिपादन हो सकता था और जिसका मूलाधार भारतीय अद्वैतवाद और मुसलमानी एकेश्वरवाद के सूक्ष्म भेद की ओर ध्यान नहीं दिया गया और दोनों के एक विचित्र मिश्रण के रूप में निर्गुण भक्ति मार्ग चल पड़ा।

रामानंद जी के 12 शिष्यों में से कुछ इस मार्ग के परावर्तन में प्रयुक्त हुई जिसमें कबीर प्रमुख थे शेष में सेना, धना, भवानंद, पीपा और रविदास थे परंतु उनका उतना प्रभाव न पड़ा जितना कबीर का नरर्हर्यानंद जी ने अपने शिष्य गोस्वामी तुलसीदास को प्रेरित करके उनके कर्तृत्व से सगुन रामभक्ति का एक और ही स्रोत प्रवाहित कराया ।रामानंद जी ने सबके लिए भक्ति का मार्ग खोलकर उनको प्रोस्ताहित किया नामदेव दर्जी ,रैदास चमार ,दादू धुनिया ,कबीर जुलाहाआदि समाज की निची श्रेणी के ही थे ,परंतु आज तक उनका नाम आदर से लिया जाता है ।वर्ण भेद से उत्पन्न उचता और नीचता को ही नहीं वर्ग भेद से उत्पन्न उचता और नीचता को भी दूर करने का इस निर्गुण भक्ति मे प्रयत्न किया। स्त्रियों का पद स्त्री होने के कारण नीचे न रह पाया । पुरुषों के ही समान वे भी भक्ति की अधिकारीनी हुई । रामानंद जी के शिष्यों में से दो स्त्रिया थी एक पद्मावती और दूसरी सुरसरी आगे चलकर सहजोबाई और दयाबाई भी भक्तसंतों में से हुई।स्त्रियों की स्वतंत्रता के परम विरोधी उनको घर की चहारदीवारी के अंदर ही कैद रखने के कट्टर पक्षपाती थे। ज्ञानी संतो ने स्त्री की जो निंदा की है ,वह दूसरी ही दृष्टी से है। कबीर भक्तिप्रवाह के प्रवर्तक हैं , परन्तुभक्त नामदेव इनसे भी पहले हो गये थे नामदेव का नाम कबीर ने शुक ,उद्धव ,शंकर आदि ज्ञानियों के साथ लिया गया –

Scanned with OKEN Scanner

" जागे सुक उद्धव अकूर हणवंत जागे लै लंगूर ।
संकर जागे चरन सेव ,कलि जागे नामा जैदेव ॥ "१

कबीर अवतारवाद तथा मूर्तिपूजा का विरोधी थे , तथापि हिंदुमत की कई बातें वे पूर्णतया मानते थे । मूर्ति में भगवान की मूर्ति को जो भोग लगाने कि प्रथा है ,उसकी वे इस तरह हँसी उडातें हैं -

" लाडू लावर लापसी पूजा चढ़े अपार ।
पूजि पुरारा ले चला दे मूरति के मुख छार । "२

भारतीय ज्ञान परंपराओं में गुरू शिष्य परंपरा का अपना अनूठा ही स्थान है।जो युगों युगों से भारत को ही नहीं पूरे विश्व को प्रकाशित करती रही हैं।गुरुकुल परंपरा में शिष्य गुरु के आज्ञानुसार ज्ञान की विभिन्न सरनियों का अध्ययन करते थे और जीवन के अलग अलग क्षेत्रों में अनुशासन का पालन करतें हुए जीवनयापन करते थे । इस परंपरा में विद्या का सम्मान होता था और ज्ञान को अनमोल धरोहर के रूप में देखा जाता था ।कबीर जी ने गुरु को अत्यधिक महत्व दिया है।गुरु के महत्त्व को रेखांकित करते हुए वो कहते हैं -

"जाका गुरु भी अंधला,चेला खरा निरंध।
अंधा अंधा ठेलियों, कूप पड़त।"३

अर्थात,कबीर कहते है,जिसका गुरु अंधा अर्थात ज्ञानहीन है ।जिसकी अपनी कोई चिंतन दृष्टि नहीं है और परंपरागत मान्यताओं तथा विचारों की सार्थकता को जांचने परखने की क्षमता नहीं है। ऐसे गुरु का अनुयायीतो निपट दृष्टिहीन होता हैं।मध्यकालीन समाज अज्ञानता के घने कोहरें से घिरा हुआ है। सच और झूठ का अंतर करना कठिन है। ऐसे में एक मात्र गुरु ही हैं जो अच्छे और बुरे के अंतर का ज्ञान दे सकते हैं।

गुरू शिष्य प्रणाली के रूप में ऋषि मुनियों ने खुले आसमान के नीचे घने वृक्षों की छाया में प्राकृतिक वातावरण के मध्य अपने शिष्यों कों आध्यात्मिक अनुभूतियों के दर्शन कराए हैं ।यहीं नहीं उन्होंने समस्त विधाओं का दान कर अपने शिष्यों को ज्ञान का आलोक प्रदान किया है । भारतीयों की यह ज्ञान परंपरा विश्व में अपने चरण पसार चुकी हैं।आज वैश्विक संस्कृति भारतीय संस्कृति की सराहना करते हुए,प्रकृति की ओर लौटने की बात करतीं हैं।विभिन्न दार्शनिकों ने प्रकृति के मध्य में शांत वातावरण में विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास को महत्वपूर्ण एवं उद्देश्यपूर्ण बताया हैं। अतः आज विश्व भारत की इस परंपरा का हृदय से स्वागत करता हैं,और कहता हैं कि भारतीयों की परंपराएं वैज्ञानिक दृष्टि से पूर्ण प्रासंगिक है ।

मध्यकालीन संत कबीर जी ने मनुष्य मनुष्य के बीच भेद करनेवाली जातिप्रथा का कठोरता के साथ विरोध किया है।उन्होंने सामाजिक अन्याय,धार्मिकता,अंधविश्वास और जातिवाद के खिलाफ आवाज उठाई हैं ।उनके संदेश में सबको एक सामान भाव और प्रेम से समाज को एक दृष्टि से देखने की प्रेरणा मिलती है।जातिवाद तथा भेदभाव ने समाज को खोखला कर दिया और इस वजह से मानवता कराह रहीं थी।उनके अनुसार ऊंचे कुल में जन्म लेने से कोई ऊंचा या श्रेष्ठ नहीं हो पाता है।मनुष्य अपने आचरण एवं सुंदर कर्मों से ऊंचा बनता हैं।सोने के कलश में मदिरा भरी हो तो वह निंदनीय हो जाता है -

"ऊंचे कुल का जनमियां,जो करनी ऊंच न होय।
सोवस कलस सुरै भरया,साधू निंदत सोई ।"४

भारतीय वैदिक परंपराएं अत्यधिक समुज्वल और प्राकृतिक रही हैं।बालक के मानसिक बौद्धिक,शारीरिक,सामाजिक,नैतिक,सांस्कृतिक,राजनीतिक विकास के लिए उसमें बाल्यकाल से ही जीवनमूल्यों का बीजारोपण किया जाता था।लेकिन अनेक स्थलों पर परंपरा के साथ साथ अंधविश्वास का भी आगमन होता चला जाता था,जिसे दूर करने के लिए सदैव ही साहित्य अग्रेसर रहा हैं। महाकवि कबीरदास जी ने अपनी सखियों के माध्यम से समाज को सुधारने और सही दिशा दिखाने की परंपरा का जो प्रवर्तन किया वह परंपरा के रूप में हिंदी साहित्य जगत के मूल में बस गया।

Scanned with OKEN Scanner

" जस काशी तस मगहर
ऊसर हृदय राम मर होई।"[५]

हिंदी साहित्य ज्ञान का वह संपूर्ण कल्पवृक्ष है, जिसका एक-एक पत्र नवीन कलम और भावनाओं से मंदिर है। हिंदी साहित्य अपने आप में कई कलाओं और विधाओं में समाया हुआ है। सात द्वीपों वाली यह पृथ्वी माता चार वेद ऋग्वेद,सामवेद अथर्ववेद और यजुर्वेद छह वेदांगो शिक्षा,कल्प, निरुक्त,व्याकरण और छंद ज्योतिष सहित धर्मशास्त्र मीमांसा और स्मृतियों मिलाकर चौदह विद्याओं से मंडित तथा ६४ कलाओं से सुशोभित हैं।महाकवि कबीरदास स्वयं ज्ञान को महत्त्व देते हैं।उनका मानना हैं कि,परमात्मा की प्राप्ति ज्ञान और प्रेम के आधार पर ही हो सकती हैं। वह कहते हैं कि -

"पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय,
ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय।"[६]

बड़ी-बड़ी पुस्तकें पढ़ कर संसार में कितने ही लोग मृत्यु के द्वार पहुंच गए, पर सभी विद्वान न हो सके। कबीर मानते हैं कि यदि कोई प्रेम या प्यार के केवल ढाई अक्षर ही अच्छी तरह पढ़ ले, तो वही सच्चा ज्ञानी होगा।इसी प्रकार एक स्थल पर कबीरदास ने ज्ञान के महत्व पर भी बल दिया हैं।

निष्कर्ष :

हम कह सकतें हैं कि, भारतीय ज्ञान परंपरा विशाल समुद्र की तरह है,जो निर्झरणी की भांति कहीं मंद कहीं तीव्र रफ्तार से बढ़ती हुई वर्तमान समय में हमारे समक्ष है।वैष्णव संप्रदाय में रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्य भारतीय संस्कृति की परंपरा में अनमोल धरोहर हैं।भारतीय ज्ञान परंपरा विकसित होकर भक्तिकाल में सर्वाधिक तीव्रता से अभिव्यक्त हुई है ।तुलसीदास एवं सूरदास जैसे कवियों ने रामचरितमानस जैसे महाकाव्य की रचना कर उसे जन मानसं तक पहुंचाया है। भारतेंदु जी की एक प्रसिद्ध उक्ति है,कोस कोस पर पानी बदले ,चार कोस पर वाणी। ऐसी संस्कृति जहां अनेक भाषाएं उनकी संस्कृति में इतना अलगाव होने पर भी ज्ञान ने एक मोतियों की माला की तरह पिरो रखा हैं ।इस प्रकार हिंदी साहित्य भारतीय ज्ञान परंपरा का एक मुख्य स्त्रोत हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

१.कबीर ग्रंथावली - डॉ .श्यामसुंदर दास - प्रकाशन संस्थान ,नई दिल्ली पृ. १८

२.पृ.४०

३.मध्ययुगीन काव्य - हिंदी अध्ययन मंडल , सावित्रीबाई फुले पुणे विश्विद्यालय , पुणे -प्रो.डॉ .सदानंद भोमले -पृ . १७

४.कबीर वचनामृत -विजयेंद्र स्नातक , डॉ .रमेशचंद्र मिश्र - नंशनल पब्लिकेशन हाउस, नई दिल्ली , छठा संस्करण -२००५ पृ .१५३

५.कबीर ग्रंथावली - डॉ.श्याम सुंदरदास -नागरी प्रचारिणी सभा , वाराणसी , पृ.४६

Scanned with OKEN Scanner

Ahmednagar Jilha Maratha Vidya Prasarak Samaja's

New Arts, Commerce & Science College, Parner

Dist - Ahilyanagar



National Conference on

Indian Knowledge System : Nature & Scope

Wednesday 5th March, 2025

- Organized By -

IQAC and Faculty of Humanities & Commerce

New Arts, Commerce & Science College, Parner

Dist - Ahilyanagar

Scanned with OKEN Scanner

ग्रामदेवता मेसाई देवी

डॉ. गोरक्षनाथ किसन घोलप
सहाय्यक प्राध्यापक, मराठी विभाग
श्री मुलिका देवी महाविद्यालय, निघोज
ता. पारनेर जि. अहिल्यानगर पिन-४१४३०६
भ्रमणध्वनी – ९८८१८८४२६८
ई-मेल- gorakgholap@gmail.com

पुणे जिल्ह्यातील शिरूर तालुक्यातील कान्हूर मेसाई येथील लोकांची ग्रामदेवता मेसाई देवी आहे. पुणे ते कान्हूर मेसाई हे अंतर साधारणतः ५६ किलोमीटर इतके आहे. लोकांची ग्रामदेवता मेसाई देवी प्रसिद्ध आहे. महाराष्ट्रातील विविध भागातून भाविक भक्त देवदर्शनासाठी येतात. मेसाई देवी ही कुलदेवता आहे. "मेसाई देवीच्या मंदिराची स्थापना इ. स. १६०० च्या आसपास झालेली आहे. येथे भैरवनाथ, लक्ष्मी माता, गणपती, महादेव, विठोबा, शनि या देव-देवतांची मंदिरे आहेत. येथील स्त्री-पुरुषांची देवीवर खूप श्रद्धा आहे."[१] गावाच्या बाहेर स्मशानभूमीतील हे मेसाई माता मंदिर आहे. गावकऱ्यांनी वर्गणीतून या मंदिराचा जिर्णोद्धार केलेला आहे. देवीच्या उभ्या दोन मूर्ती असून पहिल्या मूर्तीचा मुकुट चांदीत आहे व हातात त्रिशूळ आहे. देवीची मूर्ती आदिमाया शक्ती आहे. लोकांच्या मते, देवी नवसाला पावते. कान्हूर मेसाई गावाच्या पूर्वेस मोराची चिंचोली, दक्षिणेस हिवरे, धामारी पश्चिमेस केंदुर पावळ, उत्तरेस कवठे, सैन्ये व पाच पिराचे वडगाव ही गावे आहेत.

ग्रामदैवते लोककला व लोकगीते यांचा समावेश प्रामुख्याने लोकसाहित्यात होतो. लोकसाहित्यात लोकसंस्कृतीला अनन्यसाधारण महत्त्व आहे. भारतीय संस्कृती पवित्र आहे. नैतिक मूल्ये सण, उत्सव, विधी, कुलाचार, लोककला, विविध चालीरीती, परंपरा, रीतीरिवाज त्याचप्रमाणे विविध जाती जमातीतील लोक एकत्र येऊन धार्मिक उत्सव साजरे करतात. लोकसंस्कृती बद्दल गोमे या पाश्चात्य पंडिताने असे म्हटले आहे की, "लोकसंस्कृती हा इतिहास नव्हे इतिहासाचा तो स्वतंत्र विषय आहे. त्याचे स्वतःचे असे काही नियम आणि सिद्धांत आहेत."[२]

ज्ञानप्राप्ती :

Scanned with OKEN Scanner

लोकसंस्कृतीत प्रथा परंपरेला महत्त्वाचे स्थान आहे. यात्रोत्सवाच्या वेळी विविध लोककला सादर होतात. त्यातून समाज जागृती होते. लोकांना यातून ज्ञानप्राप्ती होते. प्रथा, परंपरेची जपणूक होते. लोकसाहित्याचा ऱ्हास होत नाही. लोकांमध्ये शिक्षणाचा अभाव आहे. ग्रामदैवतांची निर्मिती पूर्वी भय व कल्पनेतून झालेली आहे. या अभ्यासातून संस्कृती, ग्रामदैवते यातून ज्ञान प्राप्त होते. यात क्षेत्रीय संशोधन पद्धतीचा वापर केलेला आहे. लोक रितीरिवाज, प्रथा, परंपरेनुसार ग्रामदेवतांच्या यात्रा भरवितात. विधी, उपासना, पूजा- अर्चा, आरती, ग्रंथ वाचन करतात. लोकसंस्कृतीत लोकांवर संस्कार घडतात. या शोधलेखात प्रामुख्याने ग्रामदेवता मेसाई देवी वरील अभ्यासातून समाजासाठी मोलाचे ज्ञान प्राप्त झालेले आहे.

भारतीय ज्ञानप्रणाली - स्वरूप:

भारतीय ज्ञानपरंपरेत जटिल, विस्तृत आणि गहन ज्ञान समूह असतो. ही परंपरा साहित्य, तत्त्वज्ञान, विज्ञान, धर्म, योग, आयुर्वेद, ज्योतिष, गणित, स्थापत्य कला आणि अध्यात्मिक तत्त्वज्ञान यांचा समावेश करते. भारतीय परंपरेत ज्ञानाचे वर्गीकरण अपरा विद्या आणि परा विद्या असे केले आहे.

भारतीय ज्ञान प्रणाली- व्याप्ती:

भारतीय ज्ञान प्रणाली अत्यंत व्यापक व सर्वसमावेशक आहे. त्यात विज्ञान आणि तंत्रज्ञान, आयुर्वेद आणि वैद्यकशास्त्र, योग आणि ध्यान, तत्त्वज्ञान आणि धर्म, कला आणि संगीत, भूगोल आणि वास्तुशास्त्र, नितीशास्त्र आणि राजकारण, सामाजिक विज्ञान, पर्यावरण आणि निसर्ग यांचा समावेश आहे. याचा प्रभाव आधुनिक काळातही दिसून येतो.

शोध हेतू / उद्देश:

१. पुणे जिल्ह्यातील ग्रामदेवता मेसाई व या ग्रामदेवतेचे रितीरिवाज, परंपरा, उपासनापद्धती या बाबींचा शोध घेणे.

२. गावातील लोकांच्या ग्रामदेवतेसंबंधी लोकभावना, लोकश्रद्धा, लोकरुढी अशा बाबींचा शोध घेणे.

३. ग्रामदेवतेवर लोकांनी रचलेल्या आख्यायिकांचा शोध घेणे.

आख्यायिका:

Scanned with OKEN Scanner

आख्यायिका म्हणजे दंतकथा. विविध विचारवंतांनी आख्यायिकेच्या व्याख्या केलेल्या आहेत. "लोककथेचा दैवत कथेसारखाच एक संपन्न पण बराच निराळ्या स्वरूपाचा विभाग दंतकथांचा असतो. दंतकथा म्हणजे ऐतिहासिक सत्य घटना तसेच प्रसिद्ध दिवंगत व्यक्ती अथवा निरनिराळी महत्त्वपूर्ण स्थले, याबद्दलच्या मौखिक परंपरेने रूढ झालेल्या कथा होत इंग्रजीत याला (Legends) असे नाव असून यांस संस्कृतमध्ये आख्यायिका व हिंदीत अवदान असे म्हणतात."[१].

आख्यायिका: मेसाई देवी मंदिर:

मेसाई देवीच्या मूर्ती स्थापनेमागील आख्यायिका प्रसिद्ध आहे. कोकणातील एक जोडपे कान्हूर मेसाई या गावी बैलगाडीतून येऊन कोळसे लोहाराला विकायचे. एके दिवशी त्यांची लहान मुलगी येथे मृत्यूमुखी पडली. नंतर दळवी बाबांच्या स्वप्नात जाऊन माझ्या अंगावर पाणी घाल आणि माझी सेवा कर असे सांगितले. त्यानंतर दळवी बाबांनी प्रत्यक्ष येऊन देवीची सेवा केली. देवी त्यांना प्रसन्न झाली. देवीने त्यांना स्वप्नात दृष्टांत दिला होता. ही सर्व हकीगत दळवी बाबांनी गावातील लोकांना सांगितली. देवीची पूजा अर्चा सुरू झाली. मेसाई देवीचे हे स्वयंभू स्थान आहे.

अशी आख्यायिका श्रीमती कांताबाई उबाळे (पुजारी) यांनी दिली आहे.

उत्सव, विधी, उपासनापद्धती:

चैत्र पौर्णिमेस मेसाई देवीची यात्रा चार दिवस भरते. या यात्रेत बैलगाडा शर्यती, कुस्त्या, लोककला, भारुडे आणि तमाशाचा कार्यक्रम असतो. देवीला गोड जेवणाचा पुरणपोळीचा नैवेद्य देतात. यात्रेमध्ये विविध प्रकारची दुकाने थाटलेली असतात. श्रद्धा, रुढी, रितीरिवाज आणि परंपरेनुसार देवीच्या आवाराबाहेर बोकडाचा बळी देण्याची प्रथा आहे. पूर्वी देवीला रेड्याचा बळी दिला जायचा अशी प्रथा होती. ती प्रथा आता बंद केली आहे. या ठिकाणी मेसाई देवीचा छबिना काढतात. मंदिराजवळून देवीचा छबिना कवठे या गावात जातो. देवीच्या काठीची मिरवणूक दुसऱ्या दिवशी असते. तिसऱ्या दिवशी पालखी मिरवणूक काढतात. श्रावण महिन्यात दररोज हरी किर्तन चालते. याच महिन्यात पालखी मिरवणूक काढतात. नवरात्र उत्सवात नऊ दिवस - रात्र दीपमाळ तेवत ठेवतात. दहाव्या दिवशी होमाचा कार्यक्रम असतो. या ठिकाणी परिसरातून विविध गायक येऊन देवीची गीते गातात. मुंबई, पुणे, नाशिक, सातारा व सांगली या ठिकाणाहून यात्रेकरू येऊन यात्रेची शोभा वाढवितात.

Scanned with OKEN Scanner

मेसाई देवीची दररोज सकाळी ७:३० वाजता पूजा-अर्चा करतात. भोजन आरती सकाळी होते. संध्याकाळी ६:३० वाजता नैवेद्य आरती होते. रितीरिवाजाप्रमाणे पूजा अर्चा केल्यानंतर प्रसाद वाटप होते. नवरात्रात डाळ-भात, मेथीची भाजी असा महाप्रसाद असतो. देवीस नैवेद्य म्हणून मेथी, बाजरीची भाकरी, ओल्या नारळाची खीर असते, त्याचप्रमाणे बर्फी, लाडू आणि सुवासिनींची पुरणपोळी असते. कांताबाई उबाळे (पुजारी) यांच्यामार्फत फक्त देवीची पूजा होते.

दसऱ्याला देवीची घटस्थापना होते. दहा दिवस सप्ताह, कीर्तन, हरिपाठ असे विविध समाजप्रबोधन पर कार्यक्रम असतात. पहाटे ५ वाजता देवीला स्नान घालतात. देवीचा मळवट भरून चोळीपातळ, शेंदूर चढवितात. सुवासिनी देवीची खणा- नारळाने ओटी भरतात. देवी गरिबांची वाली आहे. अशी लोकांची देवी वरील श्रद्धा आहे. कुठल्याही शुभकार्याची सुरुवात देवीच्या दर्शनाने करतात. स्त्री-पुरुष देवीला नवस बोलतात. या ठिकाणी पशूपक्ष्यांचा बळी देतात. ग्रामदेवतेच्या उपासनेत अनेक प्रथा परंपराही प्रचलित आहेत. "कुटुंबातील व्यक्ती आजारी असेल तर स्थानिक लोकदेवतेला आजार बरा करण्याविषयी नवस बोलले जातात. आजारी व्यक्तीवरून पाच प्रकारचे धान्य, रुपया ओवाळून लोक देवतेला वाहतात. यामुळे व्यक्तीचा आजार दूर होतो. असा समज आहे. काही जातीजमातीत लोकदेवतेच्या उपासनेत पाठीला गळ टोचून घेणे, बगाड उचलणे, बारा गाड्या ओढणे अशा प्रथा प्रचलित आहेत. पारधी समाजात मरी आईच्या उपासनेत 'टोणगा मारण्या' च्या विधिला विशेष महत्त्व आहे."[४]

लोकदेवतेस काही प्रथा, विधी केल्या तर माणसांचा आजार बरा होतो. असा समज लोकांचा झालेला आहे. आपल्याला सुख समृद्धी लाभावी. अनेक अडचणीतून मुक्तता व्हावी. यासाठी आपल्या रक्षणकर्ता करता ग्रामदेवतांना लोक नवस बोलतात.

उत्सव, विधी, उपासनापद्धती या संदर्भात माहिती श्री बबन भिकू ननवरे व श्री पांडुरंग महादू उबाळे यांनी दिली आहे.

ग्रामदेवता मेसाईदेवी वरील गीत:

चंद्र पुनवेचा दिसतो नवा मेसा तुझ्या कळसाला लावते दिवा गं
मेसाबाईला जाईन हळद-कुंकू वाहिन गं
चंद्र पुनवेचा दिसतो नवा मेसा तुझ्या कळसाला लावते दिवा गं मेसाबाईला जाईन लिंब नारळ वाहीन गं

Scanned with OKEN Scanner

चंद्र पुनवेचा दिसतो नवा मेसा तुझ्या कळसाला लावते दिवा गं मेसाबाईला जाईन चौळी पातळ वाहीन गं

चंद्र पुनवेचा दिसतो नवा मेसा तुझ्या कळसाला लावते दिवा गं

मेसाबाईला जाईन हार तुरं वाहीन गं

चंद्र पुनवेचा दिसतो नवा मेसा तुझ्या कळसाला लावते दिवा गं

मेसाबाईला जाईन मुकुटबाई वाहीन गं

चंद्र पुनवेचा दिसतो नवा मेसा तुझ्या कळसाला लावते दिवा गं

मेसाबाईला जाईन मंगळसूत्र वाहीन गं

चंद्र पुनवेचा दिसतो नवा मेसा तुझ्या कळसाला लावते दिवा गं

सौ. शोभाताई उबाळे, कान्हूर मेसाई ता. शिरूर जि. पुणे.

लोकश्रद्धेमागील कारणे:

जीवन जगत असताना आपले वाईट होऊ नये. जीवनात सुख, समाधान, शांती, ऐश्वर्य प्राप्त व्हावे. गावावर संकट येऊ नये. देवतेचा कोप होऊ नये. एखाद्या शुभकार्याची सुरुवात करताना आपली पाठीराखा देवताच आहे. दैनंदिन जीवनातील कामाची सुरुवात करताना प्रथम देवदर्शन घेतात. शेती, शिवार, जनावरे, रोगराई पासून संरक्षण करणाऱ्या देवता असतात. असा लोकांचा समज आहे. यासाठी लोकांची देवतावर श्रद्धा असलेली दिसून येते.

समाजात एक शक्ती आहे. त्या शक्तीला लोकांनी देवत्व बहाल केले आहे. भय व कल्पनेतून देवाची निर्मिती झाली आहे. शिक्षणाच्या अभावामुळे समाजात अंधश्रद्धाही वाढीस लागली आहे. उदा. भविष्यवाणी करणे, अंगात वारे येणे, नवस बोलणे, त्याचप्रमाणे सारखे देव देव करतही बसू नये.

निष्कर्ष:

१. मेसाई देवी ही ग्रामदेवता, लोकदेवता व कुलदेवताही आहे.

२. मेसाई ह्या ग्रामदेवतेची निर्मिती इ.स. १६०० च्या आसपास म्हणजेच ८०० वर्षांपूर्वीची आहे.

३. आख्यायिकेमध्ये प्राचीनता, अतिशयोक्तपणाचे वर्णन, काल्पनिकता येत असल्याने सर्व वास्तवावर आधारित नसली तरी आख्यायिकेत सत्याचा अंश आहे. यातून लोकांच्या धर्म भावना जागृत होतात.

Scanned with OKEN Scanner

४. लोकसंस्कृतीने प्रथा, परंपरेची जपणूक केली आहे. लोक ग्रामदेवता व कुलदेवता मेसाई देवीचे धार्मिक विधी, उपासना, पूजा - अर्चा, कुळाचार, यात्रा व लोककला मंदिर परिसरातच करतात.

५. विज्ञानयुगात देखील बहुतांश स्त्री-पुरुषांची मेसाई या ग्रामदेवतेवर श्रद्धा असलेली दिसून येते.

समारोप:

या शोधलेखात भारतीय ज्ञान प्रणाली स्वरूप आणि व्याप्ती याबद्दल थोडक्यात ओळख करून दिली आहे. त्याचप्रमाणे मेसाई ग्रामदेवता व कुलदेवतेचे स्थान, क्षेत्र याविषयी माहिती आपण पाहिली. महाराष्ट्रातील विशिष्ट लोकांची मेसाई देवी ही कुलदेवता आहे. गावातील व परिसरातील स्त्री-पुरुष देवतेच्या भक्तीशी समरस असलेले दिसतात. मेसाई देवीविषयी आख्यायिका या मौखिक परंपरेचा शोध घेतला आहे. तसेच मेसाई देवीवरील गीताचाही शोध घेतला आहे. त्याचबरोबर उत्सव, विधी, उपासना, पूजा- अर्चा, रुढी, परंपरा,श्रद्धा, अंधश्रद्धा, श्रद्धेमागील कारणे, निष्कर्ष इत्यादींचा शोध घेतला आहे. त्याचबरोबर या ग्रामदेवतेच्या शोधलेखातून समाजास कशाप्रकारे ज्ञान प्राप्त झालेले आहे हे दिसून येते.

संदर्भ:

१. दि.१०/८/२०१५ रोजी श्री. पांडुरंग महादू उबाळे यांची घेतलेली मुलाखत.

२. भोसले द. ता., लोकसंस्कृती: स्वरूप आणि विशेष, पद्मगंधा प्रकाशन, पुणे, प्रथमावृत्ती, मे २००४, पृ.१६

३. दांडेकर मालती, लोककथा- कल्पकता, वरदा बुक्स, पुणे, पहिली आवृत्ती, जानेवारी १९८२, पृ.२१८

४. व्यवहारे शरद, लोकसंस्कृतीचा अंत:प्रवाह, प्रतिमा प्रकाशन, पुणे, पहिली आवृत्ती १५ जून १९९९, पृ. २१

******

Scanned with OKEN Scanner

Ahmednagar Jilha Maratha Vidya Prasarak Samaj's

New Arts, Commerce and Science College,

Parner Dist. Ahilyanagar

ACCREDITED WITH GRADE A++ NAAC

National Conference on

"Indian Knowledge System : Nature and Scope"

Wednesday 5th March, 2025

CERTIFICATE

This is to certify that, Mr./Ms./Prof./Dr. Gorakshanath kisan Gholap

of Shri Mulikadevi M. Nighoj actively participated/presented a research paper entitled

Village deity Mesai Devi In the National Conference on **"Indian Knowledge System : Nature and Scope"** organised by Faculty of Humanities & commerce, and IQAC, New Arts, Commerce and Science College, Parner Dist. Ahilyanagar.

Dr. Vijaykumar Raut
Co-ordinator

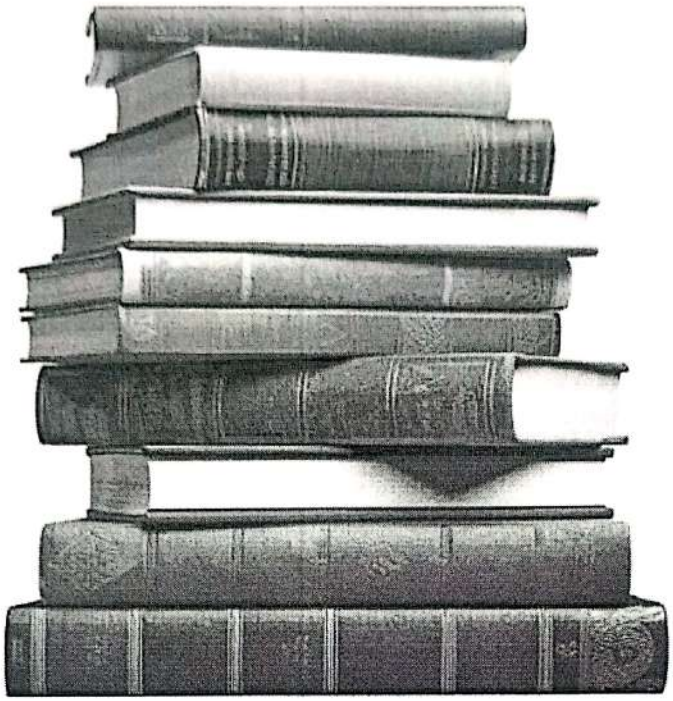
Dr. Rangnath Aher

Scanned with OKEN Scanner

Ahmednagar Jilha Maratha Vidya Prasarak Samaja's

New Arts, Commerce & Science College, Parner

Dist - Ahilyanagar



National Conference on

Indian Knowledge System : Nature & Scope

Wednesday 5th March, 2025

- Organized By -

IQAC and Faculty of Humanities & Commerce

New Arts, Commerce & Science College, Parner

Dist - Ahilyanagar

Scanned with OKEN Scanner

32.	Prof. Atkar Priyanka Ranganath	Indian Knowledge System Challenges and its Application in Higher Education	189
33.	Miss Yewale D S	Bridging The Gap: AI Applications in Vedic Mathematics and Modern Computing	191
34.	Mr.Thange Abhijit Sampat	Machine Learning and Ayurveda: AI in Personalized Healthcare	200
35.	Mr. Ashok Navnath Borude	Indian Knowledge System: Nature and Scope	209
36.	Dr. Ashok Vitthal Thokal	Application of Indian Knowledge System For Domestic and Agriculture Water Supply System. A Case Study of Kamargaon Village of Ahilyanagar Tehsil District Ahilyanagar (M.S.)	216
37.	Prof. Joshi Priya G	Machine Learning and Artificial Intelligence: Key Players in Cyber Threat Detection	217
38.	Mr. Abhishek Baba Borude	AI Knowledge System Challenges and its Application in Higher Education	234
39.	Mr. Omkar Ayyar Datta	Teaching Historical Civilizations in Higher Education	237
40.	Mrs. Dalavi Shrutika Annasaheb	Introduction to Indian Universities in IKS	239
41.	Mrs. Navale Monika Santosh	Contribution of Women Educators in IKS	245
42.	Prof. Mhaske Jyotsna Dattatraya	Environmental and Sustainable Practises in Indian Knowledge System	254
43.	Dr. Sanjay Mohan Gaikwad	Indian Sports Culture - A Journey	260
44.	Prof. Dinesh R.Ghuge	Role of Entrepreneurship in Economic Development	264
45.	Smt. Sharmishtha Balkrishna Borude & Dr. Sandip Prabhakar Khedkar	Language Literature and Culture in Indian Knowledge System	268
46.	Prof. Sandeep Kisan Getam	Role of Banking Sector in The Development of Rural Area	275
47.	Mr.Devendra Mahadev Desai & Mr.Ravikant S Shitole	Conceptual Foundations of Indian Knowledge System: An Interdisciplinary Exploration of Philosophical, Scientific, and Cultural Perspectives.	284
48.	Mr.Suraj G Datkhile & Mr.Shatrughana B.Sable	Revisiting Ancient Indian Educational Institutions: Historical Significance and Contemporary Relevance Under NEP 2020	292
49.	Miss.Saraswati Devhare & Mr.Ravikant S Shitole & Mr.Dhananjay B. Naik	Mainstreaming Indian Knowledge System in School Curriculum: Opportunities and Challenges Under NEP 2020	300
50.	Mrs. Shraddha Sudhir Naik & Dr. Kishorkumar G. Gaikawad	Integration of Indian Knowledge System with Modern Education and Research: A Critical Analysis	309
51.	Mr. Virendra Shankar Dhanashetti	Indian Knowledge System and Ancient Indian Political Thoughts in Contemporary Context	315
52.	Dr. Raghunath E Najan	A Study of Crop Diversification: Comparative Analysis	316
53.	Mr. Patekar Anand Suresh & Ms. Swati Vitthal More	Retellings of the Ramayana in Indian English Literature and Cinema: A Study of Adaptation	323
54.	Mrs. Bhagwat Archana Dinkar	The Poetics of Indigenous Epics and Heroic Narratives	329
55.	Dr. Sunil Parasram Adhav	Eco-Consciousness in Indian Thought: Analyzing Indian Knowledge Traditions in Contemporary Literature	341
56.	Mr. Vijay Prakash Khandizod	Indian Mythology Reflected In Pre-Independence Indian English Literature	349
57.	Dr. Ashwini Sandip Ugale	Integrating Indian Knowledge System With Contemporary Economics and Commerce	353
58.	Mrs. Swapnali Shivaji Phapale & Dr. Dattatray Sheshrao Ghungarde	Indigenous Water Management Practices in India: A Geographical Perspective	361
59.	Mrs. Patil Suraksha Sanjay	The Timeless Wisdom of Meditation in The Indian Knowledge System	368
60.	Prof. Torsha Ghosh & Prof. Shikha Sharma	Integration of Indian Knowledge System With Modern Education and Research	376
61.	Dr. Ranjana Kadu	Environmental and Sustainable Practices in Indian Knowledge Systems	377
62.	Prof. Nitin Sambhaji Nipunge	Dharma, Rajadharma and Modern Governance: Revisiting The Indian Knowledge System in Political Thought	384
63.	Mrs. Pawar Shubhangi Raosaheb	Indian Knowledge System and National Education Policy	392
64.	Mr. Gite Hrishikesh Kanhu & Miss. Gadhave Anuradha Atmaram	From Scrolls to Science: The Evolution of Ayurvedic Knowledge	400

Scanned with OKEN Scanner

Retellings of the *Ramayana* in Indian English Literature and Cinema: A Study of Adaptation

Mr. Patekar Anand Suresh, Ms. Swati Vitthal More

Asst. Professor, Department of English,

Shri Mulikadevi Mahavidyalaya, Nighoj

Tal. Parner, Dist. A'Nagar.

Abstract

The fundamental principle of inclusion of IKS is a rootedness and pride in India, and its rich, diverse, ancient and modern culture and knowledge system and traditions. The Ramayana, one of India's most revered and ancient epics, has experienced numerous retellings and reinterpretations across various mediums, including literature and cinema, in modern times. These adaptations, particularly within the context of Indian English literature and films, often serve as a mirror to the changing socio-political climate, evolving gender perspectives, and philosophical inquiries of contemporary society, while still retaining the core essence of the original narrative by Valmiki. The Ramayana, with its complex characters and themes of duty, righteousness, and morality, provides a fertile ground for the exploration of modern-day issues, allowing for both traditional reverence and innovative reinterpretation.

This paper aims to explore the transformation of the Ramayana through selected Indian English novels and cinematic adaptations, analyzing how these retellings engage with both traditional and modern values, as well as how they reflect the cultural and ideological shifts in contemporary India. The study will delve into the ways in which these adaptations challenge, critique, and expand upon the classical themes of the Ramayana while offering fresh perspectives on its characters, especially the figure of Sita, whose story has often been viewed through the lens of patriarchy and gender subjugation. By examining works such as R.K. Narayan's *The Ramayana*, which brings a unique, simplified, and humanized version of the epic to the modern reader, and Arshia Sattar's *Lost Loves: Exploring Rama's Anguish*, which deeply interrogates Rama's emotional and psychological journey,

Scanned with OKEN Scanner

this paper aims to underscore how the Ramayana is revisited and reinterpreted to reflect contemporary concerns.

In addition, cinematic adaptations such as *Sita Sings the Blues*, a unique animated retelling by Nina Paley, and Mani Ratnam's *Raavan*, which presents a nuanced and complex portrayal of Ravana's character, will be explored to highlight how visual media plays a significant role in transforming and contemporizing the epic. These films engage with themes of morality, justice, and the intersection of personal desires with societal obligations, bringing forth a modern understanding of these ancient texts. The visual medium's ability to reinterpret and challenge traditional narratives about heroes and villains adds a new layer to the story of the Ramayana, allowing for greater exploration of its moral ambiguities.

Keywords: Ramayana, Mythology, Mythology, Feminist Interpretation, Cinematic Adaptation.

1. Introduction

The Ramayana, attributed to the sage Valmiki, has been a cornerstone of Indian culture and philosophy for centuries, profoundly influencing religious practices, ethical teachings, and artistic expressions across generations. This epic, which centers on the story of Rama's journey of righteousness (dharma), his heroic feats, and the triumph of good over evil, has been retold and reinterpreted in numerous ways, adapting to the changing cultural, social, and political contexts of the times. While the traditional versions of the *Ramayana* often focus on Rama's unwavering commitment to dharma, his heroism, and the ideals of kingship and family, contemporary retellings in Indian English literature and cinema have increasingly sought to offer alternative perspectives, emphasizing the voices of other significant characters.

In particular, modern adaptations give prominence to figures who have traditionally been marginalized or whose roles have often been overshadowed by Rama's centrality, such as Sita, Ravana, and other less-privileged characters. These retellings shift the focus from a singular heroic narrative to a more inclusive exploration of human emotions, ethical dilemmas, and complex moral questions. This paper aims to explore how Indian English literature and cinema engage with the Ramayana, reinterpreting it to resonate with contemporary sensibilities. It will examine how modern writers and filmmakers employ new narrative techniques to reshape the traditional story, often through the lens of psychological depth, gender analysis, and socio-political critique.

Scanned with OKEN Scanner

A particular emphasis will be placed on the ideological shifts that characterize these reinterpretations. For instance, Sita's role, often viewed through the lens of passive devotion and suffering in traditional versions, is reimagined in contemporary works as a more independent, self-aware figure who challenges patriarchal norms. Similarly, Ravana, traditionally depicted as the antagonist, is sometimes presented as a complex character embodying rebellion, intellect, and nuanced morality. These shifts reflect broader societal changes, such as the rise of feminist discourse, the questioning of traditional hierarchies, and a critical rethinking of power structures.

The paper will also explore thematic concerns such as duty (dharma), justice, love, and sacrifice in modern retellings, which are often examined through a more pluralistic, contextually sensitive lens. The study will analyze how filmmakers and authors adapt the Ramayana to address contemporary issues, such as gender equality, the complexity of moral choices, and the exploration of identity and agency. Through the lens of literary and cinematic works, this paper will offer an in-depth analysis of how the Ramayana continues to evolve and remain relevant in today's world, while retaining its core narrative.

Through examining selected Indian English novels, such as R.K. Narayan's The Ramayana, Arshia Sattar's Lost Loves: Exploring Rama's Anguish, and various cinematic adaptations, this study aims to uncover how the epic's narrative is shaped by changing ideologies, narrative forms, and cultural concerns. The paper will also look at how these reinterpretations challenge the traditional power dynamics between characters, offering new insights into the complex relationships between divine and human, male and female, and good and evil. In doing so, it will highlight the transformative power of the Ramayana as it navigates the intersection of tradition and modernity, offering a fresh perspective on one of the most enduring epics in world literature.

2. The ***Ramayana*** in Indian English Literature

2.1 R.K. Narayan's **The Ramayana**

R.K. Narayan's prose adaptation (*The Ramayana*, 1972) presents the epic in a lucid, accessible style, preserving its mythological grandeur while making it relatable to modern readers. Narayan's retelling remains largely faithful to Valmiki's version but simplifies complex narratives, focusing on Rama as an ideal ruler and Sita's unwavering devotion. His work serves as an introductory text for global audiences unfamiliar with Indian epics (Narayan 45).

Scanned with OKEN Scanner

2.2 ArshiaSattar's **Lost Loves: Exploring Rama's Anguish**

ArshiaSattar's *Lost Loves* (2011) offers a deeply introspective take on Rama's character, emphasizing his emotional turmoil and moral dilemmas. Unlike traditional portrayals that celebrate his divine status, Sattar's work humanizes Rama, highlighting his internal struggles (Sattar 112). This psychological exploration aligns with contemporary feminist and existential readings of the *Ramayana*.

2.3 Chitra Banerjee Divakaruni's **The Forest of Enchantments**

Divakaruni's *The Forest of Enchantments* (2019) reimagines the *Ramayana* from Sita's perspective, presenting her not just as a dutiful wife but as a strong, independent thinker. The novel critiques patriarchal interpretations of the epic, giving voice to Sita's desires, sacrifices, and resistance (Divakaruni 78). Such retellings challenge traditional notions of dharma and highlight evolving gender narratives.

3. Cinematic Adaptations of the ***Ramayana***

3.1 **Sita Sings the Blues** *(2008) – Nina Paley*

Nina Paley's animated film *Sita Sings the Blues* offers a satirical, feminist retelling of the *Ramayana*. Blending traditional shadow puppetry with jazz music and contemporary humor, the film questions the treatment of Sita in the epic. Paley juxtaposes Sita's story with her personal experiences, making the *Ramayana* a lens to explore modern relationships and gender roles (Paley 24).

3.2 **Raavan** *(2010) – Mani Ratnam*

Mani Ratnam's *Raavan* reinterprets the epic through the perspective of the antagonist, suggesting that Ravana (played by Abhishek Bachchan) may not be the villain he is traditionally portrayed as. The film challenges black-and-white moral binaries, portraying Ravana as a complex, tragic hero (Rajadhyaksha 92). This shift in perspective aligns with subaltern and postcolonial critiques of hegemonic narratives.

3.3 **Adipurush** *(2023) – Om Raut*

Adipurush (2023) attempts a grand, mythological retelling but faces criticism for its digital aesthetics and deviation from classical depictions. Unlike earlier adaptations that focus on nuanced storytelling, *Adipurush* prioritizes spectacle over substance, sparking debates on authenticity in modern mythological cinema (Raut 115).

Scanned with OKEN Scanner

4. Comparative Analysis: Literature vs. Cinema

While literary retellings of the *Ramayana* often provide psychological depth and character-driven narratives, cinematic adaptations focus on visual spectacle, music, and dramatization. Literature allows for introspective reinterpretations, as seen in Divakaruni's feminist perspective, whereas films like *Raavan* rely on visual storytelling to subvert traditional hero-villain dichotomies.

Moreover, literary retellings can afford to be subversive in ways mainstream cinema often cannot, given the constraints of commercial filmmaking and audience expectations. For instance, Paley's *Sita Sings the Blues* faced backlash from conservative groups, reflecting the tensions between artistic freedom and religious sentiment (Chakrabarti 136).

5. Conclusion

The *Ramayana* remains a dynamic narrative, constantly evolving through literature and cinema. Indian English writers reinterpret the epic through psychological, feminist, and existential lenses, while filmmakers experiment with visual storytelling and character complexities. These adaptations ensure the *Ramayana* remains relevant to contemporary audiences, bridging tradition and modernity.

Future research could explore regional cinematic adaptations or compare how global literature and films engage with Indian mythology. Understanding these reinterpretations provides valuable insights into cultural transformations and narrative resilience.

Works Cited

Books and Articles on Literature:

1. Narayan, R.K. *The Ramayana*. Penguin Books, 1972.
2. Sattar, Arshia. *Lost Loves: Exploring Rama's Anguish*. Penguin Books India, 2015.
3. Ghosh, S. (editor). *The Ramayana: A Critical Edition*. Oxford University Press, 2016.
4. Ramanujan, A.K. "Three Hundred Ramayanas: Five Examples and Three Thoughts on Translation." *The Ramayana: A Comparative Study*, edited by K.K. Aziz, Cambridge University Press, 1991, pp. 1-20.
5. Langer, Emily. *Reinterpreting the Ramayana in Contemporary Indian Fiction*. Routledge, 2018.
6. Desai, Kiran. *The Ramayana and Contemporary Literature: A Feminist Reinterpretation*. Women's Press, 200.

Scanned with OKEN Scanner

7. Chakrabarti, Sudeep. *Myth and Modernity: The Ramayana in Contemporary Media*. Oxford University Press, 2020.
8. Divakaruni, Chitra Banerjee. *The Forest of Enchantments*. HarperCollins India, 2019.
9. Rajadhyaksha, Ashish. *Indian Cinema and Mythological Adaptations*. Routledge, 2015.
10. Raut, Om.*Adipurush: Myth, Cinema, and Digital Aesthetics*. Bloomsbury India, 2023.

Books and Articles on Cinema and Film Studies:

1. Paley, Nina. *Sita Sings the Blues: A New Animated Retelling of the Ramayana*. 2008.
2. Ratnam, Mani. *Raavan: A Cinematic Exploration of the Ramayana*. Shree Productions, 2010.
3. Bajaj, Rupa. "The Reimagining of the Ramayana in Modern Cinema." *Cinematic Reinterpretations of Indian Epics*, edited by Nitin Rao, Sage Publications, 2017, pp. 99-115.
4. Mankekar, Purnima. *Unsettling the Ramayana: Indian Cinema's Engagement with Mythology*. Oxford University Press, 2015.
5. Censorship, Identity, and Myth: *A Study of the Ramayana Adaptations in Popular Indian Cinema*. Cambridge Scholars Publishing, 2014.
6. Ramaswamy, Sumathi. "Transcending the Epic: Gender and Political Imaginations in Contemporary Ramayana Films." *The Indian Journal of Cinema Studies*, vol. 25, no. 3, 2017, pp. 28-42.

General Studies on the Ramayana and its Adaptations:

1. Davis, Richard H. *The Ramayana in India: An Overview of Retellings and Reinterpretations*. Harvard University Press, 2010.
2. Pandey, Gyanendra. *The Ramayana and its Interpretations in Modern Indian Discourse*. University of Delhi Press, 2012.
3. Brahmachari, Sayan. "Re-reading Sita: Feminist Reinterpretations of the Ramayana." *The Journal of Indian Literature Studies*, vol. 37, no. 4, 2018, pp. 205-225.
4. Kakar, Sudhir. *The Ramayana: A Psychological Perspective*. Oxford University Press, 2004.
5. Deshpande, Shashi. "From Tradition to Modernity: The Ramayana's Shift in Cultural Context." *Modern Literary Theory and Classical Texts*, edited by K.K. Sharma, India Research Press, 2013, pp. 80-92.

Scanned with OKEN Scanner

Ahmednagar Jilha Maratha Vidya Prasarak Samaja's

New Arts, Commerce & Science College, Parner

Dist - Ahilyanagar



National Conference on

Indian Knowledge System : Nature & Scope

Wednesday 5th March, 2025

- Organized By -

IQAC and Faculty of Humanities & Commerce

New Arts, Commerce & Science College, Parner

Dist - Ahilyanagar

Scanned with OKEN Scanner

65.	Dr. Deokate Rajendrakumar Sukhdeo	The Holistic Approach of the Indian Knowledge System (IKS): A Theoretical Analysis	408
66.	Prof. Shikha Sharma	The Role of Indian Knowledge Systems in Addressing Modern Challenges: Future Directions	419
67.	Dr.Pandurang Ithape & Sheetal Rasal	Indian Yoga Science and Artificial Intelligence - The Role of Technology in Mental Health	425
68.	Prof. Sheetal B. Rasal & Prof. Mausami Chaudhari	The Role of Yoga in Reducing Stress	432
69.	Prof. Nikhil R. Avhankar	Indian Knowledge System (IKS)	443
70.	Dr. . Kasle Vithal Venkaty	Indian Knowledge Systems and Modern Education: Overcoming Challenges For a Brighter Future	451
71.	Mr. Rahini Mangesh Balkrishna	Integrating The Indian Knowledge System in Technological Advancements: Contributions, Innovations, and Future Prospects	459
72.	Dr. Anand Uddhav Hipparkar	Integration of Indian Knowledge System into Indian English Literature	465
73.	Dr. Yuvaraj M. Waghere	A Study of Lord Krishna's Philosophy on Karma	470
74.	Prof. Shivaji Rangnath Pathare	Indian Knowledge System (IKS)	472
75.	Dr. Dhananjay M. Chandanshive	Economic Thoughts of Lord Buddha for Overall Human Development	477
76.	प्रा. मिनाक्षी बाळासाहेब तुबे	भारतीय ज्ञान परंपरा आणि शिक्षण व्यवस्था	482
77.	प्रा. ऋषिकेश बाबासाहेब भातसिंग	प्राचीन भारतीय खेळ आणि त्यांचे शारीरिक शिक्षणात योगदान: एक चिकित्सक अभ्यास	488
78.	प्रा. नितांजली भिमराज म्हस्के डॉ. विजयकुमार राऊत	आधुनिक भारत के निर्माण में महिलाओं का योगदान – क्रांतिज्योति मादाम कामा , भारत की कोकिला सरोजिनी नायडू , झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई के संदर्भ मे	492
79.	डॉ. हरेश संपत शेळके	संत साहित्य : ज्ञानपरंपरेतील एक विवेकशील विचार	496
80.	प्रा. सुनिता देवीदास अकोलकर डॉ. विजयकुमार राऊत	भारतीय ज्ञान प्रणाली : स्वरूप और व्याप्ति	499
81.	डॉ. नंदकुमार भाऊसाहेब उदार	भारतीय ज्ञानपरंपरा व वारकरी संप्रदाय	502
82.	श्री. चेडे जगदीश योगीराज & प्रा.डॉ शेख अफसर शेख रशीद	सावित्रीबाई फुले पुणे विद्यापीठाशी संलग्नित महाविद्यालयातील विद्यार्थ्यांचा कोविड- १९ लॉकडाउन दरम्यान व लॉकडाउन नंतरच्या शारीरिक हालचालींचा सर्वेक्षणात्मक अभ्यास	509
83.	प्रा. दिपक बंडू खामकर	भारतीय ज्ञान परंपरेवर एक दृष्टीक्षेप	517
84.	प्रा.श्रीकांत संदिपान दरगुडे डॉ.अशोक विश्वनाथ घोरपडे	वैदिक काळातील शिक्षणाचा अभ्यासक्रम अध्यापन पध्दती व गुरु-शिष्य संबंध	521
85.	प्रा. काबळे संदीप अर्जुन	भारतीय ज्ञान परंपरेतील मराठी नाटकांचे योगदान – विशेष संदर्भात 'तृतीय रत्न नाटक	525
86.	प्रा. दिवटे प्रियंका साहेबराव	मुद्रा योजना	533
87.	प्रा. डॉ. दीपक पंढरीनाथ सोनटक्के	बौद्धधर्माचे विचार	537
88.	डॉ. मनोहर रामनाथ एरंडे & प्रा. स्वाती भानुदास पवार	प्राचीन भारतातील भौगोलिक संकल्पना: ग्रहण, पृथ्वी, पृथ्वीचा आकार, अक्षांश आणि रेखांश, भूकंप, वायू मंडल, हवामान आणि वातावरण, आकाशीय गोलाचा विभाग (पंचांग), ग्रह व कालगणना	541
89.	प्रा. डॉ. मनोज बापूसाहेब तेलोरे	गायनमहर्षी अल्लादियाखाँ यांचे चरित्र : महाराष्ट्रातील संगीत परंपरेचा परिचय करून देणारे चरित्र	550
90.	डॉ. माया नारायण लहारे	वारकऱ्यांचे सर्वोदयी आंदोलन	556
91.	डॉ. विजयकुमार राऊत	मानवी मूल्यों के संदर्भ में संत साहित्य	561
92.	डॉ. भागवत पांडुरंग ठाकूर	भारतीय ज्ञान प्रणाली समोरील आव्हाने	565
93.	डॉ. विश्वास रोहिदास गवारी	प्राचीन भारतीय ज्ञान व्यवस्था : भाषा आणि लिपी यांचे महत्व	571
94.	प्रा. लक्ष्मण कोठावळे & प्रा. श्रीकांत आल्हाट	भारतीय ज्ञानपरंपरेत ज्ञानेश्वरीचे योगदान	580
95.	प्रा. डॉ.अशोक विश्वनाथ घोरपडे	प्राचीन भारतीय ज्ञान प्रणाली आणि कौटिल्याचे अर्थशास्त्र	583
96.	प्रा. श्यामराव रोकडे	बहुजनवादी विचार परंपरा	590
97.	प्रा.डॉ.हनुमंत गायकवाड	भारतीय ज्ञान परंपरा - बौद्ध धर्म के संदर्भ में	597
98.	कांबळे किशोर दशरथ	पर्यावरण संरक्षण आणि शाश्वत विकासात स्वदेशी ज्ञान प्रणालीची भूमिका	599

Scanned with OKEN Scanner

भारतीय ज्ञान परंपरेवर एक दृष्टीक्षेप

प्रा. दिपक बंडू खामकर
इतिहास विभाग प्रमुख,
श्री मुलिकादेवी महाविद्यालय, निघोज
ता- पारनेर जि- अहिल्यानगर
इमेल- dipakkhamkar5050@gmail.com

प्रस्तावना:

भारतीय ज्ञान प्रणाली ही एका पिढीकडून पुढच्या पिढीकडे ज्ञानाचे पद्धतशीर प्रसारण आहे. ही एक संरचित प्रणाली आहे आणि परंपरेपेक्षा ज्ञान हस्तांतरणाची प्रक्रिया आहे. भारतीय ज्ञान प्रणाली वैदिक साहित्य, उपनिषद, वेद आणि उपवेद यावर आधारित आहे. प्राचीन आणि शाश्वत भारतीय ज्ञान आणि विचारांचा हा समृद्ध वारसा मार्गदर्शक तत्त्व म्हणून ओळखते. भारतीय ज्ञान प्रणालीमध्ये ज्ञान, विज्ञान आणि जीवन दर्शन यांचा समावेश होतो जे अनुभव, निरीक्षण, प्रयोग आणि कठोर विश्लेषणातून विकसित झाले आहेत. प्रमाणीकरण आणि आचरणात आणण्याच्या या परंपरेने आपल्या शिक्षण, कला, प्रशासन, कायदा, न्याय, आरोग्य, उत्पादन आणि वाणिज्य यावर परिणाम केला आहे. याचा प्रभाव भारतातील अभिजात आणि इतर भाषांवर झाला आहे, ज्यांचा प्रसार शाब्दिक, मौखिक आणि कलात्मक परंपरांद्वारे झाला होता. यामध्ये प्राचीन भारतातील ज्ञान आणि, त्यातील यश आणि आव्हाने, आणि भारताच्या भविष्यातील आकांक्षा, शिक्षण, आरोग्य, पर्यावरण आणि जीवनाच्या सर्व पैलूंबद्दलचे ज्ञान समाविष्ट आहे.

सध्याच्या परिस्थितीत भारतीय ज्ञान प्रणालीचे महत्त्व

भारतीय सभ्यतेने बऱ्याच काळापासून उच्च संदर्भात ज्ञान ठेवले आहे, हे त्याच्या बौद्धिक ग्रंथांच्या विशाल भांडारातून स्पष्टपणे दिसून येते. जगातील सर्वात मोठ्या हस्तलिखितांचा संग्रह आणि विविध विषयांवरील ग्रंथ, विचारवंत आणि शाळांमध्ये पसरलेला सुप्रसिद्ध वारसा होय. भगवान कृष्ण, भगवद्गीतेमध्ये (4.33, 37-38) ज्ञान देतात की ज्ञान हे आत्म-शुद्धी आणि मुक्तीचे सर्वोत्कृष्ट साधन आहे. ज्ञानाची ही बांधिलकी गंगा नदीच्या अखंड प्रवाहासारखी टिकून आहे, वेद आणि उपनिषदांपासून ते संत तुकाराम महाराजांच्या गाथेपर्यंत विस्तारलेली आहे.

भारतीय ज्ञान प्रणालीचा पाया भारतीय संस्कृती, तत्त्वज्ञान आणि अध्यात्म हे वटवृक्षाप्रमाणे समृद्ध आहे आणि हजारो वर्षांपासून विकसित होत आहे. आयुर्वेद, योग, वेदांत आणि वैदिकशास्त्र, या प्रणालींचे अविभाज्य घटक समकालीन जगामध्ये प्रासंगिक आहेत.

Scanned with OKEN Scanner

१. आरोग्य: आयुर्वेद ही एक पारंपारिक भारतीय वैद्यकीय प्रणालीआहे जी मानवी आरोग्याचा सर्वांगीण दृष्टिकोनाचा पुरस्कार करते. आज जगात जिथे आरोग्याशी संबंधित आव्हाने वाढत आहेत तिथे आयुर्वेद नैसर्गिक उपचार पद्धती, वैयक्तिक उपचार आणि प्रतिबंधात्मक आरोग्य उपायांवर लक्ष केंद्रित करण्यास प्रोत्साहन देते.

२. तणाव व्यवस्थापन: प्राचीन काळापासून भारतात आंतरिक, शारीरिक आणि आध्यात्मिक कल्याणासाठी योग एक व्यापक दृष्टीकोन प्रदान करतो. योगासन, प्राणायाम (श्वास नियंत्रण), आणि ध्यान यासारख्या सरावांचा समावेश करून, योग ताण कमी करण्यासाठी, अंतर्गत आरोग्य सुधारण्यासाठी आणि आजच्या वेगवान आणि तणावपूर्ण जगात विशेषत: मानसिक तणाव कमी करण्यासाठी प्रभावीपणे सिद्ध झाले आहे.

३. शाश्वत जीवन: भारतीय ज्ञान प्रणाली "वसुधैव कुटुंबकम्" (जग एक कुटुंब आहे) च्या संकल्पनेत अंतर्भूत असलेल्या शाश्वत जीवन पद्धतींना चालना देणाऱ्या, सर्व प्राण्यांच्या परस्परसंबंधावर भर देतात. पर्यावरणीय चिंता आणि नैसर्गिक संसाधनांच्या संवर्धनाची गरज लक्षात घेता, या तत्त्वांना अधिक महत्त्व प्राप्त होत आहे.

४. आध्यात्मिक वाढ: . मानवी जीवनात आध्यात्मिक वाढ करण्यासाठी वेद, उपनिषद, ब्राम्हणे, वेदांग सारख्या प्रणाली देतात. वास्तविकता, सजगता आणि आध्यात्मिक विकासासाठी अंतर्दृष्टी प्राचीन वेदांमध्ये आधारलेले आहे. भावनिक बुद्धिमत्ता, सजगता आणि अध्यात्मिक जीवनाचा अर्थ आणि उद्देश शोधणे याविषयी सखोल मार्गदर्शन प्रदान करतात

५. इनोव्हेशन: भारतीय ज्ञान प्रणालींनी गणित, खगोलशास्त्र आणि धातूशास्त्रातील वैज्ञानिक प्रगतीमध्ये ऐतिहासिक योगदान दिले आहे. प्राचीन भारतीय विचारातून निर्माण झालेल्या शून्य, दशांश प्रणाली आणि त्रिकोणमिती यासारख्या संकल्पना समकालीन विज्ञानात निर्णायक भूमिका बजावत आहेत आणि विज्ञान व तंत्रज्ञान, नाविन्यपूर्णतेला चालना देण्यासाठी भारतीय ज्ञानाचा स्थायी प्रभाव दिसून येतो.

भारतीय ज्ञान प्रणाली आजही अत्यंत समर्पक राहिली आहे, जी तणाव व्यवस्थापन आणि टिकाव यासारख्या समकालीन आव्हानांसाठी व्यावहारिक उपाय देते. त्याच्या ज्ञानाच्या अफाट संपत्तीमध्ये व्यक्तींचे उत्थान करण्याची क्षमता आहे

भारतीय ज्ञान प्रणालीची उद्दिष्टे:

१. संशोधन : आरोग्यासह विविध क्षेत्रातील समकालीन सामाजिक समस्यांचे निराकरण करण्यासाठी मानसशास्त्र, पर्यावरण आणि शाश्वत विकास ई. विषयामध्ये संशोधनाला समर्थन देणे आणि सुलभ करणे हे भारतीय ज्ञान प्रणालीचे उद्दिष्ट आहे.

Scanned with OKEN Scanner

२. प्राचीन ज्ञानाचे एकत्रीकरण: ज्ञान हस्तांतरणाच्या अखंडित परंपरा आणि "भारतीय दृष्टी" (भारतीय) दृष्टिकोनाचा अद्वितीय दृष्टीकोन वापरून, भूतकाळातील ज्ञानाचे एकत्रीकरण करणे आणि समकालीन आणि उदयोन्मुख समस्यांचे निराकरण करण्यासाठी भारतीय ज्ञान प्रणाली एकत्रित करणे हे प्राथमिक उद्दिष्ट आहे.

३. नाविन्यपूर्ण विभाग: IKS शिक्षण मंत्रालयाच्या अंतर्गत एक नाविन्यपूर्ण सेल म्हणून कार्य करते. (MOE) AICTE, नवी दिल्ली येथे.

४. आंतरविद्याशाखीय फोकस: कला आणि साहित्य, कृषी, मूलभूत विज्ञान, अभियांत्रिकी आणि तंत्रज्ञान, आर्किटेक्चर, व्यवस्थापन, अर्थशास्त्र इत्यादींसह विविध क्षेत्रांमध्ये आंतरविद्याशाखीय संशोधनाला प्रोत्साहन देण्यासाठी याची स्थापना करण्यात आली आहे.

त्याचप्रमाणे समग्र आरोग्य, मानसशास्त्र, न्यूरोसायन्स, निसर्ग, पर्यावरण आणि शाश्वत विकास यासारख्या अनेक क्षेत्रातील समकालीन सामाजिक समस्यांचे निराकरण करण्यासाठी पुढील संशोधनास समर्थन देणे आणि सुलभ करणे हे भारतीय ज्ञान प्रणालीचे उद्दिष्ट आहे. भूतकाळातून रेखाटणे आणि भारतीय ज्ञान प्रणालींचे एकत्रीकरण करण्याचे प्राथमिक उद्दिष्ट म्हणजे ज्ञान हस्तांतरणाची अखंड परंपरा आणि अद्वितीय दृष्टिकोन द्वारे प्रतिनिधित्व केलेल्या आपल्या प्राचीन ज्ञान प्रणालींचा वापर करून भारत आणि जगाच्या समकालीन आणि उदयोन्मुख समस्यांचे निराकरण करणे. भारतीय प्राचीन पारंपारिक ज्ञान प्रणाली अद्वितीय आहे आणि कोणत्याही काळाशी संबंधित शिक्षणाची अनेक मुळे आहेत. ते विकसित झाले आहे, आणि प्राचीन भारतीय ज्ञानाचे विविध अध्याय विविध विभागांमध्ये वर्गीकृत केले आहेत. त्याचा इतिहास आहे. अलीकडे, अशा ज्ञानाचे निदान करण्यात स्वारस्य कायमचे सर्वात संबंधित शोधण्यासाठी वाढत आहे आणि टिकावासाठी आवश्यक आहे. त्यामुळे त्या ज्ञान, तत्त्वज्ञान आणि मानवी कल्याणाशी निगडित मूल्यांचे स्वरूप आणि इतिहास यांचे विश्लेषण करण्याची गरज आहे. प्राचीन भारतीय ज्ञान प्रणाली आणि मानव कल्याणाशी संबंधित तत्त्वज्ञानाच्या उत्क्रांतीचे विश्लेषण करणे आहे. या पेपरमध्ये प्राचीन भारतीय ज्ञान प्रणालीचे विविध विभाग, संबंधित तत्त्वज्ञान आणि ते कसे विकसित झाले याचा आढावा घेतला आहे. भारतीय प्राचीन ज्ञान आणि शिक्षण प्रणाली मानवी कल्याणासाठी तत्त्वज्ञानाने मजबूत केली होती. भारतीय ज्ञान प्रणालीमध्ये ज्ञान आणि अज्ञान या दोन गंभीर संकल्पना होत्या ज्यांना वेदांत आणि व्यवहार (व्यवसाय) सह समवर्ती म्हणून संबोधले जाऊ शकते. भारतीय ज्ञान प्रणाली समकालीन सामाजिक आव्हानांना संबोधित करण्याच्या उद्देशाने सक्रियपणे समर्थन आणि संशोधनास प्रगती करण्याचा प्रयत्न करते. वेद आणि उपनिषदांसह वैदिक साहित्याच्या समृद्ध परंपरेत रुजवले आणि भारतातील इतर भाषा, दस्तऐवजीकरण, मौखिक आणि कलात्मक परंपरांसह विविध माध्यमांद्वारे प्रसारित केल्या जातात. या सर्वसमावेशक शहाणपणाच्या प्रणालीमध्ये प्राचीन भारताच्या ज्ञानाचा समावेश आहे, ज्यामध्ये त्याची उपलब्धी आणि आव्हाने आहेत. हे भारताच्या भविष्यातील आकांक्षा समजून घेण्यासाठी, शिक्षण, आरोग्य, पर्यावरण आणि जीवनाच्या सर्व पैलूंसारख्या महत्त्वपूर्ण पैलूंवर स्पर्श करण्यासाठी एक पाया प्रदान करते. थोडक्यात, भारतीय नॉलेज सिस्टीम हे भारतीय समाजाच्या बौद्धिक, सांस्कृतिक आणि व्यावहारिक आयामांना आकार देत राहते.

Scanned with OKEN Scanner

समापन

भारतीय ज्ञान प्रणाली मध्ये प्राचीन भारतातील शहाणपण समाविष्ट आहे, ज्यामध्ये यश आणि आव्हाने या दोन्हींचा तपशील आहे, तसेच शिक्षण, आरोग्य, पर्यावरण आणि जीवनाच्या विविध पैलूंसारख्या क्षेत्रातील भारताच्या भविष्यातील आकांक्षा देखील प्रतिबिंबित करते. सर्वांगीण आरोग्य, मानसशास्त्र, न्यूरोसायन्स, परिपक्व आणि शाश्वत विकासावर लक्ष केंद्रित करून, भारतीय ज्ञान प्रणाली समकालीन सामाजिक समस्यांचे निराकरण करण्यासाठी व्यापक संशोधन सुलभ करण्याचा प्रयत्न करते. एक नाविन्यपूर्ण संस्था म्हणून, भारतीय ज्ञान प्रणाली आंतरविद्याशाखीय संशोधनाला चालना देण्यासाठी आणि सामाजिक अनुप्रयोगांसाठी ज्ञानाचे संरक्षण आणि प्रसार करण्यासाठी कार्य करते.

भारतीय ज्ञान प्रणाली आदिवासी, स्थानिक आणि पारंपारिक शिक्षण पद्धतींचा समावेश करून भारताचा समृद्ध वारसा आणि पारंपारिक ज्ञान सामायिक करण्यासाठी सक्रियपणे वचनबद्ध आहे. भारतीय ज्ञान प्रणाली केवळ पर्यटनाला चालना देत नाही तर भारतातील विविधता, संस्कृती आणि परंपरांबद्दल जागरूकता आणि प्रशंसा देखील वाढवते. त्यात पुरातत्व स्थळे, वारसा, साहित्य, शिल्पकला, संगीत इत्यादी क्षेत्रातील ज्ञानाचा प्रसार समाविष्ट आहे.

एकात्मतेच्या दिशेने वाटचाल करताना, विद्यापीठांना सर्व अभ्यासक्रमांमध्ये विद्यार्थी क्रेडिट्स किंवा भारतीय ज्ञान प्रणाली निवडक अभ्यासक्रम सुरू करण्यासाठी प्रोत्साहित केले जाते, जेणेकरून सर्व विषयातील विद्यार्थ्यांना प्रथागत ज्ञानाची माहिती मिळेल

संदर्भ

1.Mandavkar Pavan ,Indian Knowledge System, Research Gate

2.https://iksindia.org/

3.https://en.wikipedia.org/wiki/Indian_Knowledge_Systems

4.https://sanskritimagazin

*****

Scanned with OKEN Scanner

MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

विद्यावार्ता

लोकनेते डॉ. बाळासाहेब विखे पाटील
(पद्मभूषण उपाधिने सन्मानित),
प्रवरा ग्रामीण शिक्षण संस्थेचे,

कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय अळकुटी,
ता. पारनेर, जि. अहिल्यानगर

एक दिवसीय राष्ट्रीय परिषद

'भारतीय ज्ञान व्यवस्थेबाबत (IKS) बहुविद्याशाखीय दृष्टिकोन'

शनिवार, दि. १ मार्च २०२५

मुख्य संपादक
प्रा. विशाल रामदास रोकडे
राष्ट्रीय परिषद समन्वयक
सहा. प्राध्यापक, इतिहास विभाग
कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय,
अळकुटी, ता. पारनेर, जि. अहिल्यानगर, ४१४३०५

प्राचार्या
डॉ. कुंदा बाळासाहेब कवडे
कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय,
अळकुटी, ता. पारनेर, जि. अहिल्यानगर, ४१४३०५

❖ विद्यावार्ता या आंतरविद्याशाखीय बहूभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. न्यायक्षेत्र:बीड

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat.**

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

Scanned with OKEN Scanner

39) प्राचीन भारतीय ज्ञान प्रणाली और बाल साहित्य का संबंध
प्रा. शेळके दत्तात्राय सोन्याबापू, अळकुटी, जि. अहिल्यानगर ||150

40) भारतीय परंपरा और पर्यावरण संरक्षण
प्रा. दिपाली दत्तात्रय तांबे, आश्वी खु., जि. अहिल्यानगर ||153

41) भक्तिकालीन हिंदी साहित्य ज्ञान परंपरा में कबीर का योगदान
डॉ. मनिषा रामचंद्र गाडीलकर, निघोज, जि. अ. नगर ||157

42) भारतीय ज्ञान परंपरा में कबीर का योगदान
डॉ. तुपे सरला सूर्यभान, प्रवरानगर, प्रवरानगर, जि. अहिल्यानगर ||159

43) भारतीय ज्ञान प्रणाली और हिंदी साहित्य
डॉ. उत्तम ओंकार येवले, कोल्हार, जि, अहल्यानगर ||164

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

Scanned with OKEN Scanner

41

भक्तिकालीन हिंदी साहित्य ज्ञान परंपरा में कबीर का योगदान

डॉ. मनिषा रामचंद्र गाडीलकर
हिंदी विभागप्रमुख,
श्री मुलिकादेवी महाविद्यालय, निघोज
तह. पारनेर जि. अ. नगर

****

प्रस्तावना

प्रत्येक संस्कृति की धरोहर वहां के प्राचीन ग्रंथो में निहित है। परंपरा के आधार पर संस्कृत, पाली, प्राकृत और अपभ्रंश से होती हुई हिंदी संस्कृत की ही पुत्री कहलाती हैं। हिंदी उसी ज्ञान को विभिन्न विधाओं के माध्यम से प्रत्येक जिज्ञासु तक पहुंचती है। इसी ज्ञान परंपरा ने विश्व को प्रभावित किया है। हिंदी साहित्य जगत ज्ञान का वह सूर्य है, जो विभिन्न विधारूपी रश्मियों से चमत्कृत होकर संपूर्ण संसार को आलोकित करता हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा को प्रवाहित करनेवाले इस साहित्य सूर्य की ओर दृष्टिपात किया जाए तो गद्य, उपन्यास, कहानी, संस्मरण, एकांकी, नाटक, रिपोर्ताज, यात्रा साहित्य आदि विधाओं के रूप में यह संसार की विभिन्न भावनाओं को समाज के समक्ष प्रकाशित करने के लिए अग्रेनी हैं। यह जनसामान्य को नई चेतना जागरूकता देती है। इस विषय के किसी पक्ष पर दृष्टिपात करने से पहले परंपरा शब्द की व्याख्या की जाए तो परंपरा वह संपत्ति है जो बिना रुके हमेशा गति से अपने कर्म पथ की ओर बढ़ती रहतीं है। यह परंपरा अपने अंदर समाएं हुए ज्ञान को चारों ओर बढ़ाते हुए व्याप्त दुःख, वेदना को अपने अंदर समाहित करके आह जनमानस तक पहुंचाने का काम करतीं है। यह परंपरा ज्ञानस्वरूप, चेतनास्वरूप, संस्कृतिस्वरूप और नैतिक गुणस्वरूप है।

भारतीय संस्कृति के अभिन्न अंग प्राचीन, जीवन मूल्य, साहित्य मनुष्य की मूल भावनाओं का विषय है। हिंदी साहित्य में समय सापेक्ष भावनाएं व्यक्त हुई है। बालकृष्ण भट्ट के अनुसार साहित्य जनसमूह d sân; d k fod Ik gS '

मध्ययुगीन संत साहित्य के प्रमुख कवि संत कबीर अपने युग की उपज है। युगीन परिस्थितियों एवं समय की मांग ने उनके व्यक्तित्व को गढ़ा है। वे एक सारग्राहित महात्मा थे, जिन्होंने अपने समय में प्रचलित सभी मत मतांतरों का ग्रहण किया है। और उन्हें अपने तर्क और अनुभव की कसौटी पर कंसा हैं, जो विश्वास, मान्यताएं, मानवता, नैतिकता, एवं भक्ति की राह में व्यर्थ बाधक थे उनका विरोध किया। कबीर सच्चे भक्त होने के साथ साथ एक प्रखर तेजस्वी स्पष्ट वक्ता, साहसी, निर्भीक, विनय, सहृदय आदि गुणों के धनी थे। सामाजिक कुरीतियों, रूढ़ियों आडंबरों दुराचार, पाखंड आदि का जैसा तीव्र विरोध उनमें देखा जाता हैं, वह अद्वितीय हैं। मध्ययुग मुगलों के आक्रमणों, धर्मांतरण, देशी राजाओं की विलासिता, धार्मिक पाखंड आदि से उपजे असुरता, भय, कुंठा, सांप्रदायिकता, रूढ़ियों, अंधविश्वास एवं कुरीतियों का युग था।

भारतीय ज्ञान परंपरा विशाल समुद्र की तरह है, जो निर्झरणी की भांति कहीं मंद कहीं तीव्र रफ्तार से बढ़ती हुई वर्तमान समय में हमारे समक्ष है। वैष्णव संप्रदाय में रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्य भारतीय संस्कृति की परंपरा में अनमोल धरोहर हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा विकसित होकर भक्तिकाल में सर्वाधिक तीव्रता से अभिव्यक्त हुई है। तुलसीदास एवं सूरदास जैसे कवियों ने रामचरितमानस जैसे महाकाव्य की रचना कर उसे जन मानसं तक पहुंचाया है। भारतेंदु जी की एक प्रसिद्ध उक्ति है, कोस कोस पर पानी बदले, चार कोस पर वाणी। ऐसी संस्कृति जहां अनेक भाषाएं उनकी संस्कृति में इतना अलगाव होने पर भी ज्ञान ने एक मोतियों की माला की तरह पिरो रखा हैं।

गुरू शिष्य परंपरा :

भारतीय ज्ञान परंपराओं में गुरू शिष्य परंपरा का अपना अनूठा ही स्थान है। जो युगों युगों से भारत को ही नहीं पूरे विश्व को प्रकाशित करती रही हैं। गुरुकुल परंपरा में शिष्य गुरु के आज्ञानुसार ज्ञान की विभिन्न सरनियों का अध्ययन करते थे और जीवन के

Scanned with OKEN Scanner

अलग अलग क्षेत्रों मे अनुशासन का पालन करते हुए जीवनयापन करते थे। इस परंपरा में विद्या का सम्मान होता था और ज्ञान को अनमोल धरोहर के रूप में देखा जाता था। कबीर जी ने गुरु को अत्यधिक महत्व दिया है। गुरु के महत्त्व को रेखांकित करते हुए वो कहते है

सतगुरु की महिमा अनंत, अनंत किया उपकार।
लोचन अनंत उघाड़िया, अनंत दिखावनहार।[2]

अर्थात ज्ञान के आलोक से संपन्न सद्गुरु की महत्ता असीमित है। उन्होंने मुझपे जो उपकार किया है, वह भी असीम है। उन्होंने मेरे अपार शक्ति संपन्न ज्ञानचक्षु का उद्घाटन कर दिया, जिसमें परमतत्व का साक्षात्कार कर सका। ईश्वरीय आलोक को दृश्य बनाने का श्रेय महान गुरु को ही है।

जाका गुरु भी अंधला, चेला खरा निरंध।
अंधा अंधा ठेलियों, कूप पड़त।[3]

अर्थात, कबीर कहते है, जिसका गुरु अंधा अर्थात ज्ञानहीन है। जिसकी अपनी कोई चिंतन दृष्टि नहीं है और परंपरागत मान्यताओं तथा विचारों की सार्थकता को जांचने परखने की क्षमता नहीं है। ऐसे गुरु का अनुयायीतो निपट दृष्टिहीन होता हैं। मध्यकालीन समाज अज्ञानता के घने कोहरें से घिरा हुआ है। सच और झूठ का अंतर करना कठिन है। ऐसे में एक मात्र गुरु ही हैं जो अच्छे और बुरे के अंतर का ज्ञान दे सकते हैं।

गुरू शिष्य प्रणाली के रूप में ऋषि मुनियों ने खुले आसमान के नीचे घने वृक्षों की छाया में प्राकृतिक वातावरण के मध्य अपने शिष्यों को आध्यात्मिक अनुभूतियों के दर्शन कराए हैं। यहीं नहीं उन्होंने समस्त विधाओं का दान कर अपने शिष्यों को ज्ञान का आलोक प्रदान किया है। भारतीयों की यह ज्ञान परंपरा विश्व में अपने चरण पसार चुकी हैं। आज वैश्विक संस्कृति भारतीय संस्कृति की सराहना करते हुए, प्रकृति की ओर लौटने की बात करतीं हैं। विभिन्न दार्शनिकों ने प्रकृति के मध्य में शांत वातावरण में विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास को महत्वपूर्ण एवं उद्देश्यपूर्ण बताया हैं। अत: आज विश्व भारत की इस परंपरा का हृदय से स्वागत करता है, और कहता है कि भारतीयों की परंपराएं वैज्ञानिक दृष्टि से पूर्ण प्रासंगिक है।

जातिप्रथा का विरोध

मध्यकालीन संत कबीर जी ने मनुष्य मनुष्य के बीच भेद करनेवाली जातिप्रथा का कठोरता के साथ विरोध किया है। उन्होंने सामाजिक अन्याय, धार्मिकता, अंधविश्वास और जातिवाद के खिलाफ आवाज उठाई है। उनके संदेश में सबको एक समान भाव और प्रेम से समाज को एक दृष्टि से देखने की प्रेरणा मिलती है। जातिवाद तथा भेदभाव ने समाज को खोखला कर दिया और इस वजह से मानवता कराह रहीं थी। उनके अनुसार ऊंचे कुल में जन्म लेने से कोई ऊंचा या श्रेष्ठ नहीं हो पाता है। मनुष्य अपने आचरण एवं सुंदर कर्मों से ऊंचा बनता हैं। सोने के कलश में मदिरा भरी हो तो वह निंदनीय हो जाता है —

ऊंचे कुल का जनमियां, जो करनी ऊंच न होय।
सोबस कलस सुरै भरया, साधू निंदत सोई।[4]

समाज सुधार की परंपरा

भारतीय वैदिक परंपराएं अत्यधिक समुज्ज्वल और प्राकृतिक रही हैं। बालक के मानसिक बौद्धिक, शारीरिक, सामाजिक, नैतिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक विकास के लिए उसमें बाल्यकाल से ही जीवनमूल्यों का बीजारोपण किया जाता था। लेकिन अनेक स्थलों पर परंपरा के साथ साथ अंधविश्वास का भी आगमन होता चला जाता था, जिसे दूर करने के लिए सदैव ही साहित्य अग्रेसर रहा हैं। महाकवि कबीरदास जी ने अपनी सखियों के माध्यम से समाज को सुधारने और सही दिशा दिखाने की परंपरा का जो प्रवर्तन किया वह परंपरा के रूप में हिंदी साहित्य जगत के मूल में बस गया।

जस काशी तस मगहर
ऊसर हृदय राम सर होई।[5]

ज्ञान परंपरा और साहित्य

हिंदी साहित्य ज्ञान का वह संपूर्ण कल्पवृक्ष है, जिसका एक–एक पल नवीन कलम और भावनाओं से मंदिर है। हिंदी साहित्य अपने आप में कई कलाओं और विधाओं में समाया हुआ है। सात द्वीपों वाली यह पृथ्वी माता चार वेद ऋग्वेद, सामवेद अथर्ववेद और यजुर्वेद छह वेदांगो शिक्षा, कल्प, निरुक्त, व्याकरण और छंद ज्योतिष सहित धर्मशास्त्र मीमांसा और स्मृतियों मिलाकर चौदह विद्याओं से मंडित तथा ६४ कलाओं से

सुशोभित है। महाकवि कबीरदास स्वयं ज्ञान को महत्त्व देते है। उनका मानना है कि, परमात्मा की प्राप्ति ज्ञान और प्रेम के आधार पर ही हो सकती है। वह कहते है कि –

पोथी पढ़ि–पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय,
ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय।[५]

बड़ी–बड़ी पुस्तकें पढ़ कर संसार में कितने ही लोग मृत्यु के द्वार पहुंच गए, पर सभी विद्वान न हो सके। कबीर मानते हैं कि यदि कोई प्रेम या प्यार के केवल ढाई अक्षर ही अच्छी तरह पढ़ ले, तो वही सच्चा ज्ञानी होगा। इसी प्रकार एक स्थल पर कबीरदास ने ज्ञान के महत्व पर भी बल दिया हैं।

निष्कर्ष :

हम कह सकतें है कि, भारतीय ज्ञान परंपराओं का विश्व पर अमिट प्रभाव है। वैश्विक धरातल पर चाहे राजनीति हो या सामाजिक, संस्कृति हो या सभ्यता, ज्ञान हो या कौशल, योग हो या व्यवहार भाषा हो अथवा व्यवहार सभी ओर भारतीय ज्ञान परंपराएं अपना प्रभाव अभिव्यक्ति कर रहीं हैं। इन्हीं ज्ञान परंपराओं से पाश्चात्य संस्कृति कौटिल्य की राजनीति की शिक्षा देती हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा में हिंदी साहित्य वह हिरकमणि है, जिसमें समस्त भावनाएं समाहित हैं। उसमें भक्ति भी है, और शिक्षा के साथ समाज सुधार भी हैं। इस प्रकार हिंदी साहित्य भारतीय ज्ञान परंपरा का एक मुख्य स्त्रोत हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

१. साहित्य जनसमूह क्र ह्रद्य का विकास – बाळकृष्ण भट्ट –Institute Of Lifelong, University of Delhi- पृ .१४

२.मध्ययुगीन काव्य – हिंदी अध्ययन मंडल, सावित्रीबाई फुले पुणे विश्विद्यालय, पुणे –प्रो.डॉ . सदानंद भोसले दृपृ .१६

३.वही पृ .१७

४.कबीर वचनामृत –विजयेंद्र स्नातक, डॉ . रमेशचंद्र मिश्र – नंशनल पब्लिकेशन हाउस, नई दिल्ली, छठा संस्करण –२००५ पृ .१५३

५.कबीर ग्रंथावली – डॉ.श्याम सुंदरदास नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, पृ.४६

६. वही पृ.२३

42

भारतीय ज्ञान परंपरा में कबीर का योगदान

डॉ. तुपे सरला सूर्यभान
सहाय्यक प्राध्यापक,
पद्मश्री विखे पाटील कला, विज्ञान व वाणिज्य महाविद्यालय, प्रवरानगर

भारतीय ज्ञान प्रणाली ज्ञान का एक समृद्ध, बहुआयामी और व्यापक भांडार है जो दर्शन, विज्ञान, कला चिकित्सा और अध्यात्मिकता जैसे विभिन्न विषयों को एक धारा में बांधता है। वेदों, उपनिषदों और पुराणो जैसे प्राचीन ग्रंथों में निहित, भारतीय ज्ञान प्रणाली की प्रकृति जीवन और ब्रम्हांड के सभी पहलुओं के अंतरसंबंध पर जोर देती है। इसी ज्ञान को पीढी–दर –पीढी संरक्षित और प्रसारित किया जाता है। भारतीय संस्कृति में प्राचीन काल से ही सन्त परंपरा है। समाज पर संतवानी का गहरा प्रभाव रहता है। हिंदीसन्त कवियों की परंपरा भारतीय साहित्य और संस्कृति की एक महत्वपूर्ण धारा है, जिसने मध्यकालीन भारत में समाज, धर्म और दर्शन को गहराई से प्रभावित कियाहै। यह परंपरा लगभग १२वीं से १७वीं शताब्दी तक फैली हुई है और इसमें अनेक संत कवियों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से भक्ति, ज्ञान और समाज सुधार का संदेश दिया। इन संत कवियों ने जनसाधारण की भाषा में अपने विचारों को व्यक्त किया, जिससे उनकी शिक्षाएं आम लोगों तक पहुँच सकीं। हिंदी संत कवियों की परंपरा का आरंभ भक्ति आंदोलन के साथ जुड़ा हुआ है। भक्ति आंदोलन एक ऐसा सामाजिक और धार्मिक आंदोलन था, जिसने जाति, वर्ग और लिंग के भेदभाव को चुनौती दी और ईश्वर की भक्ति को सर्वोच्च माना। इस आंदोलन ने समाज में एक नई चेतना का संचार किया और लोगों को आध्यात्मिकता की ओर प्रेरित किया। संत कवियों ने इस आंदोलन

Scanned with OKEN Scanner

(D Jadhav sir

MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका
विद्यावार्ता

लोकनेते डॉ. बाळासाहेब विखे पाटील
(पद्मभूषण उपाधिने सन्मानित),
प्रवरा ग्रामीण शिक्षण संस्थेचे,

कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय अळकुटी,
ता. पारनेर, जि. अहिल्यानगर

एक दिवसीय राष्ट्रीय परिषद

'भारतीय ज्ञान व्यवस्थेबाबत (IKS) बहुविद्याशाखीय दृष्टिकोन'

शनिवार, दि. १ मार्च २०२५

मुख्य संपादक
प्रा. विशाल रामदास रोकडे
राष्ट्रीय परिषद समन्वयक
सहा. प्राध्यापक, इतिहास विभाग
कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय,
अळकुटी, ता. पारनेर, जि. अहिल्यानगर, ४१४३०५

प्राचार्या
डॉ. कुंदा बाळासाहेब कवडे
कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय,
अळकुटी, ता. पारनेर, जि. अहिल्यानगर, ४१४३०५

❖ विद्यावार्ता या आंतरविद्याशाखीय बहूभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. न्यायक्षेत्र:बीड

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat.**

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

Scanned with OKEN Scanner

13) प्राचीन भारतीय ज्ञानपरंपरेच्या संस्कृतीचे शिल्पकार महामुनी वेदव्यास
प्रा. लक्ष्मण कोठावळे, प्रा. श्रीकांत आल्हाट, टाकळी ढोकेश्वर ||56

14) ऑलम्पिक खेळाचा उदय व विकास
प्रा. गोरडे राजाराम किसन, अळकुटी, जि. अहिल्यानगर ||58

15) प्राचीन भारतातील ज्ञान परंपरेतील आर्यभट्टाचे योगदान
प्रा. श्री. अनाप एस. ए., प्रोफेसर, डॉ. किशोरकुमार गव्हाणे, भूम ||62

16) नामुष्कीचे पिढीजात वर्तमान या कवी विनायक पवार यांच्या कवितेतील वैचारिकता
प्रा. डॉ. प्रवीण जाधव, निघोज, जि. अहिल्यानगर ||65

17) भारतीय विचारवंतांचे लोकशाहीचे चर्चा विश्व
श्यामराव पांडुरंग रोकडे, पारनेर, जि. अहिल्यानगर ||67

18) लोकदेवता श्री देव बिरोबा
डॉ. गोरक्षनाथ किसन घोलप, निघोज, जि. अहिल्यानगर ||73

19) प्राचीन भारतातील नाण्यांचा उगम व विकास
श्री. मच्छिंद्र नाथा बेलोटे, डॉ. के. एल. गिरमकर, जि. अहिल्यानगर ||76

20) भारतीय ज्ञान प्रणाली: ऐतिहासिक परंपरा आणि आधुनिक युग
सहा. प्रा. रमेश अंबऋषी शितोळे, मांडवगण फराटा, जि. पुणे ||81

21) भारतीय ज्ञानव्यवस्थेतील क्रीडा आणि शारीरिक शिक्षण हे व्यक्तीच्या....
साईप्रसाद प्रमोद कुंभकर्ण, लोणी ||84

22) भारतीय ज्ञान प्रणाली व प्रशासन विभाग सहभाग
श्री. गोरख बापू घोलप, अळकुटी, जि. अहिल्यानगर ||87

23) प्राचीन धर्म आणि बौद्ध धर्माचे तत्त्वज्ञान
प्रा. डॉ. दीपक पंढरीनाथ सोनटक्के, पारनेर, जि. अहिल्यानगर ||89

24) प्राचीन भारतीय राजकीय परंपरा– कौटिल्याच्या विशेष संदर्भात
कांबळे संदीप अर्जुन, डॉ. म्हस्के नारायण कारभारी ||92

25) भारतीय ज्ञान परंपरेत आद्य शंकराचार्याचे योगदान
प्रा. दिपक बंडू खामकर, निघोज, जि. अहिल्यानगर ||98

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

Scanned with OKEN Scanner

नसला तरी त्यांच्या कार्याने भारतीय खगोलशास्त्रात त्याचा वापर करण्याचा पाया घातला खगोलशास्त्रीय निरीक्षणे आणि गणनेच्या त्यांच्या वर्णनांनी आशा उपकरणांच्या वापरावर प्रभाव पडला आहे. जे नंतरच्या शतकामध्ये समायोजित आणि खगोलशास्त्रीय हेतूसाठी महत्त्वपूर्ण बनले आहे.

आर्यभट्ट यांचा प्रभाव:

आर्यभट्ट च्या कार्याचा विशेषता आर्यभट्टीय चा समकालीन आणि नंतरच्या खगोलशास्त्रावर खोल प्रभाव पडला आहे. आर्यभट्ट यांचा हा ग्रंथ अनेक भाषांमध्ये अनुवादित करण्यात आला आणि विविध संस्कृतीमध्ये विस्तृतपणे अभ्यास केला आहे. त्यांच्या नावीन्यपूर्ण पद्धती आणि अचूक गणनेने मध्ययुगीन काळात इस्लामिक खगोलशास्त्र शास्त्रज्ञ नंतरच्या युरोपियन शास्त्रज्ञांना प्रभावित केले आहे.

सांस्कृतिक आणि वैज्ञानिक वारसा:

खगोलशास्त्रातील आर्यभट्ट यांचे योगदान भारताच्या वैज्ञानिक वारशाचा एक प्रमुख भाग म्हणून ओळखला जातो. त्यांच्या नावीन्यपूर्ण सिद्धांतांनी आणि पद्धतीने खगोलशास्त्राच्या क्षेत्रातच प्रगती केली नाही तर शास्त्रज्ञांच्या भावी पिढीत पिढ्यांनाही प्रेरणा दिली आहे. खगोलशास्त्रातील त्यांचे अग्रगण्य कार्य स्मरणात ठेवले जाईल आणि आदरणीय राहील याचे खात्री करून त्यांच्या नावावर संस्था उपग्रह व पुरस्कार देऊन त्यांचा आधुनिक काळात सन्मान केला जात आहे.

निष्कर्ष :

आर्यभटांनी गणित आणि खगोलशास्त्रातील त्यांच्या कार्याने भारतीय विज्ञानाच्या इतिहासात एक महत्त्वपूर्ण स्थान मिळवले आहे. त्यांच्या संशोधनामुळे भारतीय गणित आणि खगोलशास्त्राच्या क्षेत्रात क्रांतिकारी बदल घडले. आर्यभटांची प्रतिभा आणि त्यांच्या कार्याचे

संदर्भ ग्रंथ :

१. डॉ. रासकर राजेंद्र, डॉ. दिलीप बागुल. भारतातील ज्ञान निर्मितीतील इतिहास. सक्सेस पब्लिकेशन जळगाव.

२. डॉ. पाटील कृष्णा, भारतीय ज्ञान परंपरेतील विज्ञान– खगोलशास्त्र

३. अळतेकर सदाशिव अनंत, प्राचीन भारतीय शिक्षण पद्धती, नागपूर १९३५

४. कोसंबी दा. ध. प्राचीन भारतीय संस्कृती आणि सभ्यता, डायमंड प्रकाशन पुणे. २०१६

16

नामुष्कीचे पिढीजात वर्तमान या कवी विनायक पवार यांच्या कवितेतील वैचारिकता

प्रा. डॉ. प्रवीण जाधव
मराठी विभाग प्रमुख,
श्री मुलिकादेवी महाविद्यालय निघोज,
ता. पारनेर, जि. अहमदनगर

भारतीय विविध समाजातील ज्ञान खूप विपुल प्रमाणात आहे. ज्ञान प्रणाली ही विविध हस्तकला, परंपरा, बोलीभाषा, चालीरीती, रुढी, मौखिक ज्ञान एका पिढीकडून दुसऱ्या पिढीकडे हस्तांतरित केले जाते. लेखक, कवी हे देखील समाजाचे महत्त्वाचे घटक आहेत. समाजातील प्रश्न, जाणिवा, प्रगल्भ विचार पुस्तकातून वाचकांपर्यंत देण्याचे महत्त्वाचे काम करतात. ग्रंथ, पुस्तके यांच्यातून मोठ्या प्रमाणात ज्ञान मिळविता येते. ज्ञानाच्या कक्षा वृद्धिंगत होतात म्हणून भारतीय ज्ञान प्रणालीत पुस्तकातील गुढ ज्ञान समजण्यास मदत होते. कवी विनायक पवार यांनी लमान, बंजारा समाजातील लोक परंपरा, बोलीभाषा, समाजातील दैनंदिन जीवन, हस्तकला, मौखिक ज्ञान आपल्या कवितासंग्रहातून मार्मिकपणे वर्णन केले आहेत.

परंपरागत पिढ्यांमधील जुन्या चालीरीती, परंपरा, राजकारण, शेती, तरुणांचे प्रश्न, स्त्रियांच्या व्यथा — वेदना, आधुनिक काळात कौटुंबिक नात्यांमधील दुरावा, जातीयता, धार्मिक वादावरून होणाऱ्या दंगली, व्यसने, निसर्ग या व अशा अनेक विषयावरती कवी आपल्या कवितेमधून भाष्य करतो, वर्तमानात देखील जुन्या भाबड्या प्रथा त्यास जाणवतात यामुळे विनायक पवार अधिकाधिक अंतर्मुख होऊन नेमकेपणाने त्यावरती व्यक्त होतात. समाजात एकंदरीत सुरू असणारी सामाजिक अराजकता यावरती तटस्थ विचार या कवितेत येतो.

Scanned with OKEN Scanner

या कविता वाचताना वाचकाला वास्तव परिस्थितीचे भान येते.

सद्य परिस्थितीतील स्त्रियांवरील होणाऱ्या अन्याय अत्याचारावरील बारकावे एक स्वत: बाप म्हणून आपल्या कवितेत लिहिताना कवी म्हणतो,

तू गँग रेप मधून वाचली तर. . .
हुंड्याची व्यवस्था मी करीनच
बेटा सांभाळून बरं. . .
अलीकडे दिवा अंगावर पडतो
स्टोव्ह पेट घेतो.

आज काही समाजामध्ये कुटुंबात मुलगी जन्माला आली म्हणजे कुटुंबावर भार, ओझं, खर्चाचा, कर्जाचा डोंगर असं समजलं जातं. आठवण या कवितेत कवी लिहितो,

मला आठवतं. . .
मला तिसरीबी बहीण झाल्याचं दु:ख
बापाला डोंगरदऱ्यात, काट्याकुपाटीत
कुठंच लपवता आलं नाही
मायलाबी ओझं हलकं करून
ओझंच वाढल्याचं शल्य
दाबून ठेवता आलं नाही
पापण्यांच्या अलमारीत
महिन्याभरातच आमच्या गायीनं
कारवड दिली
माय बाप दोघंबी खुश होते

जात या कवितेत माणसाची जात ही त्याच्यासोबत शिक्का मारल्यासारखी चिकटलेली असते. पदोपदी जातीवरून अडचणी निर्माण होताना दिसतात. ती जात आपल्यापासून दूर जात नाही याविषयी कवी लिहितो,

शेपटीसुद्धा
उरू दिली नाही मागे
आपला वानरांशी
संबंध असल्याचं
कळू नये म्हणून
केवढी बेईमान
जात माणसांची!

शेतकरी जीवनावरील अस्मानी सुलतानी संकट, शेतकरी आत्महत्या, मुलीचं लग्न, शासनाकडून मिळणाऱ्या अनुदानाचे आश्वासन, त्याच्या आत्महत्येचा प्रश्न गोडी गुलाबीने निकाली निघतो यावर कवी निर्ढी या कवितेत म्हणतो,

हे पहा, मुद्द्याचं राहूनच गेलं
कर्जापायी गेला म्हणून जबानी द्या
अन फाईल लवकर टाका
एका लाखात रंजीचं लगन घ्या उरकून

उच्च शिक्षित बेकारांना कठीण काळाचे भान यावे म्हणून घंटा या कवितेत कवी सूचित करतो,

मुलांनो,
हा गाभडत जाणारा काळ
चीभडत जाणारी वेळ आहे
तुमचे ओठ सुकतील
ठोके चुकतील
जेव्हा घुसतील अनंत बाण
तुमच्या पदव्यांच्या छातीत
लेखणीसह तुम्ही मातीत जाल तेव्हा. . .

तसेच धर्म व जातीवरून होणाऱ्या दंगली यावर कडाडून प्रहार करताना शोध या कवितेत कवी विनायक पवार प्रखर भाष्य करतात,

उत्सवं घडवून आणा
नाचा गणेशोत्सवात, मोहरममध्ये
किंवा भीम जयंतीला
पचेल त्याहून अधिक पिवून
काढा दुसऱ्या धर्माची जातीची मायबहिण

सद्यपरिस्थितीचे भाव नेमकेपणाने चिमटीत पकडण्याची कसब कवीच्या लेखणीमध्ये आहे. एकूणच कवीचे वास्तव जागृत भान कवितेतून वाचकांशी बोलताना अनेक प्रश्न निर्माण करतात, संवाद साधतात. त्यामुळेच कवितेतून मांडलेल्या माणसांच्या जगण्यातील अडचणी, भेदभाव, स्त्री जाणिवा वाचकाला विचार करायला भाग पाडतात. या कविता संग्रहामुळे बंजारा, लमाण समाजाचे ज्ञान समाजापर्यंत माहित होण्यास मदत झाली.

❑❑❑

Scanned with OKEN Scanner

(16) Khamkar sir

MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

विद्यावार्ता

लोकनेते डॉ. बाळासाहेब विखे पाटील
(पद्मभूषण उपाधिने सन्मानित),
प्रवरा ग्रामीण शिक्षण संस्थेचे,

कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय अळकुटी,
ता. पारनेर, जि. अहिल्यानगर

एक दिवसीय राष्ट्रीय परिषद

'भारतीय ज्ञान व्यवस्थेबाबत (IKS) बहुविद्याशाखीय दृष्टिकोन'

शनिवार, दि. १ मार्च २०२५

मुख्य संपादक
प्रा. विशाल रामदास रोकडे
राष्ट्रीय परिषद समन्वयक
सहा. प्राध्यापक, इतिहास विभाग
कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय,
अळकुटी, ता. पारनेर, जि. अहिल्यानगर, ४१४३०५

प्राचार्या
डॉ. कुंदा बाळासाहेब कवडे
कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय,
अळकुटी, ता. पारनेर, जि. अहिल्यानगर, ४१४३०५

❖ विद्यावार्ता या आंतरविद्याशाखीय बहूभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. न्यायक्षेत्र:बीड

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat.**

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

Scanned with OKEN Scanner

13) प्राचीन भारतीय ज्ञानपरंपरेच्या संस्कृतीचे शिल्पकार महामुनी वेदव्यास ||56
प्रा. लक्ष्मण कोठावळे, प्रा. श्रीकांत आल्हाट, टाकळी ढोकेश्वर

14) ऑलम्पिक खेळाचा उदय व विकास ||58
प्रा. गोरडे राजाराम किसन, अळकुटी, जि. अहिल्यानगर

15) प्राचीन भारतातील ज्ञान परंपरेतील आर्यभट्टाचे योगदान ||62
प्रा. श्री. अनाप एस. ए., प्रोफेसर, डॉ. किशोरकुमार गव्हाणे, भूम

16) नामुष्कीचे पिढीजात वर्तमान या कवी विनायक पवार यांच्या कवितेतील वैचारिकता ||65
प्रा. डॉ. प्रवीण जाधव, निघोज, जि. अहिल्यानगर

17) भारतीय विचारवंतांचे लोकशाहीचे चर्चा विश्व ||67
श्यामराव पांडुरंग रोकडे, पारनेर, जि. अहिल्यानगर

18) लोकदेवता श्री देव बिरोबा ||73
डॉ. गोरक्षनाथ किसन घोलप, निघोज, जि. अहिल्यानगर

19) प्राचीन भारतातील नाण्यांचा उगम व विकास ||76
श्री. मच्छिंद्र नाथा बेलोटे, डॉ. के. एल. गिरमकर, जि. अहिल्यानगर

20) भारतीय ज्ञान प्रणाली: ऐतिहासिक परंपरा आणि आधुनिक युग ||81
सहा. प्रा. रमेश अंबऋषी शितोळे, मांडवगण फराटा, जि. पुणे

21) भारतीय ज्ञानव्यवस्थेतील क्रीडा आणि शारीरिक शिक्षण हे व्यक्तीच्या.... ||84
साईप्रसाद प्रमोद कुंभकर्ण, लोणी

22) भारतीय ज्ञान प्रणाली व प्रशासन विभाग सहभाग ||87
श्री. गोरख बापू घोलप, अळकुटी, जि. अहिल्यानगर

23) प्राचीन धर्म आणि बौद्ध धर्माचे तत्त्वज्ञान ||89
प्रा. डॉ. दीपक पंढरीनाथ सोनटक्के, पारनेर, जि. अहिल्यानगर

24) प्राचीन भारतीय राजकीय परंपरा– कौटिल्याच्या विशेष संदर्भात ||92
कांबळे संदीप अर्जुन, डॉ. म्हस्के नारायण कारभारी

25) भारतीय ज्ञान परंपरेत आद्य शंकराचार्याचे योगदान ||98
प्रा. दिपक बंडू खामकर, निघोज, जि. अहिल्यानगर

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

Scanned with OKEN Scanner

25

भारतीय ज्ञान परंपरेत आद्य शंकराचार्याचे योगदान

प्रा. दिपक बंडू खामकर
इतिहास विभाग प्रमुख,
श्री मुलिकादेवी महाविद्यालय, निघोज
ता. पारनेर जि. अहिल्यानगर

प्रस्तावना :

भारताचे पहिले पंतप्रधान पं. जवाहरलाल नेहः यांनी शडिस्कव्हरी ऑफ इंडियाश या ग्रंथात शंकराचार्याबद्दल अत्यंत गौरवपूर्ण उद्‌गार काढले आहेत. ते म्हणतात की, आचार्यांनी नाना प्रकारच्या मतमतांतरांनी त्रस्त झालेल्या भारतीय लोकांत समन्वय साधून भारतीय मनाला भेदामध्ये अभेद पाहण्याची शिकवण दिली. आपल्या अद्वैत सिद्धांताच्याद्वारे ही शिकवण भारतीयांच्या अंगी बाणवण्याचा त्यांनी महान प्रयत्न केला. अशा प्रकारचे कार्य साधण्यास अनेक पिढ्या खर्ची घातल्या, तरी पुरे पडावयाचे नाही, इतके प्रचंड कार्य आचार्यांनी आपल्या अवघ्या बत्तीस वर्षाच्या आयुष्यात साधले. त्यांच्या विचारधारेचा प्रभाव आधुनिक भारतातदेखील तेवढ्याच तेजाने जाणवत आहे. ते थोर तत्वज्ञ, महापंडित, प्रतिभावान कवी, समाजसुधारकांतील अग्रणी आणि चतुर संघटक होते. आचार्यांनी आपले कार्य बौद्धिक, तात्विक आणि धार्मिक या तिन्ही स्तरांवर करून निरनिराळ्या विचारधारांत एकसूत्रता आणण्याचा प्रयत्न केला. लोकजीवनात :ढ असलेले पंथ–भेद नष्ट करून सर्वांना ज्ञानाने मोक्ष मिळू शकतो हे पटवून दिले आणि ज्ञानोपासनेचा मार्ग दाखवून दिला.

आद्य शंकराचार्य किंवा आदि शंकराचार्य हे अद्वैत वेदांतमताचे उद्‌गाते व भारतीय हिंदू धर्मातील एक महान तत्त्वज्ञ होते. त्यांनी सांख्यांचा प्रधानकारणवाद आणि पूर्वमिमांसिकांचा ज्ञानकर्मसमुच्चयवाद खोडून काढत अद्वैतवाद प्रस्थापित केला आणि ज्ञानमार्गाचा पुरस्कार केला. त्यांनी त्यावेळेस कन्याकुमारी ते काश्मीर, आणि द्वारका ते जगन्नाथपुरी असे सर्व भारतभर भ्रमण करून, त्यांनी वैदिक धर्माची पुन:स्थापना केली. शंकराचार्य हे हिंदू धर्मातील सर्वोच्च आचार्य मानले जातात. आद्य शंकराचार्यांनी द्वारका मठ, जगन्नाथपुरी मठ, शृंगेरी मठ आणि ज्योतिर्मठ येथे चार पीठे निर्मून, त्यांवर प्रत्येकी एक पीठासीन शंकराचार्य नेमून आचार्य परंपरा घालून दिली. या आदि शंकराचार्यांनी प्रस्थानत्रयींवर (ब्रह्मसूत्र, उपनिषदे व भगवद्‌गीता) आणि अन्य विषयांवर अनेक भाष्यग्रंथ लिहिले आहेत. त्यांनी तत्त्वज्ञानविषयक ग्रंथ, संस्कृत स्तोत्रे, आणि तत्सम काव्ये रचली आहेत. त्यांच्या अनेक पद्यरचना अनुप्रासादी काव्यालंकारांनी ओथंबलेल्या आहेत.

जीवन परिचय :

केरळ राज्यामधील पूर्णा नदीकाठी वसलेल्या कलाडी या गावामध्ये शिवगुरू आणि विशिष्टादेवी (आर्याम्बा) या ब्राह्मण दांपत्याच्या पोटी त्यांचा जन्म वैशाख शुद्ध पंचमीला झाला. त्यांचा बालपणीच त्यांच्या पित्याचे निधन झाले. असे म्हणतात कि त्यांच्या वाणीवर साक्षात देवी सरस्वती विराजमान होती. त्यांची बुद्धिमता अलौकिक होती. तीन वर्षापर्यंत मातृभाषेतील ग्रंथ आत्मसात केले. रामायण, महाभारत आणि पुराणातील श्लोक पाठांतर तसेच वेदांतील ध्व्या, मंत्र म्हणण्यास सुरवात केली. त्यांच्या आईने अत्यंत प्रतिकूल परिस्थितीत त्यांचे पालनपोषण केले. ते त्यावेळच्या परंपरेप्रमाणे, यज्ञोपवीत उपनयन संस्कार झाल्यावर गुरुगृही अध्ययनास गेले. वयाच्या आठव्या वर्षी संन्यास घेऊन गुरूच्या शोधार्थ निघाले. चालत–चालत ते मध्यप्रदेश येथील ओंकारेश्वर येथे पोचले. तेथील श्रीगुरू गौडपाद यांचे शिष्य श्री गोविंद भगवत्पाद भट यांना त्यांनी आपले गुरू केले. त्यानंतर त्यांनी अद्वैतमताचा प्रसार करण्यासाठी भारतात पदभ्रमण सुरू केले. या यात्रेचा समारोप त्यांनी काशी विश्वनाथ येथे केला. आदी शंकराचार्यांनी ब्रह्मसत्यं जगन्मिथ्या हे तत्त्वज्ञान मांडले. त्यांनी शैव व वैष्णव हा वाद संपवण्याचे एक मोठे काम केले. त्यांनी चार पीठ स्थापन केले. आद्यगुरु o; HP, k ३२ व्या वर्षी परमातम्यात विलीन झाले.

चार मठ : वेदांत साधना ही सर्व जगाचे

Scanned with OKEN Scanner

कल्याण करणारी आहे. तिला सुप्रतीष्ठीत करण्यासाठी संन्यासी संघ स्थापन केला आणि भारताच्या चार बाजूस चार मठ स्थापन केले. त्यासाठी मठाम्नाय बनवले. वेगवेगळ्या मठांना वेगवेगळे कार्य, क्षेत्र, वेद व महाकाव्य दिली. त्याचप्रमाणे मठाचा आचार्य हा सद्गुणांनी युक्त असावा, आदर्श संन्यासी जीवन व्यतीत करणारा असावा, जितेंद्रिय वेदवेदांगपारंगत असावा, सर्वशास्त्रवेत्ता असावा आणि नसेल तर त्याला बदलावे असे नियम त्यांनी घालून दिले होते. आपल्या चार प्रमुख शिष्यांना चार मठाचे आचार्य बनवले होते. वेगवेगळे संन्यासी सर्व माठांच्या अधीन राहून काम करायला लावले होते.

मठ– शारदामठ, गोवर्धनमठ, ज्योतिर्मठ, शृंगेरीमठ

धाम– द्वारकाधाम, पुरीधाम, ज्योतीर्धाम, रामेश्वेर्धाम

संप्रदाय– तीर्थ व आश्रम वन, अरण्य, गिरी, पर्वत, सागर सरस्वती, भारती, पुरी

वेद– सामवेद, ऋग्वेद, अथर्ववेद, यजुर्वेद

महाकाव्य– तत्वमसि, प्रज्ञानं ब्रम्ह, अयमात्मा ब्रम्ह अहं ब्रम्हास्मि

अद्वैत वाद : आद्य शंकराचार्य ब्रह्मदेवाला सर्वश्रेष्ठ मानून, जीव आणि जग हे त्याच्यासाठी अभिन्न मानले आहे. त्यांच्या मते, पदार्थ निर्मिती आणि विनाशापासून मुक्त असले पाहिजेत. नाशवंत जग हे तत्वांपासून शून्य आहे, जीव देखील जसे दिसतात तसे नाहीत. जागृत आणि स्वप्नावस्थेत, जीव जगामध्ये राहतो, परंतु गाढ झोपेत, जीव सर्व ज्ञानाशिवाय चौतन्य अवस्थेत राहतो. यावरून हे सिद्ध होते की जीवाचे शुद्ध स्वरूप गाढ झोपेसारखे असावे. सुषुप्ती अवस्था ही शाश्वत आहे, म्हणून याच्या पलीकडे तुरीय अवस्था हे जीवाचे शुद्ध स्वरूप मानले जाते. या अवस्थेत नश्वर जगाशी संबंध नसतो आणि जीवाला पुन्हा नश्वर जगात प्रवेश करावा लागत नाही. ही तुरिया अवस्था अभ्यासाने प्राप्त होते. जेव्हा ब्रह्म–जीव–जगत यांच्यातील अभेदाचे ज्ञान होते, तेव्हा जग जीवामध्ये लीन होते आणि आत्मा ब्रह्मामध्ये लीन होतो. तिघांमध्ये खरा फरक असूनही अज्ञानामुळे जीव जगाला स्वतरूपापासून वेगळे समजतो. पण स्वप्नातील जगाप्रमाणेच जागृत जग हीसुद्धा सजीवाची कल्पना आहे. फरक एवढाच आहे की स्वप्ने वैयक्तिक कल्पनेचे परिणाम आहेत तर जागृत अनुभव सामूहिक भव्य कल्पनाशक्तीचा परिणाम आहे. स्वप्नविश्वाचे ज्ञान झाल्यावर दोघांना खोटारडेपणा सिद्ध होतो. परंतु वेदांतात जीव खोटा मानला जात नाही कारण तो जगाचा एक भाग आहे. मिथ्याचा अनुभव घेणारा जीव हेच अंतिम सत्य आहे, ते मिथ्या मानले तर सर्व ज्ञान मिथ्या मानावे लागेल. पण जगामध्ये जीव ज्या स्वरुपात वावरतो ते निश्चितच मिथ्या आहे. सजीवांची तुरीया अवस्था ही भेदविरहित शुद्ध अवस्था आहे. जाणता–ज्ञात–ज्ञानाचा संबंध हा खोटा संबंध आहे. याच्या पलीकडे जाऊन, जीव त्याच्या शुद्ध चौतन्याची स्थिती प्राप्त करतो. या अवस्थेत भेदाचा मागमूसही नाही कारण द्वैतामध्ये फरक आहे. या अद्वैत अवस्थेला ब्रह्म म्हणतात. तत्व अनंत आहे, दुसरा घटक असेल तर पहिला घटक मर्यादित होईल आणि मर्यादित होऊन तो घटक सुगम होईल ज्यामध्ये ज्ञाता–ज्ञात–ज्ञान असा भेद निर्माण होऊ लागेल. अनुभव साक्ष देतो की सर्व ज्ञात वस्तू नाशवंत आहेत. म्हणून, जर आपण तत्वाला अमर मानले तर आपल्याला ते अद्वैत, अज्ञात, शुद्ध चौतन्य मानावे लागेल. असा घटक स्वीकारून, आपल्याला उत्क्रांती सिद्धांताच्या मदतीने जगाची समजलेली स्थिती स्पष्ट करावी लागेल. दोरीत साप गुंडाळल्याप्रमाणे, हे जग वास्तविक किंवा अवास्तव नाही. जर ते खरे असते तर ते कधीही नष्ट झाले नसते, जर ते खोटे असते तर ते सुख–दुःख अनुभवले नसते. त्यामुळे सत्य–असत्य यातील एकमेव अवर्णनीय अवस्था हीच खरी अवस्था असू शकते. उपनिषदांमध्ये या अज्ञानाच्या अवस्थेला नेति असे प्रतिपादन केले आहे.

अज्ञान हे भावनांचे एक रूप आहे कारण ते एखाद्या वस्तूच्या अस्तित्वाची जाणीव करून देते, ते अनुपस्थितीचे एक रूप आहे कारण त्याचे वास्तविक स्वरूप काहीही नाही. हे अज्ञान जगाचे कारण मानले जाते. ब्रह्मदेवाशी अज्ञानाचा संबंध काय, याचे अचूक उत्तर कठीण आहे परंतु ब्रह्मा त्याच्या शुद्ध निराकार स्वरूपात अज्ञानरहित आहे, कसा तरी तो भाव विचित्र अज्ञानाने व्यापतो आणि सगुण देव म्हणू लागतो आणि अशा प्रकारे सृष्टीचा क्रम सुरू होतो. भगवंताला त्याच्या शुद्ध स्वरूपाचे ज्ञान आहे पण त्याच्या ब्रह्मस्वरूपाचे

Scanned with OKEN Scanner

ज्ञान प्राप्त करण्यासाठी जीवाला साधनेने ब्रह्मभूत व्हावे लागते. गुरूंच्या मुखातून तत्त्वमसि हा उपदेश ऐकून जीवाला अहं ब्रह्मास्मि चा अनुभव येतो. त्या अवस्थेत माणूस संपूर्ण जगाला स्वत:च्या रूपात आणि संपूर्ण जगाला स्वत:मध्ये पाहतो कारण त्या वेळी त्याच्या (ब्रह्म) शिवाय दुसरे कोणतेही तत्त्व नसते. या अवस्थेला तुरियावस्था किंवा मोक्ष म्हणतात.

आदी शंकराचार्यांचे लिखित साहित्य

आद्य शंकराचार्यांनी लिहिलेली उपनिषदे, भगवद्गीता आणि ब्रह्मसूत्रांवरील भाष्ये जगप्रसिद्ध आहेत. आद्य शंकराचर्यांनी आपल्या मठाम्नाय या ग्रंथात, भारतातील दशनामी संन्यास प्रणाली, चारही मठ, दशनामी आखाडे व त्यांच्या आधाराने चालणारे कुंभपर्व या बाबतच्या नीती, रीती व नियम, विधान व सिद्धांत यांचे विवेचन केले आहे.

भाष्ये –ईशोपनिषद भाष्य, ऐतरोपनिषद भाष्य, कठोपनिषद भाष्य, केनोपनिषद भाष्य, छांदोग्योपनिषद भाष्य, तैत्तिरीयोपनिषद भाष्य, प्रश्नोपनिषद भाष्य, बृहदारण्यकोपनिषद भाष्य, ब्रह्मसूत्र भाष्य, भगवद्गीता भाष्य, मंडूकोपनिषद कारिका भाष्य, विष्णूसहस्रनाम स्तोत्र भाष्य, सनत्सुजातीय भाष्य, अष्टोत्तर सहस्रनामावलि:, उपदेशसहस्री, चर्पटपंजरिका स्तोत्रम, तत्त्वविवेकाख्यम, दत्तात्रेयस्तोत्रम, द्वादशपंजरिका स्तोत्रम, पंचदशी, कूटस्थदीप. , चित्रदीप, तत्त्वविवेक, तृप्तिदीप, द्वैतविवेक, ध्यानदीप, नाटक दीप, पञ्चकोश विवेक, पञ्चमहाभूतविवेक, पञ्चकोशविवेक, ब्रह्मानन्दे अद्वैतानन्द, ब्रह्मानन्दे आत्मानन्द, ब्रह्मानन्दे योगानन्द, महावाक्यविवेक, विद्यानन्द, विषयानन्द, परापूजास्तोत्रम्, प्रपंचसार, भवान्यष्टकम, लघुवाक्यवृत्ती, विवेकचूडामणि, सर्व वेदान्त सिद्धान्त सार संग्रह, साधनपंचकम इ.

छोट्या तत्त्वज्ञानविषक रचना: अद्वैत अनुभूति, अद्वैत पंचकम, अनात्मा श्रीविगर्हण, अपरोक्षानुभूति, उपदेश पंचकम किंवा साधन पंचकम, एकश्लोकी, कौपीनपंचकम, जीवनमुक्त आनंदलहरी, तत्त्वोपदेश, धन्याष्टकम, निर्वाण मंजरी, निर्वाणशतकम, पंचीकरणम, प्रबोध सुधाकर, प्रश्नोत्तर रत्नमालिका, प्रौढ अनुभूति, यति पंचकम, वाक्यवृत्ति, शतश्लोकी, सदाचार अनुसंधानम, साधन पंचकम किंवा उपदेश पंचकम, स्वरूपानुसंधान अष्टकम, स्वात्म निरूपणम, स्वात्मप्रकाशिका इ.

गणेश स्तुतिपर : गणेश पंचरत्नम, गणेश भुजांगम शिवस्तुतिपर:कालभैरव अष्टकम, दशश्लोकी स्तुति, दक्षिणमूर्ति अष्टकम, दक्षिणमूर्ति स्तोत्रम, दक्षिणमूर्ति वर्णमाला स्तोत्रम, मृत्युंजय मानसिक पूजा, वेदसार शिव स्तोत्रम, शिव अपराधक्षमापन स्तोत्रम, शिव आनंदलहरी, शिव केशादिपादान्तवर्णन स्तोत्रम, शिव नामावलि अष्टकम, शिव पंचाक्षर स्तोत्रम, शिव पंचाक्षरा नक्षत्रमालास्तोत्रम, शिव पादादिकेशान्तवर्णनस्तोत्रम, शिव भुजांगम, शिव मानस पूजा, सुवर्णमाला स्तुति इ.

शक्तिस्तुतिपर : अन्नपूर्णा अष्टकम, आनंदलहरी, कनकधारा स्तोत्रम, कल्याण वृष्टिस्तव, गौरी दशकम, त्रिपुरसुंदरी अष्टकम, त्रिपुरसुंदरी मानस पूजा, त्रिपुरसुंदरी वेद पाद स्तोत्रम, देवी चतु:षष्ठी उपचार पूजा स्तोत्रम, देवी भुजांगम, नवरत्न मालिका, भवानी भुजांगम, भ्रमरांबा अष्टकम, मंत्रमातृका पुष्पमालास्तव, महिषासुरमर्दिनी स्तोत्रम, ललिता पंचरत्नम, शारदा भुजंगप्रयात स्तोत्रम, सौंदर्यलहरी इ.

विष्णू आणि त्याच्या अवतारांच्या स्तुतिपर : अच्युताष्टकम, कृष्णाष्टकम, गोविंदाष्टकम, जगन्नाथाष्टकम, पांडुरंगाष्टकम, भगवन मानस पूजा, मोहमुद्गार (भज गोविंदम), राम भुजंगप्रयात स्तोत्रम, लक्ष्मीनृसिंह करावलंब (करुणरस) स्तोत्रम, लक्ष्मीनरसिंह पंचरत्नम, विष्णूपादादिकेशान्त स्तोत्रम, विष्णू भुजंगप्रयात स्तोत्रम, षट्पदीस्तोत्रम इ.

इतर देवतांच्या आणि तीर्थांच्या स्तुतिपर: अर्धनारीश्वरस्तोत्रम, उमा महेश्वर स्तोत्रम, काशी पंचकम, गंगाष्टकम, गु: अष्टकम, नर्मदाष्टकम, निर्गुण मानस पूजा, मनकर्णिका अष्टकम, यमुनाष्टकम, इ. अशा अनेक प्रकारचे भाष्ये, स्तोत्र, रचून संस्कृत भाषेचे वैभव वाढवले आहे.

संदर्भ सूची

- आचार्य शंकर — स्वामी अपूर्वानंद, रामकृष्ण मठ प्रकाशन, २०१४
- Jawaharlal Nehru, The Discovery Of India Penguin Random House India
- http://mr-m-wikipedia-org
- Bhaktivedanta Swami Prabhupada-Bhagavad Gita, As it is, bhaktivedanta Book Trust, Mumbai, 1998

Scanned with OKEN Scanner

SPECIAL ISSUE 02

विद्यावार्ता®

AH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

Peer Reviewed International Refereed Research






लोकनेते डॉ. बाळासाहेब विखे पाटील (पद्मभूषण उपाधिने सन्मानित)

प्रवरा ग्रामीण शिक्षण संस्थेचे,

कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय,

अळकुटी, ता. पारनेर जि. आहिल्यानगर

सावित्रीबाई फुले पुणे विद्यापीठ, पुणे (संलग्नित) आयोजित

एक दिवसीय राष्ट्रीय परिषद

भारतीय ज्ञान व्यवस्थेबाबत (IKS)
बहुविद्याशाखीय दृष्टीकोन



Scanned with OKEN Scanner

MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका
विद्यावार्ता

लोकनेते डॉ. बाळासाहेब विखे पाटील
(पद्मभूषण उपाधिने सन्मानित),
प्रवरा ग्रामीण शिक्षण संस्थेचे,

कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय अळकुटी,
ता. पारनेर, जि. अहिल्यानगर

एक दिवसीय राष्ट्रीय परिषद

'भारतीय ज्ञान व्यवस्थेबाबत (IKS) बहुविद्याशाखीय दृष्टिकोन'

शनिवार, दि. १ मार्च २०२५

मुख्य संपादक
प्रा. विशाल रामदास रोकडे
राष्ट्रीय परिषद समन्वयक
सहा. प्राध्यापक, इतिहास विभाग
कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय,
अळकुटी, ता. पारनेर, जि. अहिल्यानगर, ४१४३०५

प्राचार्या
डॉ. कुंदा बाळासाहेब कवडे
कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय,
अळकुटी, ता. पारनेर, जि. अहिल्यानगर, ४१४३०५

❖ **विद्यावार्ता** या आंतरविद्याशाखीय बहूभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. **न्यायक्षेत्र:बीड**

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat.**

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

Scanned with OKEN Scanner

13) प्राचीन भारतीय ज्ञानपरंपरेच्या संस्कृतीचे शिल्पकार महामुनी वेदव्यास
प्रा. लक्ष्मण कोठावळे, प्रा. श्रीकांत आल्हाट, टाकळी ढोकेश्वर ||56

14) ऑलम्पिक खेळाचा उदय व विकास
प्रा. गोरडे राजाराम किसन, अळकुटी, जि. अहिल्यानगर ||58

15) प्राचीन भारतातील ज्ञान परंपरेतील आर्यभट्टाचे योगदान
प्रा. श्री. अनाप एस. ए., प्रोफेसर, डॉ. किशोरकुमार गव्हाणे, भूम ||62

16) नामुष्कीचे पिढीजात वर्तमान या कवी विनायक पवार यांच्या कवितेतील वैचारिकता
प्रा. डॉ. प्रवीण जाधव, निघोज, जि. अहिल्यानगर ||65

17) भारतीय विचारवंतांचे लोकशाहीचे चर्चा विश्व
श्यामराव पांडुरंग रोकडे, पारनेर, जि. अहिल्यानगर ||67

18) लोकदेवता श्री देव बिरोबा
डॉ. गोरक्षनाथ किसन घोलप, निघोज, जि. अहिल्यानगर ||73

19) प्राचीन भारतातील नाण्यांचा उगम व विकास
श्री. मच्छिंद्र नाथा बेलोटे, डॉ. के. एल. गिरमकर, जि. अहिल्यानगर ||76

20) भारतीय ज्ञान प्रणाली: ऐतिहासिक परंपरा आणि आधुनिक युग
सहा. प्रा. रमेश अंबऋषी शितोळे, मांडवगण फराटा, जि. पुणे ||81

21) भारतीय ज्ञानव्यवस्थेतील क्रीडा आणि शारीरिक शिक्षण हे व्यक्तीच्या....
साईप्रसाद प्रमोद कुंभकर्ण, लोणी ||84

22) भारतीय ज्ञान प्रणाली व प्रशासन विभाग सहभाग
श्री. गोरख बापू घोलप, अळकुटी, जि. अहिल्यानगर ||87

23) प्राचीन धर्म आणि बौद्ध धर्माचे तत्त्वज्ञान
प्रा. डॉ. दीपक पंढरीनाथ सोनटक्के, पारनेर, जि. अहिल्यानगर ||89

24) प्राचीन भारतीय राजकीय परंपरा— कौटिल्याच्या विशेष संदर्भात
कांबळे संदीप अर्जुन, डॉ. म्हस्के नारायण कारभारी ||92

25) भारतीय ज्ञान परंपरेत आद्य शंकराचार्याचे योगदान
प्रा. दिपक बंडू खामकर, निघोज, जि. अहिल्यानगर ||98

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

Scanned with OKEN Scanner

18

लोकदेवता श्री देव बिरोबा

डॉ. गोरक्षनाथ किसन घोलप
सहा. प्राध्यापक, मराठी विभाग
श्री मुलिकादेवी महाविद्यालय, निघोज
ता. पारनेर, जि. अहमदनगर

****

पुणे जिल्ह्यातील दौंड तालुक्यातील बिरोबावाडी (पाटस) येथील धनगर समाजाचे लोकदैवत/ग्रामदैवत बिरोबा हे आहे. पुणे ते बिरोबावाडी हे अंतर साधारणत: ६६ कि. मी. इतके आहे. लोकदेवता बिरोबा हे धनगर समाजातील लोकांचे कुलदैवतही असून ते प्रसिद्ध आहे. महाराष्ट्रातील विविध भागातून भाविक भक्त देवदर्शनासाठी येतात. या मंदिराचा जिर्णोध्दार धनगर समाजातील लोकानी केला आहे. बिरोबा हे जागृत देवस्थान आहे. या मंदिराची स्थापना सुमारे ३०० वर्षापूर्वीची आहे. विरोबावाडीत जानाई, मारुती, विठ्ठल–रुक्मिणी या देव–देवतांची मंदिरे आहेत. येथील धनगर समाजातील मेंढपाळ, शेती व्यवसाय करणाऱ्या व इतर लोकांची देवावर खूप श्रध्दा आहे. सपाट भूपृष्ठावर वसलेल्या मंदिरात चौधऱ्यावर बिरोबाची शेंदरी पाषाणाची मूर्ती आहे. या मूर्तीचे डोळे, भुवया, नाक, ओठ, मिशा, व कपाळावरील गभ चादीत आहे बिरोबा हे उग्र दैवत आहे. विरोबावाडीच्या पूर्वेस बेटवाडी, दक्षिणेस कुरकुंभ, पश्चिमेस पाटस, उत्तरेस गार व कानगाव ही गावे आहेत

धनगर समाजात खडाबा, बाबीरबुवा, म्हस्कोबा, धुळोबा, भिवाया व बिरोबा ही देवते असून एक ग्रामदैवत मानलेले असते, तर काही कुलदेवता, जातीदेवता असतात. बिरोबा या नावाने नावारूपाला आलेला बिरोबा आज चनगरांचा कुलदेव बनला आहे. गावोगावी बिरोबाची ठाणी वसलेली आहेत. बिरोबा हा धनगरांचा सकाम देव आहे. विरोवा सकाम कुलदैवत असल्यामुळे धनगरांच्या धार्मिक जीवनात बिरोबाकडे दुर्लक्ष करून भागत नाही धनगर समाजाचे महत्त्वाचे ग्रामदैवत, लोकदेवता व कुलदेवता म्हणून विरोबा प्रसिद्ध आहे. पुणे जिल्हयात वडकी, दौंड तालुक्यात विविध ठिकाणी बिरोबाची ठाणी मंदिरे आहेत. लोक बिरोबाची मनोभावे सेवा करतात. त्याचप्रमाणे धनगर समाज सुबगन व हुईक गाणे गातात. लोकदेवतांचा समावेश लोकसाहित्यात होत असतो. लोकसाहित्यात लोकसंस्कृतीला अनन्यसाधारण महत्त्व आहे.

शोध हेतू/उद्देश :

१. पुणे जिल्ह्यातील लोकदेवता विरोवा व या लोकदेवताचे रितीरिवाज, परंपरा, उपासनापद्धती या बाबींचा शोध घेणे.

२. गावातील धनगर समाजातील लोकांच्या लोकदेवतासंबंधी लोकभावना, लोकश्रध्दा, लोक:डी अशा बाबीचा शोध घेणे

३. लोकदेवतावर लोकानी रचलेल्या आख्यायिकेचा शोध घेणे.

आख्यायिका :

दंतकथेलाच आख्यायिका असे म्हणतात. विविध विचारवंतांनी आख्यायिकेच्या व्याख्या केलेल्या आहेत. पारंपरिक गोष्टी म्हणजे आख्यायिका. पूर्वीच्या काळातील गोष्टी, कहाण्या लोक पिढ्यान्पिढ्या सांगत आलेले आहेत. लोकमानसात त्यांचा प्रभाव असून त्यांना आजही महत्त्व आहे. लोकदेवतासंबंधी उपलब्ध असलेली आख्यायिका खालीलप्रमाणे आहे.

आख्यायिका श्री देव बिरोबा मंदिर :

मूर्ती स्थापनेमागील आख्यायिका प्रसिद्ध आहे. शंकराच्या मळापासून, घामापासून एक पुतळा तयार झाला. शंकरांनी मंत्र टाकून त्यात जीव निर्माण केला. तयार झालेली मुलगी एका पेटीत धरणीवरती पडून त्याच्यावर वारूळ तयार झाले. त्याकाळी धुतराजाचे काही कामगार शेती नांगरत असताना नागराला एक सोन्याची पेटी व मेंढ्या निघाल्या. सोन्याच्या पेटीतून एक मुलगी निघाली. ती मुलगी त्यांनी राजाच्या स्वाधीन केली. राजाने तिचे नाव सुरवंती असे ठेवले. यासाठी बाह्मणांचा सल्ला राजाने घेतला. पुढे ती उपवर झाली त्यामुळे राजाने तिचा विवाह करायचा ठरविला. परतु तिने लग्नास स्पष्ट नकार दिला. राजाने सुरवंतीला रानात घर बांधून दिले. घरातील माडीवर सुरवती केस

Scanned with OKEN Scanner

बाळवत बसली असताना रानातील गाईला वासरू दूध पित होते. हे पाहताच तिच्या मनात मातृत्वाची ओढ निर्माण झाली. तिने आपल्या अकलंकित कौमार्याला महत्वाचे स्थान दिल्याने पुरुषाशिवाय मातृत्व मिळावे यासाठी निने व्रत. तपश्चर्या सुरु केली. सूर्य नारायणाची पूजा करत असताना त्या सूर्याच्या तेजापासून व शंकर–पार्वतीने दिलेल्या वरापासून गर्भधारणा होईल. यासाठी शंकर–पार्वतीने तिला वर दिला. शंकर पार्वतीने पुत्र होण्यासाठी पाऊस नसलेले धान्य, फुल नसलेले फळ, रानातील गाईचे तूप एकत्र करून खावे लागेल असे सांगितले. त्यावर गरुड पक्षाच्या मदतीने सुरवंती गंगाने हे सर्व मिळविले. हे धान्य एकत्र करून तिने खाताच शंकराच्या अफाट शक्तीने तिच्या शरीरात प्रवेश केला. पुढे सुरवंती गर्भवती राहून तिला मुलगा झाला. याचे विरोवा असे नाव ठेवले. राजाने तिच्यावर संशय व्यक्त केला होता. त्यानंतर सुरवंतीचा मृत्यू झाला. पुढे बालुबाईने याळाचा सांभाळ केला. बिरदेव पुढे रानावनात गाया सांभाळू लागला. राजाच्या मुलीचा पन विरोबाने पूर्ण केला. पुढे कामसेन वाळा बरोबर बिरोबाचे लग्न झाले. बिरोबा ज्या ज्या ठिकाणी गेले त्या–त्या ठिकाणी बिरोबाची मंदिरे धनगर समाजाने स्थापन केली आहे. विरोबावाडी येथील बिरोबाचे मंदिर धनगर समाजातील लोकांनी स्थापन केले आहे. अशी आख्यायिका श्री. रामदास बापू येडे (पुजारी) यांचेकडून उपलब्ध झाली आहे.

उत्सव, विधी, उपासनापद्धती :

आश्विन (ऑक्टोबर) महिन्यात बिरोबाची दोन दिवस यात्रा भरते. पहिल्या दिवशी पुरणपोळीचा गोड नैवेद्य असतो. पहाटे ५. ३० वाजता अभिषेक व आरती होते. याचदिवशी अनेक स्त्रियांची दंडवते असतात. देवीचा छबिना (पालखी मिरवणूक) सकाळी १० ते २ यावेळेत होतो. मंदिर परिसरात दुपारी २ वाजल्यानंतर सर्व लोकांना भोजन असते. रात्री ६ ते ११ यावेळेत गावात पालखी मिरवणूक ग्रामप्रदक्षिणा सवाद्यासह होते. रात्री ११ वाजता गंजे (खेळ) ढोल–लेझीम असे विविध खेळांचे दर्शन घडते. रात्री मंदिरापुढे ओव्याही म्हणतात. यानंतर तमाशाचा कार्यक्रम सादर होतो. काठी– पालखी मिरवणुकीने प्रदक्षिणा होते. त्यावेळेस बाहेरून भाविक येतात. घोडागिरी देवाच्या नावानं चांगभलं असा जयजयकार करतात. काठी पालखीचा मान श्री रामदास बापू येडे यांना देतात. यात्रेनिमित्त विविध दुकाने उपस्थित असतात. विविध परिसरांतून धनगर समाजाचे लोक येतात. उदा. शिरुर, पारनेर, बारामती, अहमदनगर, खेड, इंदापूर इत्यादी त्याचप्रमाणे स्त्री–पुरुष देवदर्शन करून देवास नवस करतात. विरोवाची दररोज सकाळी ६. ३० वाजता पूजा व आरती करतात. संध्याकाळी ७. ३० वाजता आरती करतात. लोक पौर्णिमा, अमावस्या व दीपावली पाडव्याला येथे अभिषेक करतात. याठिकाणी सत्यनारायण महापूजा करून तीर्थप्रसाद वाटप होते. श्रावण महिन्यात येथे शिवलीलामृत व श्री सतोबा विरदेव माहात्य ग्रंथाचे वाचन करतात.

याठिकाणी बकरे व बोकडांचा बळी मंदिराच्या बाजूस देतात. येथे नवरात्रात घट बसवितात. त्यावेळेस पुरुष बिरोबाची पूजा–अर्चा, उपवास करतात. स्त्रिया व्रत, उपवास करतात. घटस्थापनेत नऊ दिवस त्यानंतर पाच दिवस असे एकूण चौदा दिवस लोक उपवास धरतात. लोक रूढी, प्रथा, परंपरेनुसार लोकदेवताचे विधी, उपासना, पूजा–अर्चा कुळाचार व उत्सव साजरे करतात. याठिकाणी दररोज बिरोबाची पूजा–अर्चा होते. तसेच याठिकाणी कथा गायनाचे कार्यक्रमही होतात. बिरोबाच्या उपासनाविधीत धनगर दीर्घ अशी कथागीते गातात. त्याचबरोबर एखादया प्रसंगावर आधारित वान देखील म्हणतात. धनगरांचे वान कथन यास कथन म्हणावे की गायन असा प्रश्न पडतो. वानाची भाषा गद्यपद्यमिश्रित चूर्णिकेच्या स्वरूपाची असते. यमकानुप्रासांनी युक्त वानातील लयबद्ध कंथनाला नृत्याचीही जोड दिली जाते. वानात वर्णिलेला कथाप्रसंग प्रत्ययकारी रीतीने कथन करण्यासाठी आवश्यक तेथे आगिक अभिनयाची जोड देउन नाट्यस्वरूपात सादर केले जाते. श्वानश म्हणताना निरुपन नसते किंवा संवादाची योजनाही नसते. वानाचे कथनगायनच अशा रीतीने केले जाते की ते नाट्यपूर्ण व्हावे. बिरोबाच्या उपासनाविधीत कथा गायनाबरोबरच वानदेखील नाट्यपूर्ण होत असते. याचे गायन धनगर समाजातील लोक करतात. वानात लयबद्धता, यमक रचना, नृत्य आणि अभिनय यांचा समावेश असतो. वानातून दैवताबद्दलची

Scanned with OKEN Scanner

भक्ती जागृत होते. मनाला समाधान लाभून त्यातून एकप्रकारे मनोरंजनही होते. वानाच्या माध्यमातून धनगर समाजाच्या प्रथा, परंपरेचे, संस्कृतीचे दर्शन घडते. उत्सव, विधी, उपासनापद्धती संदर्भात माहिती श्री. रामदास बापू येडे (पुजारी) यानी दिली आहे.

लोकश्रध्देमागील कारणे :

देव–देवतांचा कोप होऊ नये. गावावर संकट येऊ नये. जीवन जगत असताना आपणास अडचणीतून मार्ग निघावा, काही वाईट, अनर्थ होऊ नये. आपले ऐहिक जीवन चागले व्हावे, सुख, समाधान, शांती, ऐश्वर्याची प्राप्ती व्हावी यासाठी ग्रामीण स्वी– पुरुषांची लोकदेवतांवर श्रध्दा असलेली दिसून येते. शेती, शिवार, जनावरे व रोगराई पासून संरक्षण करणाऱ्या देवता असतात. असा लोकांचा समज आहे. त्यामुळे लोकांची लोकदैवतांवर खूप श्रध्दा असलेली दिसून येते. शुभ कार्यासाठी, दैनंदिन जीवनातील कामाची सुरुवात करताना प्रथम देव दर्शन घेतले जाते

एक शक्ती आहे. त्या शक्तीला लोकानी देवत्त्व बहाल केले आहे. शिक्षणाच्या अभावामुळे लोक पशू–पक्ष्यांचा दैवतासमोर बळी देतात. भविष्यवाणी करणे, नवस बोलणे, अंगात वारे येणे या सर्व अंधश्रध्दा आहेत. भय व कल्पनेतून देवाची निर्मिती झाली आहे.

निष्कर्ष:

१. धनगर समाजाचे विरोबा हे लोकदैवत, ग्रामदैवत व कुलदैवतही आहे. या लोकांच्या विरोबा, खंडोबा, म्हस्कोबा ह्या आराध्य लोकदेवता आहेत.

२. बिरोबा ह्या लोकदेवताची निर्मिती अलीकडच्या काळातील आहे.

३. आख्यायिकेमध्ये प्राचीनता, अतिशयोक्तपणाची वर्णने, काल्पनिकता येत असल्याने आणि सर्व वास्तवावर आधारित नसली तरी आख्यायिकेत सत्याचा अंश आहे. यातून लोकांच्या धर्मभावना जागृत होतात, आख्यायिकेचा प्रभावी विषय, आतुरता, वाचकाच्या मनावर परिणाम करणारी, मयदिचे बंधन नसणारी आख्यायिका आहे.

४. लोकसंस्कृतीने प्रथा, परंपरेची जपणूक केली आहे. धनगर समाजाचे लोक त्यांचे लोकदैवत व कुलदैवताचे धार्मिक विधी, उपासना, पूजा–अर्चा, कुळाचार, यात्रा देवाच्या ठाण्यातच करतात.

समारोप :

या शोधलेखात बिरोबा ह्या लोकदेवता व कुलदैवताचे स्थान क्षेत्र याविषयी माहिती आपण पाहिली. महाराष्ट्रातील धनगर जातीचे विरोया हे कुलदैवत आहे. धनगर समाजातील स्त्री–पुरुष देवाच्या भक्तिशी समरस असलेले दिसतात, विरोया देवाविषयी आख्यायिका या मौखिक परंपरेचा शोध घेतला आहे. त्याचबरोबर उत्सव, विधी, उपासना, पूजा–अर्चा, रूढी, परंपरा, श्रध्दा, अंधश्रध्दा, श्रध्देमागील कारणे, निष्कर्ष इत्यादींचा शोध घेतला आहे.

संदर्भ :

१. दि. ०५/०१/२०१६ रोजी श्री. रामदास बापू येडे यांची घेतलेली मुलाखत

२. बळे बाळासाहेब, धनगरांच्या देवता धुळोबा भिवाया, सविता प्रकाशन, औरंगाबाद, पहिली आवृत्ती जुलै १९८९. पृ. १४

३. जोशी लक्ष्मणशास्त्री (संपा.), मराठी विश्वकोश खंड १, म. रा. सा. सास्कृतिक मंडळ, मुंबई, पहिली आवृत्ती १९७६, पृ ६०२

४. मांडे प्रभाकर, लोकरंगभूमी, गोदावरी प्रकाशन, औरगाबाद, पहिली आवृत्ती १९९४, पृ. २४३–२४४

❑❑❑

Scanned with OKEN Scanner





Loknete Dr. Balasaheb Vikhe Patil (Padma Bhushan Awardee)
Pravara Rural Education Society's

Arts, Commerce and Science College, Alkuti

Tal. Parner, Dist. Ahilyanagar, 414305.
NAAC (1st Cycle) 'B++' Grade (CGPA - 2.78)

Affiliated to
Savitribai Phule Pune University, Pune

Organized

One Day National Conference

Multidisciplinary Approaches on Indian Knowledge Systems (IKS)

Certificate

This is to certify that Mr./Mrs./Dr./Prof. प्रा. गोरक्षनाथ किसन होलप ..... *Of*
श्री. मुनिकादेवी महाविद्यालय निघोज ..... *has actively participated / worked as*
Resource Person/ Presented paper entitled : लोकदेवता श्री देव बिरोबा .....
श्री. मुनिकादेवी महाविद्यालय निघोज ..... *in the National Conference on*
Multidisciplinary Approaches on Indian Knowledge Systems (IKS) organized by
Arts, Commerce and Science College, Alkuti, held on 1st March 2025

Mr. Vishal Rokade
(Coordinator)

Mr. Sanjay Jadhav
(IQAC, Coordinator)

Mr. Amol Nalkar
(Vice-Principal)

Dr. Kunda Kavade
(Principal)

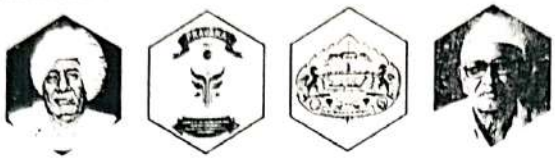
Scanned with OKEN Scanner

SPECIAL ISSUE 02

विद्यावार्ता®

AH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

Peer Reviewed International Refereed Research



लोकनेते डॉ. बाळासाहेब विखे पाटील (पद्मभूषण उपाधिने सन्मानित)

प्रवरा ग्रामीण शिक्षण संस्थेचे,

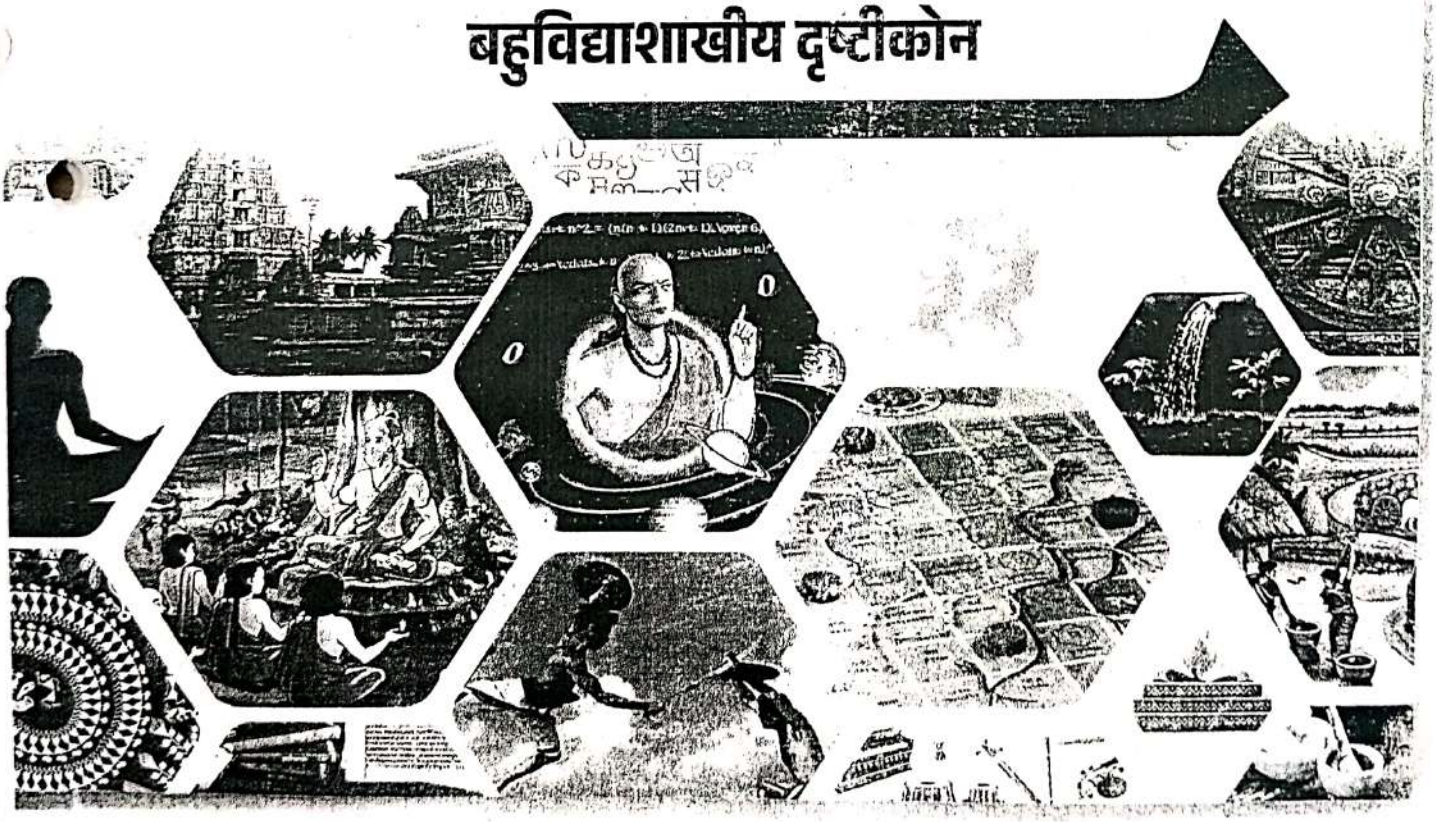
कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय,

अळकुटी, ता. पारनेर जि. आहिल्यानगर

सावित्रीबाई फुले पुणे विद्यापीठ, पुणे (संलग्नित) आयोजित

एक दिवसीय राष्ट्रीय परिषद

भारतीय ज्ञान व्यवस्थेबाबत (IKS) बहुविद्याशाखीय दृष्टीकोन



अनुक्रमणिका

01) भारतीय ज्ञान परंपरा
प्रो. (डॉ.) शांताराम बबनराव चौधरी, प्रवरानगर, जि. अहिल्यानगर ||12

02) मराठी भाषेचे भारतीय ज्ञान प्रणालीतील महत्त्व
डॉ. कुंदा बाळासाहेब कवडे, अळकुटी, जि. अहिल्यानगर ||15

03) भारतीय ज्ञान परंपरा – एक संकल्पनात्मक अध्ययन
प्रा. डॉ. ईश्वर अरुण म्हस्के, निघोज, जि. अहिल्यानगर ||19

04) भारतीय ज्ञान प्रणाली : गरज, महत्व आणि प्रासंगिकता
प्रा. विशाल रामदास रोकडे, अळकुटी, जि. अहिल्यानगर ||25

05) भारतीय ज्ञानव्यवस्थेत तक्षशिला विद्यापीठाचे योगदान
प्रा. अर्जुन खंडू चाटे, अळकुटी, जि. अहिल्यानगर ||27

06) भारतीय ज्ञान व्यवस्थेत नालंदा विद्यापीठाचे योगदान व प्रासंगिकता
प्रा. पानमंद दशरथ बाबाजी, अळकुटी, जि. अहिल्यानगर ||31

07) बँकिंग तंत्रज्ञानाची उत्क्रांती
श्रीमती दिवटे प्रियंका साहेबराव, आळकुटी, जि. अहिल्यानगर ||34

08) भारतीय ज्ञान प्रणाली: संकल्पना, स्वरूप आणि व्याप्ती
प्रा. सुंबरे पोपट बाळू, अळकुटी, जि. अहिल्यानगर ||38

09) भारतीय ज्ञान प्रणाली आणि मराठी भाषा कौश्यले
प्रा. श्रीमती स्वाती रमेश फापाळे, अळकुटी, जि. अहिल्यानगर ||40

10) भारतीय ज्ञान व्यवस्थेत ग्रंथालयाचे महत्व.
भालेराव सुनिता बापु, अळकुटी, जि. अहमदनगर ||45

11) भारतीय ज्ञान व्यवस्थेत भूगोल शास्त्रज्ञांचे भूगोल विषयातील योगदान
श्रीमती सुनिता रामचंद्र जाधव, अळकुटी, जि. अहमदनगर ||50

12) महाराजा सयाजीराव गायकवाड (तिसरे) आणि देशी ज्ञान प्रणाली
श्री. शेळके शिवाजी नाथा, डॉ. संदीप नामदेव मिरे, शेवगाव ||53

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

Scanned with OKEN Scanner

भारतीय ज्ञान परंपरा - एक संकल्पनात्मक अध्ययन

प्रा.डॉ. ईश्वर अरुण म्हस्के

सहाय्यक प्राध्यापक व अर्थशास्त्र विभाग प्रमुख

अहमदनगर जिल्हा मराठा विद्या प्रसारक समाजाचे

श्री मुलिकादेवी महाविद्यालय निघोज, तालुका – पारनेर, जिल्हा - अहमदनगर

मोबाईल -९६७३१९५२४३.

ईमेल – mhaskeishwar@gmail.com

शोधनिबंधाचा गोषवारा - इंग्रजी भाषा आणि पाश्चिमात्य अभ्यासक्रमाला प्रोत्साहन शाळा आणि महाविद्यालयाची स्थापना, व्यवहारिक ज्ञानावर लक्ष केंद्रित करणे, भारतीय भाषांकडे दुर्लक्ष करणे आणि सखोल सामाजिक आणि सांस्कृतिक प्रभाव हे एन.ई.पीचे वैशिष्ट्य होते. हितसंबंधांशी जुळणारा सुशिक्षित भारतीयांचा वर्ग तयार करणे हे त्यांचे उद्दिष्ट असले तरी भाषा, ओळख आणि शैक्षणिक उद्दिष्टाबद्दल वादविवाद देखील सुरू झाले. जे आधुनिक भारतात अजूनही प्रतीध्वनीत होत आहेत. मेकेलीच्या शैक्षणिक धोरणाचा प्रभाव भारतावर सकारात्मक आणि नकारात्मक असा दोन्ही प्रकारचा होता. आधुनिक शिक्षणाचा परिचय करून दिला आणि पाश्चात्य शिक्षित अभिजात वर्ग तयार करण्यात महत्त्वपूर्ण भूमिका बजावली. जी नंतर देशाचे नेतृत्व करेल.सामाजिक फूट निर्माण केली आणि जनतेसाठी शिक्षणापर्यंत मर्यादित प्रवेश केला या धोरणाचा वारसा आजही भारताच्या शिक्षण व्यवस्थेत स्पष्टपणे दिसून येतो. जिथे इंग्रजांचे वर्चस्व कायम आहे आणि वसाहती काळात निर्माण झालेली सांस्कृतिक आणि शैक्षणिक विषमता कायम आहे. प्राचीन भारतीय परंपरांचे पुनर्व पुनरावलोकन करणे म्हणजे आधुनिक तेला नकार देणे नव्हे तर भूतकाळातील सखोलता आणि शहाणपणाने समृद्ध करणे होय. या परंपरांना समकालीत जीवनात समाविष्ट करून भारत आपला समृद्ध सांस्कृतिक वारसा जतन करून अधिक संतुलित नैतिक आणि शाश्वत भविष्यात घडू शकतो परंपरेचे आधुनिक पेशी सुसंवाद साधू पाहणाऱ्या इतर समाजासाठी हा दृष्टिकोन एक मॉडेल म्हणून उत्तम काम करू शकतो.

Scanned with OKEN Scanner

प्रस्तावना - भारतीय संस्कृती हजारो वर्षांपूर्वीची आहे. साने गुरुजींनी भारतीय संस्कृतीचे यथार्थ वर्णन केले आहे. ते म्हणतात, "भारतीय संस्कृती म्हणजे सहानुभूती, भारतीय संस्कृती म्हणजे विशालता, भारतीय संस्कृती म्हणजे सत्याचे प्रयोग, भारतीय संस्कृती म्हणजे सारखे ज्ञानाचा मागोवा घेत पुढे जाणे. जगात जे काही सुंदर, शिव व सत्य दिसले; ते ते घेऊन वाढणारी ही संस्कृती आहे." संस्कृती म्हणजेच ज्ञान परंपरा. वैदिक युगाने भारतीय संस्कृतीचा पाया घातला. भारतीय ज्ञान परंपरेत वेद आणि उपनिषदासारख्या प्राचीन ग्रंथांनी तात्विक आणि अध्यात्मिक अंतर्दृष्टी प्रदान केली. तर मौर्य आणि गुप्तांसारख्या साम्राज्यांनी कला साहित्य आणि राज्यकारभारात योगदान दिले. बुद्ध आणि महावीरांच्या शिकवणीने महत्त्वपूर्ण नैतिक आयाम जोडले. हिंदू धर्म, बौद्ध, जैन धर्म आणि नंतर इस्लाम, शीख आणि ख्रिश्चन या सर्वांनी सांस्कृतिक जडण-घडणीत महत्त्वाची भूमिका बजावली. व्यापार मार्गांनी चीन, पार्शिया आणि इतर प्रदेशांचा संबंध वाढला.

शोध निबंधाची उद्दिष्टे – प्रस्तूत उद्दिष्टे पुढीलप्रमाणे मांडली आहेत.

१. भारतीय ज्ञान परंपरेचा अर्थ समजावून घेणे.

२. भारतीय ज्ञान परंपरेची वैशिष्ट्ये अभ्यासणे.

३. भारतीय ज्ञान परंपरेचे महत्त्व अभ्यासणे.

संशोधन पद्धती – प्रस्तुत शोधनिबंधाचा प्रकार वर्णनात्मक आणि विशेषतात्मक आहे. भारतीय ज्ञान परंपरेच्या विविध वैशिष्ट्यांचे अध्ययन यामध्ये सखोल पणे मांडले आहे.

तथ्य संकलन – प्रस्तुत शोधनिबंधासाठी माहिती संकलित करताना प्रकाशित साहित्याचा उपयोग केला आहे. विविध संदर्भग्रंथ, पुस्तके, मासिके, वर्तमानपत्र, इंटरनेट यावरील माहितीचा उपयोग केला आहे. राष्ट्रीय स्तरावरील विविध चर्चासत्रामधील शोधनिबंधाचाही उपयोग यासाठी करण्यात आला आहे.

अर्थ - ज्ञान परंपरा म्हणजे मानवी संस्कृतींनी हजारो वर्षांपासून विकसित केलेल्या श्रद्धा, पद्धती आणि बुद्धी होय. ज्ञान परंपरेच्या / प्रणालीच्या घटकांमध्ये पुढील घटकांचा समावेश होतो.

Scanned with OKEN Scanner

1. **शिक्षण** - औपचारिक शिक्षण प्रणाली शाळा, विद्यापीठे आणि संशोधन संस्था की ज्या विज्ञान, मानवविद्या, अभियांत्रिकी आणि कला यांसारख्या विविध क्षेत्रांमध्ये ज्ञानाची सुरुवात आणि प्रसार करतात.
2. **विज्ञान आणि तंत्रज्ञान** - वैज्ञानिक शाखांमधील संशोधन आणि विकास तांत्रिक नवकल्पना, अभियांत्रिकी प्रगती आर्थिक वाढ आणि सामाजिक प्रगतीला चालना देणारे अनुप्रयोग.
3. **संस्कृती आणि वारसा** - देशाची ओळख आणि मूल्ये प्रतिबिंबित करणाऱ्या सांस्कृतिक परंपरा, भाषा, कला, साहित्य, लोककथा आणि ऐतिहासिक कथांचे जतन आणि संवर्धन करणे.
4. **प्रशासन आणि धोरण** - कायदेशीर चौकट, राजकीय व्यवस्था, प्रशासकीय संरचना धोरणे आणि निर्णय घेण्यास आणि सार्वजनिक जीवनाला आकार देण्यास मार्गदर्शन करणारे नियम म्हणजे प्रशासन व धोरण आहे.
5. **आर्थिक व्यवस्था** - वित्तीय संस्था, बाजारपेठा, व्यापार धोरणे, औद्योगिक धोरणे आणि आर्थिक सिद्धांत जे आर्थिक क्रियाकलाप वाढ आणि विकासावर प्रभाव टाकतात.
6. **आरोग्य आणि औषधोपचार** - आरोग्य सेवा प्रणाली, वैद्यकीय संशोधन, सार्वजनिक आरोग्य उपक्रम आणि आरोग्य आव्हानांचा सामना करणारी आरोग्य सेवा धोरणे नागरिकांचे कल्याण करतात.
7. **पर्यावरण आणि टिकाऊपणा** - पर्यावरण संवर्धन शाश्वत विकास, हवामान बदल अनुकूल आणि पर्यावरणीय कारभाराशी संबंधित ज्ञान आणि पद्धती.
8. **सामाजिक व्यवस्था** - सामाजिक विज्ञान संशोधन, सामाजिक कल्याण कार्यक्रम,समुदाय विकास उपक्रम आणि सामाजिक वर्तणूक, परस्पर संवाद आणि सर्वसमावेशकतेला आकार देणारे सांस्कृतिक निकष यांचा समावेश सामाजिक व्यवस्थेत होतो.
9. **माहिती आणि संप्रेषण** - माहिती तंत्रज्ञानाच्या पायाभूत सुविधा, दूरसंचार जाळे, माध्यमांचा मंच आणि डिजिटल साक्षरता उपक्रम जे दळणवळण, संपर्क आणि माहितीची उपलब्धता सुलभ करतात.
10. **सुरक्षा आणि संरक्षण** - लष्करी धोरणे, संरक्षण तंत्रज्ञान, राष्ट्रीय सुरक्षा धोरणे, गुप्तचर प्रणाली आणि राष्ट्रीय सुरक्षा आणि आंतरराष्ट्रीय संबंध सुनिश्चित करणारे राजनैतिक प्रयत्न.

Scanned with OKEN Scanner

वरील ज्ञान परंपरा (प्रणाली) एकमेकांशी जोडलेल्या आहेत आणि अंतर्गत आणि बाह्य घटकांच्या प्रतिसादात कालांतराने विकसित होतात. ज्यामुळे राष्ट्राच्या विकासाला आकार मिळतो.

भारतीय ज्ञान परंपरेची वैशिष्ट्ये - भारतीय ज्ञान प्रणालीमध्ये (IKS) विविध शाखा, तत्वज्ञान, विज्ञान, कला आणि सांस्कृतिक पद्धतींचा समावेश आहे. ज्या हजारो वर्षापासून विकसित केल्या गेल्या आहेत. भारतीय ज्ञान प्रणालीचे जतन केले जाते आणि मौखिक परंपरा लिखित ग्रंथ आणि व्यवहारिक उपयोगाद्वारे प्रसारित केली जाते.

1. **जीवनाचा समग्र दृष्टिकोन** - भारतीय ज्ञान परंपरेचा जीवनाकडे पाहण्याचा एकसमग्र दृष्टिकोन आहे. हा समग्र दृष्टिकोन शारीरिक, मानसिक, भावनिक आणि अध्यात्मिक पैलूसह मानवी अस्तित्वाच्या विविध पैलूंचे एकत्रीकरण करतो. योग, आयुर्वेद आणि ध्यान यासारख्या पद्धती या सर्वांगीन दृष्टिकोनाचे उदाहरण देतात. एकूण कल्याण साध्य करण्यासाठी या परिणामांमध्ये सुसंवाद साधने आणि समतोल साधने हे भारतीय ज्ञानपरंपरेचे ध्येय आहे.
2. **तात्विक पायाभूत तत्वे** - भारतीय तत्वज्ञान त्यांच्या सखोलतेसाठी आणि विविधतेसाठी प्रसिद्ध आहे. ज्यामधे विविध प्रकारांच्या विचारांचा समावेश आहे. काही तात्विक शाळांमध्ये पुढील समाविष्ट आहेत

a) **वेदांत** - वेदांच्या (उपनिषदांच्या) अंतिम भागांमध्ये आढळणाऱ्या शिकवणींचा वेदांत समावेश करतो. आणि वैयक्तिक आत्म्याच्या (आत्मा) सार्वत्रिक चेतनेशी असलेल्या एकतेवर भर देतो.

b) **समक्य तत्त्वज्ञान** - पुरुष (चेतना) आणि प्रकृति यांच्यातील फरक ओळखून अस्तित्वाच्या द्वैतवादी स्वरूपांवर लक्ष केंद्रित करते.

c) **योग तत्वज्ञान** - योग तत्वज्ञान हे नैतिक मार्गदर्शन तत्वे, शारीरिक मुद्रा (आसने), श्वास नियंत्रण (प्राणायाम) आणि ध्यान तंत्रासह आध्यात्मिक सरावासाठी एक पद्धतशीर चौकट प्रदान करते

d) **न्याय आणि वैशेषिका** - या विद्याशाखा अनुक्रमे ज्ञानमिमांसा (ज्ञानाचा सिद्धांत) आणि तत्वमिमांसा (वास्तविकतेचे स्वरुप) यांच्याशी संबंधित आहेत. ज्यामुळे जगाला समजून घेण्यासाठी तार्किक चौकट उपलब्ध होते.

Scanned with OKEN Scanner

3. **अध्यात्मिक बुद्धी आणि ग्रंथ ग्रंथपरंपरा** - भारतीय ज्ञान परंपरेच्या केंद्रस्थानी त्यांची समृद्ध ग्रंथ परंपरा आहे. ज्यात प्राचीन धर्मग्रंथ, महाकाव्ये आणि तात्विक ग्रंथ समावेश आहेत. त्यातील काही महत्त्वाची पुढीलप्रमाणे आहेत –

a) **वेद** - वेद हे हिंदू धर्माचे सर्वात जुने पवित्र ग्रंथ आहेत, जे संस्कृतमधे आहेत आणि त्यात स्तोत्रे, विधी आणि तांत्रिक अंतदृष्टी आहे. ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद आणि अथर्ववेद असे चार वेद असून प्रत्येकात चार प्रकारचे वाङ्मय आहे.

b) **उपनिषद** - उपनिषद हे तात्विक ग्रंथ आहेत, जे बास्तविकतेचे स्वरूप, आत्मा आणि अंतिम वास्तवाचा शोध घेतात.

c) **भगवद्गीता** - भगवद्गीता महाभारत महाकाव्याचा एक भाग असून त्यामध्ये, अर्जुन आणि भगवान कृष्ण यांच्यात धर्म (कर्तव्य / धार्मिकता) भक्ती आणि ज्ञान यावर संवाद सादर करते.

d) **पुराण** - हे प्राचीन ग्रंथ आहेत. ज्यात पौराणिक कथा, चिश्वशास्त्र, नैतिकता आणि नैतिक वर्तनावरील शिकवणींचा समावेश आहे.

4. **वैज्ञानिक योगदान** - प्राचीन भारताने विज्ञान आणि तंत्रज्ञानाच्या विविध क्षेत्रांमध्ये महत्त्वपूर्ण योगदान दिले. यामध्ये पुढील समाविष्ट आहे.

a) **गणित** - भारतीय गणितज्ञांनी शून्याच्या संकल्पनेसह दशांश प्रणाली विकसित केली. ज्यांनी जगभरातील गणितात क्रांती घडवून आणली त्या उल्लेखनीय गणितांमध्ये आर्यभट्ट, ब्रह्मगुप्त, भास्कर यांचा समावेश आहे.

b) **खगोलशाख** - भारतीय खगोलशास्त्रज्ञांनी खगोलशास्त्रात सौर वर्षाच्या लांबीची गणना आणि खगोलीय वस्तूंचा शोध यासह अग्रगण्य शोध लावले,

c) **औषधोपचार** - आयुर्वेद पारंपारिक औषध प्रणाली, नैसर्गिक उपाय, आहारविषयक मार्गदर्शक तत्वे आणि उपचारात्मक उपचाराचा वापर करून प्रतिबंधनात्मक आणि सर्वांगीण आरोग्य पद्धतीवर भर देते.

d) **धातुशाख** - प्राचीन भारतीय कुशल धातुविशारद होते, हे उच्च दर्जाचे पोलाद तयार करत होते, जे जागतिक स्तरावर अत्यंत मौल्यवान होते, परंतु आता उपलब्ध नाही.

Scanned with OKEN Scanner

5. **सांस्कृतिक विविधता आणि कलात्मक अभिव्यक्ती** - भारताची सांस्कृतिक विविधता तेथील भाषा, परंपरा, चालीरिती आणि कलात्मक अभिव्यक्तीमध्ये प्रतिबिंबित होते. भारतीय संस्कृतीत कला महत्वपूर्ण भूमिका बजावतात. ज्यात खालील गोष्टींचा समावेश होतो.

a) **साहित्य** - भारतीय साहित्यात महाकाव्ये (उदा. रामायण, महाभारत) शास्त्रीय संस्कृत ग्रंथ, विविध भाषांमधील प्रादेशिक साहित्य आणि आधुनिक साहित्यिक कार्ये आहेत.

b) **संगीत** - हिंदूस्तानी (उत्तर भारतीय) आणि कर्नाटक (दक्षिण भारतीय) संगीत यासारख्या शास्त्रीय संगीताच्या परंपरा आहेत, ज्यात गुंतागुंतीचे स्वर (राग) आणि लयबद्ध ताल वापरले जातात.

c) **नृत्य** - भरतनाट्यम, कथक, ओडिसी. कुचीपुडी आणि मणिपुरी यासारखे शास्त्रीय नृत्य प्रकार, जे कथाकथन आणि आध्यात्मिक संकल्पनांसह अभिव्यक्तीपूर्ण हालचाली एकत्र करतात.

d) **दृश्य कला / देखावे** - शिल्पकला, चित्रकला, वास्तुकला (स्मारके, किल्ले, राजवाडे) आणि पारंपारिक हस्तकला जी प्राचीन काळातील सौंदर्य आणि अध्यात्मिक प्रतिकबाद प्रतिबिंबित करतात.

6. **योग आणि ध्यान पद्धती** - मन, शरीर आणि स्पेन यांचे एकत्रीकरण करण्याच्या उद्देशाने आध्यात्मिक आणि शारीरिक शिस्त असलेल्या योगाचे जन्मस्थान म्हणून भारताचा आदर केला जातो. योगामध्ये खालील योगांचा समावेश आहे.

a) **आसन** - लवचिकता वाढविणाऱ्या शारिरीक मुद्रा शक्ती आणि संतुलन वाढवितात.

b) **प्राणायाम** - श्वाच्छोच्छवासाची कार्यक्षमता वाढवणारे आणि मन शांत करणारे श्वाच्छोच्छवासाचे व्यायाम म्हणजे प्राणायाम.

c) **ध्यान** - आंतरिक शांती, एकाग्रता आणि आध्यात्मिक जागृतता जोपासणारी ध्यान तंत्रे.

7. **नैतिक आणि सामाजिक मूल्ये** - भारतीय ज्ञान परंपरा अहिंसा, सत्यानिष्ठा (सत्य), करुणा आणि सर्व प्रकारच्या जीवनाबद्दल आदर यासारख्या नैतिक मूल्यांवर भर देतात. ही मूल्ये सांस्कृतिक पद्धती, धार्मिक शिकवण आणि सामाजिक नियमांमध्ये अंतर्भूत आहेत. ज्या सामाजिक बर्तनावर आणि परस्पर संबंधांवर प्रभाव टाकतात.

8. **शिक्षण आणि ज्ञानाचे प्रमाण** - पारंपारिकरित्या भारतातील ज्ञान मौखिक परंपराद्वारे प्रसारित केले जात असे. जिथे गुरू (शिक्षक) शिष्यांना (शिष्य) आश्रमांमध्ये (मठांच्या शाळा)

Scanned with OKEN Scanner

किंवा गुरुकुलांमध्ये शिकवत असत. शिक्षक विद्यार्थ्यांच्या या जिव्हाळ्याच्या नात्यामुळे सखोल शिक्षण आणि आध्यात्मिक वाढीस यांना मिळाली.

9. प्रभाव आणि वारसा - भारतीय ज्ञान प्रणालीचा केवळ भारतातच नव्हे तर जागतिक स्तरावरही मोठा प्रभाव पडला आहे. तत्त्वज्ञान, गणित, वैद्यकशास्त्र आणि अध्यात्माच्या क्षेत्रातील त्यांच्या योगदानाने जगभरातील विद्वान, शास्त्रज्ञ आणि तत्त्वज्ञानावर प्रभाव पडला आहे. योग, आयुर्वेद आणि दशांश प्रणाली यासारख्या संकल्पनांनी मानवी संस्कृतीवर अमोल असा ठसा उमटवला आहे.

10. **आधुनिक प्रासंगिकता आणि अनुकूल** - सध्याच्या काळात आधुनिक आव्हाने आणि संधीशी जुळवून घेत भारत आपल्या प्राचीन ज्ञान प्रणालीमधून पुढे जात आहे. आरोग्य आणि कल्याणाप्रती त्यांच्या समग्र दृष्टिकोनामुळे आयुर्वेद आणि योगाने जागतिक स्तरावर लोकप्रियता मिळवली आहे. भारताची वैज्ञानिक आणि तांत्रिक प्रगती त्यांच्या समृद्ध वारशांवर आधारित असून जगामध्ये नवनिर्मितीत आणि विकासात योगदान देत आहेत.

भारतीय ज्ञान प्रणालीचे महत्व - ही तात्विक, अंत्यदृष्टी, वैज्ञानिक शोध, कलात्मक अभिव्यक्ती आणि सांस्कृतिक परंपरांचा विस्तार असलेली सखोलता आणि बुद्धीचा खजिन आहे त्याचा समग्र दृष्टिकोन, अध्यात्मिक सखोलता आणि व्यावहारिक उपयोग मानवतेला प्रेरणा आणि समृद्ध करत राहतात, ज्यामुळे जीवनाचे रहस्य आणि सर्व अस्तित्वाच्या परस्पर संबंधाची सखोल समज वाढते. भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) ही चिज्ञान, तंत्रज्ञान, अभियांत्रिकी, गणित, तत्त्वज्ञान आणि कला यासारख्या विविध शाखांचा समावेश असलेल्या भारताच्या पारंपारिक आणि स्वदेशी ज्ञान प्रणालींचा संदर्भ देते. यात हजारो वर्षांपासून विकसित आणि परिष्कृत केलेल्या प्राचीन भारतीय संकल्पना सिद्धांत आणि पद्धतीचा समावेश आहे. IKS चा अभ्यास करणे अनेक कारणांसाठी गरजेचा आहे. थोडक्यात IKS चे महत्व पुढीलप्रमाणे स्पष्ट करता येईल.

1. **समृद्ध वारसा -** भारताकडे समृद्ध सांस्कृतिक आणि बौद्धिक वारसा आहे. IKS समजून घेतल्याने मानवी ज्ञान आणि प्रगतीमध्ये देशाच्या योगदानाचे कौतुक करण्यास मदत होते.

Scanned with OKEN Scanner

2. **सर्वसमावेशक दृष्टिकोन** - IKS अनेकदा अध्यात्मिक, तांत्रिक आणि व्यावहारिक पैलूंचे एकत्रीकरण करून, ज्ञान व त्यांच्या वापरावर एक अद्वितीय दृष्टिकोन देत, एक समग्र दृष्टिकोन घेते. सर्वसमावेशक दृष्टिकोनामध्ये शारीरिक, मानसिक, भावनिक आणि अध्यात्मिक पैलूसह मानवी अस्तित्वाच्या विविध पैलूंचा समावेश सर्वसमावेशक दृष्टिकोनात होतो.

3. **चिरंतन / शाश्वतता** - भारतीय ज्ञान परंपरा चिरंतन आहे. पारंपरिक भारतीय ज्ञान प्रणाली मानवाच्या निसर्गाशी असलेल्या परस्पर संबंधांवर भर देतात आणि पर्यावरणाचा आदर करणाऱ्या शाश्वत जीवन पद्धतीचे समर्थन करतात. पर्यावरणपूरक शेती, पाणी, संवर्धन आणि जैवविविधता संवर्धन ही संकल्पना शतकानुशतके भारताच्या ग्रामीण परंपरेचा अविभाज्य भाग राहिली आहे.जागतिक पर्यावरणाचा सामना करताना भारताचे पारंपरिक पर्यावरणीय ज्ञान शाश्वत संसाधन व्यवस्थापन, हवामान, लवचिकता आणि समुदाय आधारित संवर्धन प्रयत्नांमध्ये मौल्यवान अंत्यदृष्टी प्रदान करते. या पद्धतीने नेतृत्वाला प्रोत्साहन देतात आणि पर्यावरणीय संतुलन साध्य करण्यासाठी आणि नैसर्गिक परिसंस्थेचे संरक्षण करण्यासाठी जागतिक प्रयत्नांमध्ये योगदान देतात.

4. **नवोक्रम** - IKS चा शोध नवीन कल्पना, दृष्टिकोन आणि नवकल्पना प्रेरित करू शकाती ज्यामुळे संभाव्यपणे अभूतपूर्व शोध आणि उपाय शोधले जाऊ शकतात. समकालीन काळात, आधुनिक नवकल्पना आणि तंत्रज्ञानासह पारंपरिक ज्ञान समकालीन करण्यासाठी भारताची ज्ञान प्रणाली विकसित होत आहे. हा समन्वय भारताला आपली सांस्कृतीक ओळख जपून आणि जागतिक प्रगतीमध्ये योगदान देताना सध्याच्या जागतिक आव्हानांचा सामना करण्यास सक्षम करतो.

5. **सांस्कृतिक जतन** - IKS चे दस्तऐवजीकरण आणि अभ्यास केल्याने भावी पिढ्यांसाठी भारताचा सांस्कृतिक वारसा जतन करण्यात मदत होते भाषा, कला, परंपरा आणि साहित्याच्या माध्यमातून व्यक्त होणारी भारताची सांस्कृतिक विविधता जागतिक सांस्कृतिक समज आणि कौतुक वाढवते सांस्कृतिक देवाणघेवाण परस्पर आदर, संवाद आणि राष्ट्रांमध्ये सहकार्य वाढवते. त्यामुळे जागतिक शांतता आणि सलोख्याला चालना मिळते.

Scanned with OKEN Scanner

6. **आंतरशास्त्रीय संबंध** - IKS अनेकदा विषयांमधील सीमा धुसर करते, ज्ञान आणि समजूतदारपणासाठी आंतरशास्त्रीय अंतरशासकीय दृष्टिकोनास प्रोत्साहन देते.
7. **जागतिक प्रासंगितता** - भारतीय ज्ञान परंपरेचा जागतिक विचारांवर खोल परिणाम झाला आहे. ज्यामुळे जगभरातील विद्वान, शास्त्रज्ञ, तत्त्वज्ञ आणि कलाकारांना प्रेरणा मिळाली आहे. योग,आयुर्वेद आणि वेदांत तत्वज्ञानाच्या तत्त्वांना आरोग्य आणि कल्याण पर्यावरणीय शाश्वत आणि अध्यात्मिक ज्ञानाच्या योगदानासाठी आंतरराष्ट्रीय मान्यता मिळाली आहे. विज्ञान आणि तंत्रज्ञान क्षेत्रात आंतराळ संशोधन माहिती तंत्रज्ञान, जैवतंत्रज्ञान आणि नवीकरणीय ऊर्जा या क्षेत्रात भारताने जी प्रगती केली आहे, ती त्याच्या नावीन्यपूर्ण आणि वैज्ञानिक संशोधनाचा प्राचीन परंपरांवर आधारित आहे.
8. **प्रासंगिक समज** - IKS मध्ये सार्वत्रिक तत्वे आणि शहाणपण आहे. ज्यामुळे ते जागतिक प्रेक्षकांसाठी प्रासंगिक आणि मौल्यवान बनते.
9. **सक्षमीकरण** - भारतीय ज्ञान परंपरेचे पुनरुज्जीवन केल्याने स्थानिक समुदाय सक्षम होऊ शकतात. आत्मनिर्भरता आणि सांस्कृतिक आत्मविश्वासाला चालना मिळू शकते. भविष्यातील पिढ्यांसाठी त्यांची सत्यता आणि प्रासंगितता सुनिश्चित करण्यासाठी भारताच्या ज्ञान प्रणालीचे जतन आणि पुनरुज्जीवन आवश्यक आहे.
10. **शैक्षणिक आणि संशोधनाच्या संधी** - आज भारतातील शैक्षणिक संस्था आधुनिक शैक्षणिक दृष्टिकोनाचे पारंपरिक ज्ञानाशी एकत्रीकरण करून, विद्याथ्यर्थ्यांना त्यांची सांस्कृतिक मुले स्वीकारत जागतिक आव्हानांचा सामना करण्यासाठी तयार करून हा वारसा कायम ठेवत आहेत. बौद्धिक, भावनिक आणि नैतिक विकासाला चालना देणाऱ्या सर्वांगीण शिक्षणावर भर देणे हा भारतीय शैक्षणिक तत्वज्ञानाचा पाया आहे.

IKS मशोधन विषय आणि शैक्षणिक उपक्रमांचा एक विशाल, न बापरलेला साठा प्रदान करते.भारतीय ज्ञान परंपरेचा शोध घेऊन, आपण भारताच्या समृद्ध बौद्धिक बारशाची आणि आधुनिक काळातील विस्तर प्रासंगिकतेची सखल समज मिळवू शकतो.

सारांश - भारतीय ज्ञान प्रणालीची भक्ती विस्तीर्ण आणि बहुआयामी आहे त्यात मेटाफिजिक्स पासून व्यावहारिक विज्ञानापर्यंत सर्वकाही समाविष्ट आहे हे शिक्षण आरोग्य शासन आणि शाश्वत विकासासाठी समकालीन समस्यांशी संबंधित मौल्यवान आंतरदृष्टी आणि पद्धती देते प्राचीन भारतीय स्थानाला आधुनिक पद्धतीसह एकत्रित करून अधिक समग्र नैतिक आणि

Scanned with OKEN Scanner

शाश्वत भविष्य निर्माण करण्याची क्षमता आहे प्राचीन काळापासून ते इसवी सन 18 व्या शतकापर्यंत भारतीय ज्ञान प्रणितीचा विकास ही तत्त्वज्ञान विज्ञान कला साहित्य आणि अध्यात्माच्या उल्लेखनीय कामगिरीकडे दर्शविले जाते ही विविध भौतिक आणि सांस्कृतिक अभिव्यक्तीच्या माध्यमातून विश्व मानवी अस्तित्व आणि सामाजिक सलोखा समजून घेण्याचा निरंतर शोध प्रतिबिंबित करते या घडामोडींनी भारताच्या शाश्वत बौद्धिक वारसाचा पाया असला जागतिक विचारावर प्रभाव पडला आणि मानवी संस्कृतीच्या समृद्धीमध्ये योगदान दिले.

संदर्भसूची –

१. आगलावे प्रदीप, (जानेवारी 2000) संशोधन पद्धती शास्त्र व तंत्र विद्या प्रकाशन नागपूर.

२. कानवडे वैशाली, (मार्च 2023) नवीन राष्ट्रीय शैक्षणिक धोरण अंमलबजावणीतील उनिवा- राष्ट्रीय चर्चासत्रासाठी सादर केलेला शोध निबंध जे.एस.एम महाविद्यालय अलिबाग, रायगड.

३. शिंदे अनिल (जून 2023) भारतीय ज्ञान व्यवस्था, सेठ पब्लिकेशन, मुंबई.

४. लिमन यम यस (जुलै 2024) भारतीय ज्ञान परंपरा, सेठ पब्लिकेशन, मुंबई.

Scanned with OKEN Scanner



UNDERSTANDING INDIGENOUS KNOWLEDGE SYSTEMS

Exploration of Life, Literature and Culture of Tribal Communities

Editor
Ravindra Gomaji Vaidya



Scanned with OKEN Scanner

9.	Representation of Tribal Community in Marathi Literature and Cinema: A Review **Dr Narendra T. Gawali**	76-87
10.	Representation of Tribal Culture in Literature and Cinema **Mr Salim Nisar Shaikh**	88-100
11.	Representation of Tribal in 20th Century Indian Cinema and Literature **Mr. Sajed S. Patel**	101-107
12.	Bridging Worlds: The Role of Translation in Preserving Indigenous Writings **Dr Subhash Shrirang Kadam**	108-117
13.	Bridging Worlds: Integrating Indian Knowledge Systems in English Curricula **Mr. Vijay A. Khade**	118-125
14.	Beyond the Written Word: Unravelling Tribal Knowledge Systems through Oral and Literary Traditions in Maharashtra **Mr. Purnank Chaudhari**	126-138
15.	Preserving the Past, Narrating the Future: The Role of Tribal Literature in Cultural Survival **MS. Varsha Sahebrao Aher**	139-145
16.	Autobiographies of Dalit Women: An Intersectional Perspective **MS. Swati Vitthal More and Mr. Anand Suresh Patekar**	146-152
17.	Impact of Globalization on IKS Dr Navnath Ganpat Karale	153-160
18.	From Silence to Strength: Draupadi's Journey of Empowerment in the Palace of Illusions **Mr Rahul Suresh Pawar**	161-168
19.	Relevance of IKS: Importance of Indigenous Knowledge Despite Global Changes and Modernization **Dr Hemant Radhakrushna Gaikwad**	169-179

Scanned with OKEN Scanner

16

Autobiographies of Maharashtrian Dalit Women: An Intersectional Perspective

Ms. Swati Vitthal More & Mr. Anand Suresh Patekar
Assistant Professor, Department of English
Shri Mulikadevi Mahavidyalaya, Nighoj, Tal. Parner,
Dist. Ahmednagar

Abstract

The core idea behind incorporating Indigenous Knowledge Systems (IKS) is fostering a deep-rooted connection to India's rich, diverse cultural heritage—both ancient and contemporary. In the context of Maharashtra's tribal communities, the autobiographies of Dalit women serve as a compelling medium to examine the interplay of caste, gender, and regional identity. These narratives bring to light the layered challenges faced by Dalit women, who navigate systemic discrimination on multiple fronts. Dalit autobiographical literature in Maharashtra has emerged as a powerful genre, offering firsthand accounts of survival, resistance, and empowerment. Through their personal stories, Dalit women not only document their struggles against oppression and exclusion but also highlight their journey toward self-determination.

Scanned with OKEN Scanner

Authors like Baby Kamble and Urmila Pawar illuminate key themes such as poverty, patriarchy, violence, and the quest for dignity in a rigid caste hierarchy. Their works emphasize the transformative impact of education, activism, and the Dalit movement in shaping individual and collective identities. More than just personal testimonies, these autobiographies contribute significantly to social justice discourse, underlining the necessity of an intersectional approach in understanding caste and gender-based marginalization. This study delves into the autobiographies of Dalit women from Maharashtra, analyzing how they narrate their experiences of oppression, resistance, and identity formation within a highly stratified society. These narratives reclaim agency and amplify voices that have long been silenced, positioning Dalit women's stories at the heart of contemporary discussions on caste, gender, and empowerment.

Keywords: Marginalization, Tradition, Patriarchy, Social Hierarchy, Tribal Culture

Introduction

The autobiographies of Maharashtrian Dalit women—particularly Baby Kamble and Urmila Pawar—offer a profound exploration of the socio-cultural realities of marginalized women in India. Translated into English by Maya Pandit, these works provide invaluable insight into the intersection of caste and gender, shedding light on the historical and contemporary struggles of Dalit women in Maharashtra.

Baby Kamble's The Prisons We Broke (Jevha Mi Jaat Chorali), a seminal text in Dalit literature, recounts her experiences of discrimination, systemic oppression, and eventual resistance. Her narrative traces her journey from childhood to adulthood, emphasizing the structural injustices she endured and her defiance against the rigid caste system. Similarly, Urmila Pawar's The Weave of My Life (Aaydan), also translated by Pandit, presents an intimate portrait of Dalit womanhood. Pawar's autobiography interweaves

Scanned with OKEN Scanner

personal struggles, domestic oppression, and societal constraints, while also highlighting the role of education and the Dalit movement in fostering empowerment.

These autobiographies not only offer a critical lens into the harsh realities of Dalit women's lives but also celebrate their resilience, agency, and continued fight for equality. Their translations bring these narratives to a wider audience, ensuring that the voices of Dalit women gain recognition beyond regional and linguistic boundaries. Both Baby Kamble and Urmila Pawar present an intricate portrayal of Dalit women's struggles, resilience, and agency within a caste-ridden and patriarchal society. Their works—*Jina Amucha* (Our Lives) by Kamble and *Aaydan* (The Weave of My Life) by Pawar—provide a crucial understanding of how caste and gender intersect to shape their lived experiences.

Analysis of The Prison We Broke:

Cultural Marginalization and Identity:

Kamble's narrative sheds light on the systemic exclusion of Dalit women, who face discrimination not only from the upper castes but also within their own communities. She critiques the rigid Brahmanical social order that perpetuates cultural subjugation, reinforcing exclusionary rituals and norms that deny Dalit women access to education, employment, and fundamental rights.

Dalit Feminism and Gendered Oppression:

While highlighting caste oppression, Kamble also addresses the patriarchal structures within Dalit communities. Her work critiques the gender-based violence faced by Dalit women at the hands of Dalit men, who, despite being victims of caste discrimination themselves, often replicate oppressive behaviors within their households. She emphasizes the solidarity among Dalit women as a means of survival and resistance.

Language as Resistance:

Kamble's use of Marathi, embedded with regional dialects and idioms, captures the authenticity of Dalit experiences. By writing

Scanned with OKEN Scanner

in her mother tongue, she asserts a distinct Dalit identity and challenges the dominance of Brahmanical narratives in mainstream literature.

Analysis of Urmila Pawar's *Aaydan* (The Weave of My Life)

Cultural Memory and Resistance:

Pawar's autobiography embodies resilience, symbolized by the act of weaving (Aaydan), which metaphorically represents the process of reconstructing one's life despite adversity. She narrates her experiences of untouchability, caste-based violence, and societal restrictions, providing a testimony of both personal and collective struggle.

Caste-Gender Intersectionality:

Like Kamble, Pawar examines how caste and gender oppression reinforce each other. Her narrative explores how Dalit women navigate the complex web of social hierarchies, resisting not just caste-based discrimination but also patriarchal expectations that confine them to predefined roles.

The Role of Education in Liberation:

Education emerges as a transformative tool in Pawar's life, allowing her to transcend the limitations imposed by caste and gender. She underscores the significance of learning as a means of empowerment, mobility, and defiance against systemic injustices.

Empathy and Collective Strength:

Pawar's writing extends beyond her personal journey, emphasizing the shared struggles of Dalit women. She highlights the power of female solidarity in confronting oppression, demonstrating how collective resilience can challenge the deeply entrenched inequalities of Indian society.

Cultural Themes in Dalit Women's Narratives

1. Resistance and Resilience: Redefining Women's Roles in Society

Dalit women in India have historically faced both caste-based and gender-based oppression, yet their narratives illustrate how they actively resist these structures rather than merely enduring

Scanned with OKEN Scanner

them. In Jina Amucha, Baby Kamble recounts the struggles of Mahar women, who, despite their subjugation, played a crucial role in sustaining their families and communities. The very act of survival under conditions of extreme discrimination becomes an assertion of agency.

In a similar vein, Aaydan by Urmila Pawar tells the story of Dalit women's resilience, especially when it comes to making ends meet and caring for families. Pawar talks about how women in her community made baskets (hence the name Aaydan, which means "weaving"), which was a traditional job that represented both labor and resistance. The act of writing itself becomes an extension of this resistance, enabling Dalit women to document their struggles and aspirations.

2. Caste and Patriarchy: The Double Burden of Dalit Women

Both Pawar and Kamble critique the dual oppression of caste and gender in their narratives. While caste-based discrimination dehumanizes Dalit women in the public sphere, patriarchal norms further limit their autonomy within their own communities. In *Jina Amucha*, Kamble describes how Dalit women were often subjected to domestic violence and social restrictions, yet they were expected to be the backbone of their families. She exposes how upper-caste hegemony imposed social exclusion on Dalits, while Dalit men, influenced by the same patriarchal structures, perpetuated gender-based discrimination. Pawar, on the other hand, narrates her journey as a Dalit woman struggling for education and professional identity in Aaydan. She highlights how Dalit women had to fight not only against Brahminical patriarchy but also against conservative norms within their own communities that resisted female education and independence.

3. Writing as a Tool for Empowerment and Cultural Resistance

Both Baby Kamble and Urmila Pawar's autobiographies function as acts of cultural resistance, challenging the historical silencing of Dalit women's voices. Traditionally, Dalit narratives

Scanned with OKEN Scanner

have been dominated by male authors, with women's perspectives either ignored or misrepresented. Kamble and Pawar reclaim their right to define their identity and agency by writing their own stories. Their narratives also serve as counter-discourses against mainstream feminist writings, which often overlook caste as a critical factor in women's oppression. Dalit women's stories, in contrast to upper-caste feminist writing that focuses primarily on gender inequality, highlight the intersectionality of caste and gender, broadening the scope of Indian feminist discourse. Furthermore, their works challenge the elitist literary traditions that marginalized Dalit voices. Kamble's raw and unfiltered storytelling in Jina Amucha disrupts the conventions of literary aesthetics, reflecting the urgency of Dalit women's experiences. Similarly, Pawar's Aaydan employs a reflective and analytical approach, emphasizing the role of education and writing in dismantling oppressive structures.

Conclusion

The autobiographies of Baby Kamble and Urmila Pawar offer invaluable perspectives on the socio-cultural realities of Dalit women in Maharashtra. By intertwining personal and collective struggles, these narratives shed light on the oppressive structures that shape Dalit women's lives while celebrating their resilience and agency. Their works not only contribute to Dalit feminist discourse but also provide an essential foundation for understanding caste and gender dynamics in India.

Scanned with OKEN Scanner

Works Cited:

1. Pawar, Urmila. *The Weave of My Life*. Bhatkal & Sen, 2021.
2. Kamble, Baby. *The Prisons We Broke*. Orient Blackswan.
3. Anand, Mulk Raj. *Untouchable*. Penguin Classics, 1992.
4. Deshpande, Gauri. "Narrating Resistance: The Autobiographies of Urmila Pawar and Baby Kamble." *Economic and Political Weekly*.
5. Yadav, Ruchira. "Literary Representation of Dalit Identity: A Study of Baby Kamble's The Prisons We Broke."
6. Saraswathi, T. S. "Self and Society in Dalit Women's Autobiographies: A Study of Bama's *Karukku* and Baby Kamble's *The Prisons We Broke*." *Journal of Dalit Studies*.



Scanned with OKEN Scanner